श्रीबाला-नित्यार्चन

(चक्र-पूजा)

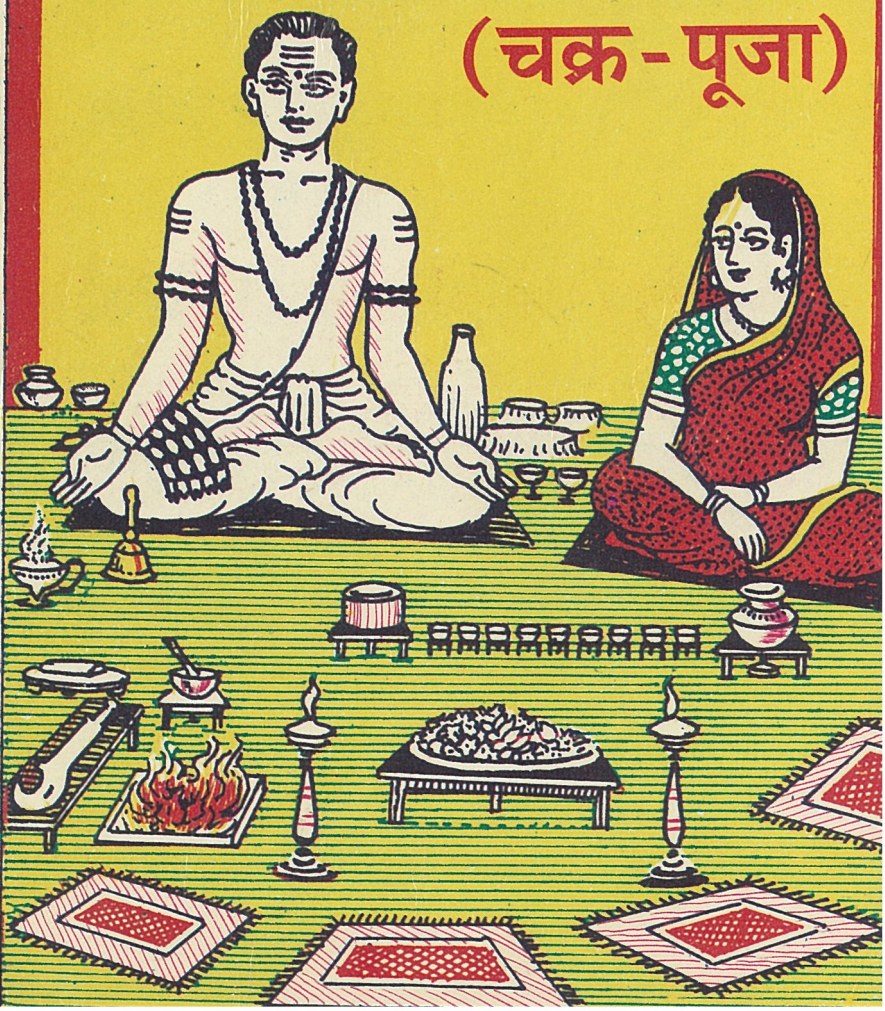

श्रीबाला - नित्यार्चन

(चक्र - पूजा)

(संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण)

★ ★ ★

लेखक

'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त शुक्ल

★ ★ ★

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपीदेवी मार्ग, प्रयाग - २११००६

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
(धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशक - विक्रेता)
अलोपीदेवी मार्ग, प्रयाग - ६
दूर-भाष : (०५३२) २५०२७८३

सर्वाधिकार सुरक्षित

पञ्चम संस्करण : वसन्त - पञ्चमी,
"सर्व-धारी" सं० २०५२ वि०

मुद्रक
परा - वाणी प्रेस
अलोपीदेवी मार्ग
प्रयाग - २११००६

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन पहले पहल **'चक्र-पूजा'** के नाम से किया गया था; किन्तु दूसरे संस्करण में नामकरण **'श्रीबाला - नित्यार्चन'** कर दिया गया; साथ में **'चक्र - पूजा'** नाम भी गौण रूप में रहने दिया गया, क्योंकि वास्तव में इस पुस्तक में जो पूजा - विधान दिया गया है, वही **'चक्र - पूजा'** या निशा - पूजन के नाम से विख्यात है। साथ ही यह नित्यार्चन भी है।

पिछले संस्करणों की भूमिका में **'चक्र - पूजा'** या 'नित्यार्चन' - पद्धति का महत्त्व **'कौल - कल्पतरु'** पण्डित देवीदत्त शुक्ल के अपने शब्दों में इस प्रकार बताया गया है —

".....**'चक्र - पूजा'** शाक्तों की सर्व-श्रेष्ठ पूजा है। इसी पूजा के द्वारा शाक्त - साधक अपना इहलोक और परलोक बनाते हैं। यह उनका नित्य का अर्चन है, जिसके कुछ ही दिनों के अभ्यास

से वे परम तत्त्व की उपलब्धि कर लेते हैं। उनकी यह पूजा **'पञ्च - शुध्द्यात्मक'** है। जिस **'स्थान'** पर शाक्त - साधक पूजन करता है, उसकी शुद्धि करने के बाद वह अपनी **'देह'** की शुद्धि करता है। इस प्रकार देवता बन कर वह अपने हृदय में देवता का अर्चन करता है। तदुपरान्त वह देवता को बाहर लाकर उसके पूजन का आयोजन करता है। इसके लिए वह पहले **'पूजा - द्रव्यों'** का शोधन करता है, फिर **'देवता'** का और तदनन्तर **'इष्ट - मन्त्र'** का। इन पाँच शुद्धियों के द्वारा अपनी इस भाव-मयी पूजा की परि-समाप्ति करता है। ब्रह्म - वादी लोग जिस प्रकार श्रवण, मनन, निदिध्यासन करके अपने लक्ष्य का साक्षात्कार करते हैं, साधक उसी तत्त्व को अपनी इस पूजा द्वारा उपलब्ध करता है।

प्रारम्भ में इस पूजा के करने में तीन घण्टे का समय लगता है, परन्तु कुछ दिनों के अभ्यास के बाद सारी पूजा डेढ़ घण्टे में भले प्रकार समाप्त हो जाती है। यह पूजा शाक्त लोग महा - निशा में बारह बजे के बाद तीन बजे तक करते हैं। यही वह रहस्य-मयी पूजा है, जिसको पूरे छः महीने तक अनवरत रूप से करने से साधक बिना किसी प्रकार

की विघ्न - बाधा के चतुर्वर्ग की प्राप्ति कर लेता है। ....."

शाक्तों की यह पूजा संस्कृत भाषा में ही लिखी मिलती है। जो लोग संस्कृत नहीं जानते हैं, उन्हें इसके करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यही सब देख कर **'कौल - कल्पतरु'** शुक्ल जी ने लगभग ५० वर्ष पूर्व इसे हिन्दी में इस ढङ्ग से लिखा कि साधारण पढ़े - लिखे शाक्त - साधक भी इसकी सहायता से अपना नित्य का कर्म कर सकें।

'श्री - कुल' और **'काली - कुल'** की क्रिया में कुछ अन्तर अवश्य है, पर वह इतना प्रसिद्ध है कि उसे सभी साधक जानते हैं। अतएव इस पुस्तक में कथित पूजा - प्रक्रिया का दोनों कुलों के साधक अनुसरण कर सकते हैं।

वसन्त - पञ्चमी — **विनीत**

सम्वत् २०५२ वि० — रमादत्त शुक्ल

अनुक्रमणिका

प्रातः - कृत्य	...१-१५
श्रीगुरु - स्मरणादि	१
शौच - विधि	८
दन्त - धावन	९
स्नान - विधि	९
सन्ध्या - विधि	११
निशा - पूजन (चक्रार्चन)	...१६-१४४
स्थान - संस्कार आदि	१६
द्वार - पूजा	१८
स्थान - शोधन	१९
आसन - शोधन	२०
सङ्कल्प	२२
विजया (संविदा) ग्रहण	२३
पुष्पादि - स्थापन	२५
शरीर - शोधन	२७
भूत - शुद्धि	२८
प्राण - प्रतिष्ठा	३०

कर - शुद्धि - न्यास ३१
अन्तर्मातृका - न्यास ३४
बहिर्मातृका - न्यास ...३८-४८
सृष्टि - मातृका - न्यास ३८
स्थिति - मातृका - न्यास ४२
संहार - मातृका - न्यास ४५
बाला - मातृका - न्यास ४८
देवी - कला - मातृका - न्यास ५२
श्रीबाला - त्रिपुरा - मूल-मन्त्र - न्यासादि ५५
पीठ - न्यास ५९
अन्तर्याग ...६१-६५
१ - मानसिक पूजन ६१
२ - मानसिक हवन ६५
बाह्य - पूजा ...६७-१४४
सामान्यार्घ्य - पात्र का स्थापन ६७
कलश का स्थापन ६८
विशेषार्घ्य - पात्र - स्थापन ७५
मांसादि द्रव्य - शोधन ७७
श्रीपात्र - स्थापन ७९

गुरु आदि पात्रों की स्थापना ८४
गुरु आदि का पूजन - तर्पण ८७
तत्व - शुद्धि ८९
परा - विन्दु - ग्रहण ९१
यन्त्र - राज की स्थापना ९२
पीठ - पूजा ९२
इष्ट - देवता का आवाहनादि ९४
इष्ट - देवता का षोडशोपचार - पूजन ९७
आवरण - पूजन १०७
होम १२९
पञ्च - बलि १३२
पशु - बलि १३३
नीराजन १३४
जप - प्रक्रिया १३५
पुष्पाञ्जलि १३७
मण्डल - पूजन १३८
विसर्जन १४१

प्रातःकृत्य

श्रीगुरु-स्मरणादि

ब्राह्म-मुहूर्त में निद्रा-मुक्त होकर बिछौने पर ही पद्मासन से बैठकर अपने शिर में स्थित सहस्र - दल-कमल की कर्णिका में चन्द्र-मण्डल के अन्तर्गत हंस-पीठ पर विराजमान श्री गुरुदेव का ध्यान करे—

श्वेतं श्वेत-विलेप-माल्य-वसनं वामेन रक्तोत्पलम् ।
विभ्रत्या प्रियया इतरेण तरसाश्लिष्टं प्रसन्नाननम् ॥
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं परम् ॥
हाला-घूर्णित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम् ॥

इस प्रकार ध्यान कर मानस उपचारों से श्रीगुरु-देव का पूजन करे । यथा—

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीगुरु अमुकानन्दनाथ तच्छक्त्यम्बा श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि— अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ से गन्ध-मुद्रा दिखावे;

हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीगुरु……नमः अनुकल्प-यामि—अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ से पुष्प-मुद्रा;

यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीगुरु.....नमः अनुकल्प-यामि—ऊर्ध्व-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से धूप-मुद्रा;

रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीगुरु.....नमः अनुकल्प-यामि—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से दीप-मुद्रा;

वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीगुरु.....नमः अनुकल्प-यामि—ऊर्ध्व-मुख अनामांगुष्ठ से नैवेद्य-मुद्रा;

शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीगुरु.....नमः अनुकल्प-यामि—ऊर्ध्व-मुख सर्वांगुलियों से ताम्बूल-मुद्रा।

मानस-पूजा कर चुकने पर 'गुरु-पादुका' मन्त्र का ग्यारह बार या यथा-शक्ति जप कर श्रीगुरुदेव की स्तुति करे। यथा—

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

इत्यादि स्तोत्रों से गुरु-वन्दना कर उनकी अनुमति लेकर कुण्डलिनी का ध्यान करे। यथा—

मूलाधार में तेज-पूर्ण दिव्य त्रिकोण - मण्डल का ध्यान करे। उसमें नील-मेघ में चमकती बिजली के समान तेजवाली अनुपम कुण्डलिनी की भावना करे। उसकी शिखा के मध्य में परमात्मा का ध्यान करे। हूंकार से उक्त त्रिकोण-मण्डल से कुण्डलिनी को उठा-

कर सहस्रार में ले जाकर परम शिव से मिलावे।
तदनन्तर नौ कुल-गुरुओं का ध्यान करे। यथा—

कुलामृत-रसोल्लास-हृदयाघूर्ण - लोचनान्।
कुलालिङ्गन-सम्भिन्न-चूर्णिताशेष-तामसान्॥
कुल-शिष्यैः परिवृतान् पूर्णान्तःकरणोद्यतान्।
वराभय-युतान् सर्वान् कुल-तन्त्रार्थ-वादिनः॥

फिर इनका पूजन करे। यथा—

ॐ प्रह्लादानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ सनकानन्दनाथ ,, ,,
ॐ कुमारानन्दनाथ ,, ,,
ॐ वसिष्ठानन्दनाथ ,, ,,
ॐ क्रोधानन्दनाथ ,, ,,
ॐ सुरानन्दनाथ ,, ,,
ॐ ध्यानानन्दनाथ ,, ,,
ॐ बोधानन्दनाथ ,, ,,
ॐ शुकानन्दनाथ ,, ,,

इसके बाद 'मूल-मन्त्र' का जप करे। यथा—

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीबाला-त्रिपुरा-मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता।

ऐं बीजं । सौः शक्तिः । क्लीं कीलकं । श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

ॐ श्रीदक्षिणामूर्ति-ऋषये नमः शिरसि ।
ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे ।
ॐ श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै नमो हृदि ।
ॐ ऐं बीजाय नमो गुह्ये ।
ॐ सौः शक्तये नमः पादयोः ।
ॐ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ।
ॐ श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी - प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

॥ षडङ्ग-न्यास ॥

	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ क्लीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ सौः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ क्लीं	कनिष्ठाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ॐ सौः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

॥ ध्यान ॥

अरुण-किरण-जालैरञ्जिता सावकाशा,
विधृत-जप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता ।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कल्हार-संस्था,
निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याण-शीला ॥

॥ मानस-पूजन ॥

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परि-कल्पयामि
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं ,,
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं ,,
ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं ,,
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं ,,
ॐ सं सर्वात्मकं ताम्बूलं ,,

फिर योनि-मुद्रा से प्रणाम कर 'जप-माला' का सम्प्रोक्षण कर गन्ध-पुष्प से पूजन कर शिर में गुरु का, कण्ठ में मन्त्र का और हृदय में देवता का ध्यान करते हुए यथा-शक्ति मूल-मन्त्र (ऐं क्लीं सौः) का जप करे ।

जप के अन्त में माला को शिर पर रखकर मूल-मन्त्र से तीन बार प्राणायाम कर पूर्वोक्त ऋष्यादि-कर-षडङ्ग न्यास कर हाथ में गन्धोदक लेकर जप को समर्पित करे—

ॐ गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत् - प्रसादान्महेश्वरि ! ।।

अनेन यथा-शक्ति जप - कर्मणा श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी साङ्गा, स - परिवारा, सायुधा, स - शक्तिका, प्रीयतां नमः ।

इसके बाद प्रातः-स्तोत्र का पाठ करे । यथा—

प्रातर्नमामि जगतां, जनन्याश्चरणाम्बुजम् ।
श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दर्या, नमिताया हरादिभिः ।।१

प्रातस्त्रिपुर-सुन्दर्या, नमामि पद - पङ्कजम् ।
हरिर्हरो विरञ्चिश्च, सृष्ट्यादीन् कुरुते यथा ।।२

प्रातस्त्रिपुर-सुन्दर्या, नमामि चरणाम्बुजम् ।
यत्-पाद्यमम्बु शिरसि, भाति गङ्गा महेशितुः ।।३

प्रातः पाशांकुश-शर-चाप-हस्तां नमाम्यहम् ।
उद्यदादित्य-सङ्काशां, श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।४

प्रातर्नमामि पादाब्जं, ययेदं धार्यते जगत् ।
तस्यास्त्रिपुर-सुन्दर्या, यत्-प्रसादान्निवर्तते ।।५

।। फल-श्रुति ।।

यः श्लोक-पञ्चकमिदं, प्रातर्नित्यं पठेन्नरः ।
तस्मै ददात्यात्म-पदं, श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी ।।

इस प्रकार स्तवन कर सांसारिक कर्तव्य-पालन के लिए इष्ट-देवता से आज्ञा माँगे। यथा—

त्रैलोक्य-चैतन्य-मयि त्रि-शक्ते,
विश्वस्य मातर्भवदाज्ञयैव।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थम्,
संसार - यात्रामनुवर्तयिष्ये॥
संसार - यात्रामनुवर्तमानम्,
त्वदाज्ञया शाङ्करि, देव-देवि!
स्पर्धा-तिरस्कार-कलि-प्रमाद—
भयानि दुष्टान्यपहंसि देवि!॥
जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्ति—
र्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
त्वया हृदन्तः-स्थितया परेशि!
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि॥
अहं देवी न चान्योऽस्मि,
ब्रह्मैवाहं न शोक - भाक्॥

इस प्रकार अपने को सच्चिदानन्द - रूप समझते हुए गुरु, देवता और आत्मा के ऐक्य की भावना कर पृथ्वी माता से प्रार्थना करे। यथा—

समुद्र - मेखले देवि ! पर्वत-स्तन-मण्डले !
विष्णु-पत्नि ! नमस्तुभ्यं, पाद-स्पर्शं क्षमस्व मे ॥
धारणं पोषणं त्वत्तो, भूतानां देवि ! सर्वदा ।
तेन सत्येन मां पाहि, पाशान् मोचय धारिणि !॥

इस प्रकार प्रार्थना कर जो श्वास चल रही हो, उसके अनुसार पैर पृथ्वी पर रखे और शय्या छोड़कर बाहर निकले । बाहर निकल कर आठ कुल-वृक्षों (श्लेष्मान्तक, करञ्ज, निम्ब, अश्वत्थ, कदम्ब, बिल्व, वट और अशोक) को प्रणाम करे ।

शौच-विधि

नैऋत्य या वायव्य दिशा में एकान्त स्थान में पहुँच कर निम्न मन्त्र से तीन बार ताली बजावे—

गच्छन्तु ऋषयो देवा, पिशाचा यक्ष-राक्षसाः ।
पितृ-भूत-गणाः सर्वे, करिष्ये मल-मोचनम् ॥

फिर यज्ञोपवीत को दाएँ कान पर चढ़ाकर उत्तर की ओर (रात्रि में दक्षिण की ओर) मुख करके बैठे और शौच-क्रिया से निवृत्त हो । तदनन्तर मिट्टी से हाथ - पैरों को धोकर आठ बार कुल्ला कर आचमन करे ।

दन्त-धावन

विहित दातून को हाथ में लेकर पहले उसकी प्रार्थना करे। यथा—

आयुर्बलं यशो वर्चः, प्रजाः पशु-धनानि च।
श्रियं प्रज्ञां च मेधां च, त्वन्नो देहि वनस्पते !॥
ष्ठीवनाय च गात्राणां, विनाशाय च दुष्कृताम्।
मुख-दुर्गन्धि-विनाशाय, कुर्वेऽहं दन्त-धावनम्॥

इस प्रकार प्रार्थना कर '**ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा**' से दातून को छीले या कुचले। फिर '**ॐ क्लीं काम-देवाय सर्व-जन-प्रियाय नमः**' से दाँतों को स्वच्छ कर '**ॐ ऐं ॐ**' से जिह्वा को स्वच्छ करे। तब दातून को धोकर नैऋत्य दिशा में शुद्ध स्थान में फेंक दे। तदनन्तर मुख धोकर आचमन करे और गुरु-देव तथा इष्ट-देवता को प्रणाम कर स्नान के लिए जाए।

स्नान-विधि

नदी आदि जलाशय के पास पहुँच कर तीर्थ-देवता को नमस्कार करे। अनामिका या तर्जनी में स्वर्ण या रजत की अँगूठी धारण कर 'फट्' से जलाशय के किनारे की भूमि को धोकर धुले हुए

वस्त्र रखे और हाथ-पैरों को धोकर आचमन कर वैदिक स्नान कर तान्त्रिक स्नान करे। पहले सङ्कल्प करे। यथा--

ॐ अद्येत्यादि···एतन्मन्त्र-प्रतिबन्धकाशेष-पाप-क्षय-पूर्वक श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थे स्नानं करिष्ये।

फिर जल में 'त्रिकोण' लिखकर अपने शिर में गुरु-देव का और हृदय में भगवती बाला का पूर्व-वत् ध्यान कर उनकी मानस-पूजा करे। तदनन्तर 'क्रों' अंकुश-मुद्रा से तीर्थों का आवाहन करे। यथा—

ब्रह्माण्डोदर-तीर्थानि, करैः स्पृष्टानि ते रवे!
तेन सत्येन मे देव! तीर्थं देहि दिवाकर!॥
ॐ गङ्गे यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति!
नर्मदे सिन्धु कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

फिर 'वं' धेनु-मुद्रा से अमृतीकरण कर मत्स्य-मुद्रा से आच्छादन कर तीर्थ-शक्ति का ध्यान करे—

सर्वानन्द-मयीमशेष-दुरित-ध्वंसां मृगाङ्क-प्रभाम्।
व्यक्षां चोर्ध्व-कर-द्वयेन, दधतीं पाशं सृणिं च क्रमात्॥
दोर्भ्यां चामृत-पूर्ण-हेम-कलशं मुक्ताक्ष-मालां वरम्।
गङ्गा-सिन्धु-सरिद्-वरादि-सहितां श्रीतीर्थ-शक्तिं भजे॥

इस प्रकार ध्यान कर मूल-मन्त्र से तीन बार अपने शिर का प्रोक्षण कर मूल-मन्त्र से शरीर में मिट्टी लगाकर तीन बार डुबकी लगाकर मूल-मन्त्र का जप करते हुए किनारे आकर निम्न मन्त्र से तीन बार जलाञ्जलियाँ अर्पित करे—

असुरा भूत-वेतालाः, कूष्माण्डा ब्रह्म-राक्षसाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु, मया दत्तेन वारिणा ।।

फिर जल से बाहर निकलकर मूल-मन्त्र से धुले हुए वस्त्र पहने और निम्न मन्त्र से शिखा-बन्धन करे—

ॐ मणि-धरिणि, वज्रिणि, महा-प्रतिसरे ! रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ।

इसके बाद मूल-मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित यज्ञीय भस्म या चन्दनादि से ललाट पर कुल-रूप तिलक लगावे ।

सन्ध्या-विधि

वैदिक सन्ध्या करने के बाद तान्त्रिकी सन्ध्या करे । पहले **'ॐ अद्येत्यादि'''एतन्मन्त्र-प्रतिबन्धकाशेष-दुरित-क्षय-पूर्वकं श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थं अमुक-सन्ध्यां करिष्ये'**—इस प्रकार सङ्कल्प कर, तीन बार

निम्न मन्त्रों से आचमन करे—**ॐ ऐं आत्म-तत्त्वाय स्वाहा । ॐ क्लीं विद्या-तत्त्वाय स्वाहा । ॐ सौः शिव-तत्त्वाय स्वाहा ।**

अब मूल-मन्त्र से प्राणायाम कर, शिखा-बन्धन कर, शुद्ध जल में '**ॐ गङ्गे च यमुने च**' इत्यादि मन्त्र से '**क्रों**' अंकुश-मुद्रा द्वारा सूर्य-मण्डल से तीर्थों का आवाहन करे । कुछ जल बाँएँ हाथ में लेकर, दाएँ हाथ से ढँके और 'हं यं रं वं लं' इन पाञ्च-भौतिक मन्त्रों से उसे तीन बार अभिमन्त्रित कर, अञ्जलि से गिरते हुए उसके बिन्दुओं से अपने शिर पर सात बार प्रोक्षण कर, शेष जल को दाएँ हाथ में लेकर, यह भावना करे कि वह इड़ा नाड़ी से होकर देह के अन्दर के पाप को धोते हुए पिङ्गला नाड़ी से बाहर निकला है । उस जल को पाप-रूप समझते हुए अपने सामने स्थित कल्पित वज्र-पाषाण पर निम्न मन्त्र से पटक दे—

ॐ श्लीं पशुं हुं फट् स्वाहा ।

इस प्रकार 'अघ-मर्षण' कर हाथों को धोकर मूल-मन्त्र से आचमन कर अर्घ्य-पात्र में जल लेकर '**ॐ ब्रह्मानन्द-भैरवः सशक्तिकस्तृप्यतां**' से तीन बार तर्पण कर 'गुरु-चतुष्टय' का तीन या एक बार तर्पण करे ।

तदनन्तर सामने जल में यन्त्र की भावना कर '**ॐ कालाग्नि-रुद्रं तर्पयामि**' इत्यादि पीठ-मन्त्रों से पीठ-देवताओं को एक-एक अञ्जलि देकर देवी का ध्यान करे। यथा—

प्रातः-काल की सन्ध्या में—

प्रातर्ब्राह्मीं रक्त-वर्णां, द्विभुजां च कुमारिकाम् ।
कमण्डलुं तीर्थं-पूर्णमच्छ-मालां च बिभ्रतीम् ।।
कृष्णाजिनाम्बर-धरां, हंसारूढां शुचि-स्मिताम् ।

मध्याह्न-काल की सन्ध्या में—

मध्याह्ने तां स्वर्ण-वर्णां, वैष्णवीं च चतुर्भुजाम् ।
शङ्ख-चक्र-गदा - पद्म - धारिणीं गरुडासनाम् ।।
पीनोत्तुङ्ग-कुच-द्वन्द्वां, वन-माला-विभूषिताम् ।
युवतीं सततं ध्यायेन्, मध्ये मार्तण्ड - मण्डले ।।

सायं-काल की सन्ध्या में—

सायाह्ने वरदां देवीं, गायत्रीं संस्मरेद् यतिः ।
शुक्लां शुक्लाम्बर-धरां, वृषासन - कृताश्रयाम् ।।
त्रिनेत्रां वरदां पाशं, शूलं च नृ - करोटिकाम् ।
बिभ्रतीं कर-पद्मैश्च, वृद्धां गलित - यौवनाम् ।।

फिर पञ्चोपचारों से पूजन कर **'मूलं श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी तृप्यताम्'** से तीन बार 'तर्पण' कर एक-एक अञ्जलि से परिवार - देवताओं का 'तर्पण' करे। असमर्थ हो, तो **'स-शक्तिः सायुधा स - परिवारा श्री-बाला - त्रिपुर - सुन्दरी तृप्यतां'** इस मन्त्र से दस बार 'तर्पण' करे।

तदनन्तर अर्घ्य-पात्र में दूर्वा-अक्षत-रक्त - चन्दन-जपा-पुष्प आदि से अर्घ्य की रचना कर, **'ॐ ह्रीं हंसः मार्तण्ड-भैरवाय प्रकाश-शक्ति-सहिताय एषोऽर्घ्यः स्वाहा'** से कुल-सूर्य को तीन बार अर्घ्य प्रदान कर, सूर्य-मण्डल में देवी का ध्यान कर, पूर्व-वत् अर्घ्य की रचना कर, वैदिक गायत्री - मन्त्र का उच्चारण कर **'श्री बाला-त्रिपुर - सुन्दर्यै ब्रह्म-चैतन्य-मयायै॥ एषोऽर्घ्यः स्वाहा'** से तीन बार अर्घ्य देकर श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी की गायत्री—**'ऐं बालायै विद्महे क्लीं त्रिपुरायै धीमहि सौः**

॥ मध्याह्न - काल की सन्ध्या में **'रुद्र - चैतन्य-मयायै'** और सायं-काल की सन्ध्या में **'विष्णु-चैतन्य-मयायै'** कहे।

तन्नः सुन्दरी प्रचोदयात्'• का यथा-शक्ति जप करे। अन्त में निम्न मन्त्र से जप का समर्पण करे—

'श्रीसूर्य-मण्डलस्थायै श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यै इदं जपं समर्पयामि।'

इस प्रकार सन्ध्योपासना कर चुकने पर यथा-सुविधा कवच, हृदय, शत-नाम, सहस्र-नामादि स्तोत्रों का विधि-वत् पाठ करे।

• 'श्रीबाला-गायत्री' के अन्य पाठ भी हैं। यथा—

१—ऐं वागीश्वरि विद्महे क्लीं कामेश्वरि धीमहि, सौः तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्,

२—क्लीं त्रिपुरा देवि ! विद्महे कामेश्वरि ! धीमहि, तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।

अपनी गुरु-परम्परा के अनुसार किसी एक तान्त्रिक 'गायत्री-मन्त्र' का जप करे।

निशा-पूजन (चक्रार्चन)

स्थान-संस्कार आदि

साधक पूजा - स्थान को गोबर से लीपे अथवा यथोचित ढँग से शुद्ध बनावे। फिर उस स्थान को वितान एवं पुष्प-मालाओं से युक्त मण्डप - सा सजावे तथा कई दीपकों से उसे प्रकाशमान कर धूप से सुगन्ध-पूर्ण करे। इस प्रकार पूजा-स्थान को सजाकर, बाहर आकर, हाथ-पैर धो, स्नान तथा आचमन कर, पवित्र होकर, शुद्ध धोती पहन और कन्धे पर अँगोछा रख, माथे में लाल चन्दन या सिन्दूर लगा तथा पान खा, पूजा-गृह के द्वार पर जा, 'पापोत्सादन' के लिए नीचे लिखे मन्त्रों को वह हाथ जोड़कर पढ़े--

ॐ सूर्यः सोमो यमः कालो, महा-भूतानि पञ्च च।
एते शुभाशुभस्येह, कर्मणो नव साक्षिणः॥
देवि! त्वं प्राकृतं चित्तं, पापाक्रान्तमभून् मम।
तान्निःसारय चित्तान् मे, पापं फट् फट् च ते नमः॥

'फट् फट्' के उच्चारण के साथ ही दाईं तर्जनी-मध्यमा द्वारा बाँएँ करतल पर फट्-कार करे तथा

'नमः' कहते समय पुनः हाथ जोड़े। इस प्रकार 'पापोत्सादन' की क्रिया कर निष्पाप होकर बैठने के लिए आसन बिछा, नीचे का मन्त्र पढ़कर हाथ में जल लेवे—

ॐ वज्रोदके हुं फट् स्वाहा।

'स्वाहा' कहने के साथ ही उक्त जल को बिछे हुए आसन पर छिड़क कर उस पर बैठे। फिर—**ॐ विशुद्धे सर्व-पापानि शमयाशेष-विकल्पानमनपहम्**—यह मन्त्र पढ़कर हाथ-पैर धोवे। फिर '**ॐ ह्रीं स्वाहा**'—कहकर आचमन करे और यही मन्त्र कहकर शिखा बाँधे। इसके बाद सामान्यार्घ्य-पात्र का स्थापन करे। यथा—

सामान्यार्घ्य-पात्र-स्थापन

अपने दाहने त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्र का एक मण्डल बनावे। '**ॐ ह्रीं आधार - शक्तये नमः**'—से मण्डल का पूजन कर उस पर अर्घ्य-पात्र का आधार स्थापित करे। '**अस्त्राय फट्**'—से अर्घ्य-पात्र को धोकर उसे आधार पर रक्खे। '**नमः**'—कहकर पात्र में शुद्ध जल भरे। फिर—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति !
नर्मदे सिन्धु कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

यह मन्त्र पढ़कर सूर्य-मण्डल से अंकुश-मुद्रा द्वारा पात्रस्थ जल में तीर्थों का आवाहन करे। 'ॐ'—से उस जल में गन्धादि छोड़े। 'वं'—वीज का उच्चारण कर धेनु-मुद्रा दिखाकर उसे अमृत-मय करे।

द्वार-पूजा

इसके बाद सामान्यार्घ्य के जल को पूजा-गृह के द्वार पर छिड़क कर चन्दन-लिप्त अक्षतों और पुष्पों से द्वार-देवताओं का पूजन आगे के मन्त्रों से करे—

ॐ द्वार-श्रियै नमः	ऊपर
गं गणेशाय नमः	उसकी दाहनी ओर
ॐ श्रियै नमः	उसकी बाँई ओर
धां धात्रे नमः	दाहिनी बाजू में
महा-लक्ष्म्यै नमः	,, ,,
गङ्गायै नमः	,, ,,
विं विधात्रे नमः	बाँयीं बाजू में
महा-सरस्वत्यै नमः	,, ,,
यमुनायै नमः	,, ,,
ॐ शङ्ख-निधये नमः	देहली में दाहिनी ओर

ॐ पद्म-निधये नमः ,, ,, बाँईं ओर

ॐ देहल्यै नमः देहली के बीच में

इस प्रकार द्वार-देवताओं का पूजन कर सामान्यार्घ्य-पात्र आदि के सहित पूजा-गृह में प्रवेश करे। बाँयाँ अङ्ग सङ्कोचन-पूर्वक दाहिना पैर पहले उठाकर गृह से जाय।

स्थान-शोधन

भीतर जाकर हाथ में सरसों, तिल और अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र पढ़ स्थान-शोधन के लिए भूतापसर्पण करे--

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं, स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्-सर्वं, यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥
अपसर्पन्तु भूतानि, पिशाचाः प्रेत - राक्षसाः।
ये चात्र निवसन्त्यन्ये, देवताः भुवि संस्थिताः॥
अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भूमि-संस्थिताः।
ये भूता विघ्न-कर्तारः, ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

मन्त्र पढ़ चुकने पर उन सबको चारों ओर बिखेर दे।

इसके बाद--'मूल-मन्त्र' के अन्त में 'फट्' जोड़कर पढ़े और बाँएँ पैर की एँड़ी से भूमि पर तीन बार

आघात कर भूमि के विघ्नों को, ऊपर को हाथ उठाते हुए तीन बार फट्-कार कर अन्तरिक्ष के विघ्नों को और दिव्य दृष्टि से अर्थात् एक-टक इधर-उधर देखकर दिव्य विघ्नों को उस स्थान से हटा दे।

इसके बाद अपने साथ लाए हुए सामान्य - अर्घ्य के कुछ जल को पूजा-घर में छिड़क दे। फिर ईशान-कोण में—**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्वादश - शक्ति - युक्ताय दीप-नाथाय नमः**—से 'दीप - नाथ' को एक पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। तब—**ॐ रं अग्नि-प्राकाराय नमः, ॐ सह-स्रार हुं फट् सुदर्शन-प्राकाराय नमः, ॐ श्लीं पशुं हुं फट् पशुपत-प्राकाराय नमः**—ये तीन मन्त्र पढ़ते हुए 'छोटिका-मुद्रा' से अर्थात् चुटकी बजाकर अपने चारों ओर उक्त तीन प्राकारों की रचना करे। इसके बाद—

ॐ तीक्ष्ण-दंष्ट्र महा-काय ! कल्पान्त-दहनोपम !
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

यह मन्त्र पढ़कर भैरव से देवता का पूजन करने की आज्ञा प्राप्त करे।

आसन-शोधन

तदनन्तर पूजा-स्थान पर हाथ रखकर—

ॐ पवित्र-वज्र-भूमे हुं फट् स्वाहा—यह मन्त्र पढ़ कर भूमि को अभिमन्त्रित करे। फिर—

ॐ आः सुरेखे वज्र-रेखे हुं फट् स्वाहा—इस मन्त्र से सामान्यार्घ्य के जल से उस पूजा-स्थान में एक त्रिकोण बनावे और उसके भीतर '**ह्सौः**'—यह 'प्रेत-वीज' लिखे।

यदि पूजा-गृह के द्वार पर सामान्यार्घ्य स्थापित न किया गया हो, तो पहले जल को शुद्ध कर ले, तब उसका उपयोग करे। दाहने हाथ के ऊपर बाँयाँ हाथ रख '**यं**' वायु-वीज से जल के दोषों का शोषण करे; बाँएँ हाथ पर दाहिना हाथ रख '**रं**' अग्नि-वीज से शुष्क दोषों का दाहन करे; '**वं**' वरुण-वीज से निर्दोष जल का आप्लावन करे; मूल-मन्त्र से जल-द्वारा उसका प्रोक्षण करे और धेनु-मुद्रा से उसे अमृत-मय करे। इस प्रकार जल का शोधन कर उसके द्वारा पूजन-क्रिया करे। यथा—

ॐ ह्रीं आधार - शक्ति - कमलासनाय नमः—इस मन्त्र से आसन का पूजन करे और तब उसे त्रिकोण बने पूजा-स्थान में बिछा दे।

तदनन्तर आसन पर हाथ रखकर—

अस्य श्री आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः,

सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनोपवेशने विनियोगः—
यह विनियोग पढ़े और प्रार्थना करे—

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ॥

इसके बाद आसन पर बैठे और नीचे के मन्त्रों से चार बार आचमन करे—

ऐं आत्म - तत्त्वाय स्वाहा ।
क्लीं विद्या-तत्त्वाय स्वाहा ॥
सौः शिव-तत्त्वाय स्वाहा ।
ऐं क्लीं सौः सर्व-तत्त्वाय स्वाहा ॥

इस प्रकार आचमन कर पूजा का सङ्कल्प हाथ में जल लेकर पढ़े । यथा—

संकल्प

ॐ तत्सत् अद्येतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेत-वराह-कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत-खण्डे आर्यावर्त-देशे पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-सम्वत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रो अमुक-शर्माऽहं श्रीबाला-त्रिपुरा-देवता-प्रीत्यर्थं यथा-सम्भव-द्रव्यैः यथा-शक्ति यजनं करिष्ये ।

इसके बाद योनि-मुद्रा से बाएँ कन्धे पर—**गुं गुरुभ्यो नमः**—से गुरुदेवों को, दाहने कन्धे पर—**गं गणेशाय नमः**—इस मन्त्र से गणेश को और हृदय में—**श्री बाला-त्रिपुरायै नमः**—इस मन्त्र से इष्ट-देवता को प्रणाम करे।

विजया-ग्रहण

तदनन्तर विजया का स्वीकार करे। यथा—

संविद्-पात्र को सामने आधार पर रखकर हाथ जोड़कर—**ॐ अस्य संविद्-मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, सदा-शिवो देवता, संवित्-सान्निध्यारोपणे विनियोगः**—यह विनियोग पढ़े। फिर संवित् देवी का ध्यान करे। यथा—

ॐ सिद्धाढ्यां शिव-मोहिनीं कर-लसत्पाशांकुशां भैरवीं।
भक्ताभीष्ट-फल-प्रदां सुकुशलां संसार-बन्ध-च्छिदाम् ॥
पीयूषाम्बुधि-मन्थनोद्भव-रसां संविद्-विलासास्पदां।
वीराराधित-पादुकां सुविजयां ध्यायेज्जगन्मोहिनीम् ॥

ॐ संविदे ब्रह्म-सम्भूते, ब्रह्म-पुत्रि सदाऽनघे!
भैरवानां च तृप्त्यर्थं, पवित्रा भव सर्वदा ॥

ॐ ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा।

ॐ सिद्धि-मूल-क्रिये देवि, हीन-बोध-प्रबोधिनि !
राज-प्रजा-वशं - करि, शत्रु-कण्ठ-त्रिशूलिनि ! ॥
ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा ।

ॐ अज्ञानेन्धन-दीप्ताग्ने, ज्ञानाग्ने ज्ञान-रूपिणि !
आनन्दस्याहुतिं प्रीतिं, सम्यक् ज्ञानं प्रयच्छ मे ॥
ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा ।

ॐ नमस्यामि नमस्यामि, योग-मार्ग-प्रदर्शिनि !
त्रैलोक्य-विजये मातः ! समाधि-फलदा भव ॥
क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा ।

इन चारों मन्त्रों को पात्र के ऊपर हाथ रखकर पढ़े और उसे शुद्ध करे । फिर—

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि ! अमृतमाकर्षय आकर्षय अमृतं कुरु कुरु स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर धेनु-मुद्रा से उसे अमृत-मय करे ।

इसके बाद—यं वायु-वीज से दोष-शोषण, रं अग्नि-वीज से दोष-दहन और वं वरुण-वीज से धेनु-मुद्रा द्वारा अमृत-मय करे । फिर योनि-मुद्रा से नमस्कार कर मत्स्य-मुद्रा से उस पर आठ बार मूल-मन्त्र का जप करे । तदनन्तर पुनः ध्यान करे । यथा—

ॐ संविद्-देवि गरीयसी गुण-मयी वैगुण्य-विध्वंसिनी ।
माया-मोह-महान्धकार-शमनी ताप-त्रयोन्मूलिनी ।।
वन्दे वीर-मुखाम्बुजे विलसिनी संदीपनी दीपिका ।
ब्रह्म-ज्ञान-मयी विवेक-जनिका विज्ञान-मूर्त्यै नमः ।।

फिर—

ॐ वद वद वाग्वादिनि ! मम जिह्वाग्रे स्थिरी भव-सर्व-सत्वं वशङ्करि ! स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़कर भावना-द्वारा विजया को कुण्डलिनी के मुख में अर्पित कर दे ।

पुष्पादि-स्थापन

इसके बाद सामान्यार्घ्य के जल से अपने को तथा पूजा के उपकरणों को प्रोक्षित करे । तब अपनी दाहिनी ओर पुष्प आदि, अपने पृष्ठ-भाग में हाथ धोने के लिए पात्र और अपनी बाँईं ओर पूजा के द्रव्य स्थापित करे । इसके बाद अपने सामने कुछ दूरी पर यन्त्र-राज की स्थापना के लिए चौकी या सिंहासन रखे । उसके दक्षिण में तेल का और वाम में घी का दीपक जला कर स्थापित करे । फिर—

ॐ पुष्पकेतु राजार्हं ते शताय सम्यक् संबद्धाय ।

ॐ पुष्पे पुष्पे महा-पुष्पे सु-पुष्पे पुष्प-सम्भवे । पुष्पं यवावकीर्णं हुँ फट् स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़कर पुष्पों का शोधन करे ।

फिर **ॐ ह्रीं हुं फट्** यह मन्त्र पढ़कर नाराच-मुद्रा और सम-दृष्टि से गन्धादि सामग्री का शोधन करे ।

इसके बाद—रं अग्नि-वीज को पढ़कर दीपक की लौ का स्पर्श करे ।

फिर—**ॐ हुं फट् स्वाहा**—यह मन्त्र पढ़कर काय, वाणी और चित्त को शुद्ध करे ।

इसकेबाद हृदय पर हाथ रखकर—**रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा**—यह मन्त्र पढ़कर अपनी रक्षा करे ।

तदनन्तर चन्दन लगे हुए फूल हाथ में लेकर उन्हें मींज कर बाएँ हाथ में लेकर सूँघे और—

ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु, ये मां हिंसन्ति हिंसकाः ।
मृत्यु-रोग-भय-क्लेशाः, पतन्तु रिपु - मस्तके ।।

इसके बाद—**ॐ ऐं स्त्रीं फट्**—इस कुल्लुका-मन्त्र का मूर्ध्नि में चिन्तन करे ।

इसके बाद शरीर-शोधन के लिये प्राणायाम करे ।

शरीर-शोधन

प्राणायाम मूल-मन्त्र के पहले बीज से या प्रणव से करे। प्रणव से इस प्रकार करे—

१६ बार प्रणव का जप करता हुआ बाँयीं नासिका से धीरे-धीरे वायु भीतर खींचे और दाहिने अँगूठे से दाहिनी नासिका को बन्द किए रहे।

फिर ६४ बार प्रणव का जप करता हुआ उस वायु को भीतर भरे रहे। इस समय बाँईं नासिका को भी दाहिनी अनामिका और कनिष्ठा से बन्द किए रहे।

फिर ३२ बार प्रणव का जप करता हुआ उस भरी हुई वायु को दाहिनी नासिका से धीरे-धीरे बाहर निकाले। इस समय वायु निकलने के लिए उस पर से दाहिना अँगूठा हटा ले।

यह एक प्राणायाम हुआ। यही क्रिया तीन बार करने से पूरा प्राणायाम होता है। पहले प्राणायाम में बाँयीं नासिका से वायु खींची जाती है और दाहिनी से छोड़ी जातीहै, दूसरे में दाहिनी से खींची जाती है और बाँयीं से छोड़ी जाती है और तीसरे में फिर बांयीं से खींची जाती है और दाहिनी से छोड़ी जाती है।

प्रणव की जप-संख्या का क्रम शेष दोनों पहले जैसा ही रहता है।

प्राणायाम के बाद शरीर की विशेष शुद्धि के लिए भूत-शुद्धि करे।

भूत-शुद्धि

'हुँ' बीज का उच्चारण कर मूलाधार - चक्र से कुण्डलिनी को उठाए। हृदयस्थ जीवात्मा से कुण्डलिनी को संयुक्त कर सुषुम्ना नाड़ी के मार्ग से ले जाकर सहस्रार की कर्णिका में परमात्मा से उन्हें 'हंसः'—यह मन्त्र पढ़कर संयुक्त करे। फिर परमात्मा को ऐसा समझे कि उसमें चौबीसों तत्त्व लीन हैं।

तदनन्तर बाईं कोख में पाप-पुरुष का ध्यान इस प्रकार करे—

वाम-कुक्षि-स्थितं कृष्णमंगुष्ठ-परिमाणकम्।
विप्र-हत्या-शिरोयुक्तं, कनक-स्तेय-बाहुकम्॥
मदिरा-पान-हृदयं, गुरु-तल्प-कटी-युतम्।
तत्-संयोगि पद-द्वन्द्वमुपपातक-रोमकम्॥
खड्ग-चर्म-धरं दुष्टमधोवक्त्रं च दुस्सहम्।

इसके बाद 'यं' बीज को १६ बार जपता हुआ बांयीं नासिका से वायु को भीतर खींचे और उसे बांयीं

कोख में ले जाकर वहाँ पर स्थित पाप-पुरुष का उससे शोषण करे। इस समय दाहिनी नासिका को दाहिने अँगूठे से बन्द किए रहे। इसके बाद 'रं' अग्नि-बीज को ६४ बार जपता हुआ उस वायु को भीतर भरे रहे और यह समझे कि उस वायु से पाप-पुरुष-सहित सारी देह जल गई है। तदनन्तर 'यं' वायु-बीज को ३२ बार जपता हुआ उस वायु को दाहिनी नासिका से बाहर निकाल दे और यह समझे कि जले हुए पाप-पुरुष की देह की सारी राख उसके साथ बाहर निकल गई है। इस समय बाँयीं नासिका को अनामा और कनिष्ठा से बन्द किए रहे। 'वं' सुधा-बीज को १६ बार जपता हुआ ललाट में स्थित चन्द्रमा के अमृत की वृष्टि कराए और यह समझे कि उस अमृत-वृष्टि से वह भस्मीभूत शरीर पुनः सावयव होकर पहले जैसा ही अस्तित्व में आ गया है। अब 'लं' पृथ्वी-बीज को १६ बार जपे और यह समझे कि वह देह पूर्व-वत् सुदृढ़ हो गई है। इसके बाद 'सोऽहं' इस मन्त्र का उच्चारण कर परमात्मा से युक्त जीवात्मा और कुण्डलिनी को मूलाधार-चक्र में स्थापित करे। इस प्रकार अपनी आत्मा को प्रपञ्चों से परे समझे।

यदि भूत-शुद्धि करने में असमर्थ हो, तो 'ॐ ह्रौं'—इस मन्त्र का १०८ बार जप कर अपने शरीर की शुद्धि करे।

इस प्रकार देह की शुद्धि कर लेलिहानी-मुद्रा से अपने हृदय के दश-दल के कमल में इष्ट-देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करे।

प्राण-प्रतिष्ठा

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं ह्रौं हंसः श्रीबाला-त्रिपुरा-देवतायाः ॥ प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं ह्रौं हंसः श्रीबाला-त्रिपुरायाः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं ह्रौं हंसः श्रीबाला-त्रिपुरायाः सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं ह्रौं हसः श्रीबाला-त्रिपुरायाः वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र - जिह्वा-घ्राण - पाद-पायू-पस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

॥ अन्यत्र प्राण-प्रतिष्ठा का मन्त्र भिन्न है, जिसमें अपने प्राणों की प्रतिष्ठा की विधि है। वह मन्त्र ऊपर जैसा ही है, केवल देवता के प्राण के स्थान में 'मम प्राणाः' का उल्लेख किया जाता है।

इस मन्त्र को तीन बार पढ़े और यह समझे कि देवता अपने साकार रूप में उसके हृदय में स्थित हो गया है। इसके बाद 'ॐ' का १५ बार जप करे और यह कहे—**अनेन मम देहस्य गर्भाधानादि-पञ्चदश-संस्कारान् सम्पादयामि।**

इससे यह समझे कि हमारी देह के पन्द्रहों संस्कार हो गए।

न्यास

कर-शुद्धि-न्यास

इसके बाद न्यास-क्रिया के लिए अँगुलियों की शुद्धि के लिए कर-शुद्धि-न्यास करे। यथा—

ॐ अं नमः दक्ष कर-तले। ॐ आं नमः वाम कर-तले।
ॐ इं नमः दक्ष कर-पृष्ठे। ॐ ईं नमः वाम कर-पृष्ठे।
ॐ उं नमः दक्ष कर-तले। ॐ ऊं नमः वाम कर-तले।
ॐ ऋं नमः दक्ष अंगुष्ठे। ॐ ॠं नमः दक्ष तर्जन्यां।
ॐ ऌं नमः दक्ष मध्यमायाम्।
ॐ ॡं नमः दक्ष अनामायाम्।
ॐ एं नमः दक्ष कनिष्ठायाम्।
ॐ ऐं नमः वाम कनिष्ठायाम्।
ॐ ओं नमः वाम अनामायाम्।

ॐ औं नमः वाम मध्यमायाम् ।
ॐ अं नमः वाम तर्जन्याम् ।
ॐ अः नमः वाम अंगुष्ठे ।
ॐ कं नमः वाम तर्जनी प्रथम-पर्वे ।
ॐ खं नमः वाम तर्जनी मध्य-पर्वे ।
ॐ गं नमः वाम तर्जनी तृतीय-पर्वे ।
ॐ घं नमः वाम तर्जनी अग्रे ।
ॐ ङं नमः वाम मध्यमा प्रथम-पर्वे ।
ॐ चं नमः वाम मध्यमा द्वितीय-पर्वे ।
ॐ छं नमः वाम मध्यमा तृतीय-पर्वे ।
ॐ जं नमः वाम मध्यमा अग्रे ।
ॐ झं नमः वाम अनामा प्रथम-पर्वे ।
ॐ ञं नमः वाम अनामा द्वितीय-पर्वे ।
ॐ टं नमः वाम अनामा तृतीय-पर्वे ।
ॐ ठं नमः वाम अनामा अग्रे ।
ॐ डं नमः वाम कनिष्ठा प्रथम-पर्वे ।
ॐ ढं नम वाम कनिष्ठा द्वितीय-पर्वे ।
ॐ णं नमः वाम कनिष्ठा तृतीय-पर्वे ।
ॐ तं नमः वाम कनिष्ठा अग्रे ।
ॐ थं नमः दक्ष कनिष्ठा प्रथम-पर्वे ।

ॐ दं नमः दक्ष कनिष्ठा द्वितीय-पर्वे ।
ॐ धं नमः दक्ष कनिष्ठा तृतीय-पर्वे ।
ॐ नं नमः दक्ष कनिष्ठा-अग्रे ।
ॐ पं नमः दक्ष अनामा प्रथम-पर्वे ।
ॐ फं नमः दक्ष अनामा द्वितीय-पर्वे ।
ॐ बं नमः दक्ष अनामा तृतीय-पर्वे ।
ॐ भं नमः दक्ष अनामा-अग्रे ।
ॐ मं नमः दक्ष मध्यमा प्रथम-पर्वे ।
ॐ यं नमः दक्ष मध्यमा द्वितीय-पर्वे ।
ॐ रं नमः दक्ष मध्यमा तृतीय-पर्वे ।
ॐ लं नमः दक्ष मध्यमा-अग्रे ।
ॐ वं नमः दक्ष तजनी प्रथम-पर्वे ।
ॐ शं नमः दक्ष तजनी द्वितीय-पर्वे ।
ॐ षं नमः दक्ष तजनी तृतीय-पर्वे ।
ॐ सं नमः दक्ष तर्जनी-अग्रे ।
ॐ हं नमः दक्ष अंगुष्ठे ।
ॐ ळं नमः वाम अंगुष्ठे ।
ॐ क्षं नमः सर्वाङ्गे ।

इसके बाद मातृका-न्यास करे। पहले अन्तर्मातृका-न्यास करे। यथा—

अन्तर्मातृका-न्यास

विनियोग

ॐ अस्य अन्तर्मातृका-न्यास-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं, श्रीबाला-त्रिपुर-पूजाङ्गत्वेन देव-भावाप्तये अन्तर्मातृका-न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि।
इं गायत्री - छन्दसे नमः ईं मुखे।
उं सरस्वती-देवतायै नमः ऊं हृदये।
एं हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये।
ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः।
अं अव्यक्त-कीलकाय नमः अः नाभौ।
श्रीबाला-त्रिपुरा-पूजाङ्गत्वेन देव-भावाप्तये अन्तर्मातृका-न्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

प्राणायाम

'अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः' इन स्वरों से पूरक। 'कं खं गं घं ङं चं छं जं

झं ञं, टं ठं डं ढं णं, तं थं दं धं नं, पं फं बं भं मं' इन व्यञ्जनों से कुम्भक और 'यं रं लं वं शं षं सं हं' इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करे ।

कर-न्यास

अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः ।
उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः ।
एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।
ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्ग-न्यास

अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः ।
इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा ।
उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट् ।
एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं ।
ओं पं फं बं भं मं औं नेत्र-त्रयाय वौषट् ।
अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

ध्यान

आधारे लिङ्ग-नाभौ प्रकटित-हृदये तालु-मूले ललाटे ।
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश-दश-दले द्वादशार्द्धे चतुष्के ।।
वासान्ते वाल-मध्ये डफकठ-सहिते कण्ठ-देशे स्वराणाम् ।
हक्षौ तत्त्वार्थ-चिन्त्यं सकल-दल-गतं वर्ण-रूपं नमामि ।।
शारत्पूर्णेन्दु-शुभ्रां सकल-लिपि-मयीं लोल-रक्त-त्रिनेत्रां ।
शुक्लालङ्कार-भासां शशि-मुकुट-जटा-भार-हार-प्रदीप्तां ।
विद्या-स्रक्-पूर्णकुम्भान् वरमपि दधतीं शुद्ध-पद्माभिराढ्यां ।
वाग्देवीं पद्म-पत्रां कुच-भर-नमितां चिन्तयेत् साधकेन्द्रः ।।

यह अन्तर्मातृका-न्यास मेरु-दण्ड में स्थित छहों चक्रों में करे । यथा—

न्यास

कण्ठे धूम्र-वर्णे षोडश-दले विशुद्धे—ॐ अं नमः । ॐ आं नमः । ॐ इं नमः । ॐ ईं नमः । ॐ उं नमः । ॐ ऊं नमः । ॐ ऋं नमः । ॐ ॠं नमः । ॐ ऌं नमः । ॐ ॡं नमः । ॐ एं नमः । ॐ ऐं नमः । ॐ ओं नमः । ॐ औं नमः । ॐ अं नमः । ॐ अः नमः ।

हृदये रक्त-वर्णे द्वादश-दले अनाहते—ॐ कं नमः । ॐ खं नमः । ॐ गं नमः । ॐ घं नमः । ॐ ङं नमः । ॐ चं नमः । ॐ छं नमः । ॐ जं नमः । ॐ झं नमः । ॐ ञं नमः । ॐ टं नमः । ॐ ठं नमः ।

नाभौ मेघ-वर्णे दश-दले मणिपूरे—ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः।

लिङ्ग-मूले विद्युद्-वर्णे षट्-दले स्वाधिष्ठाने—ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः।

सुवर्ण-वर्णे चतुर्दले मूलाधारे—ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः।

भ्रू-मध्ये श्वेत-वर्णे द्वि-दले आज्ञा-चक्रे—ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः।

बहिर्मातृका-न्यास

इसके बाद बहिर्मातृका-न्यास करे। पहले सृष्टि-मातृका-न्यास करे। यथा—

---

* बहिर्मातृका-न्यास सृष्टि, स्थिति और संहार के क्रम से तीन प्रकार का होता है। यह न्यास ब्रह्मचारी सृष्टि-न्यास से प्रारम्भ करते हैं, परन्तु गृहस्थ संहार-क्रम से न्यास करते हैं।

सृष्टि-मातृका-न्यास

विनियोग

ॐ अस्य बहिर्मातृका-न्यासे सृष्टि-मातृका-न्यास-मन्त्रस्य ब्रह्म-ऋषिः, गायत्री छन्दः, सृष्टि-मातृका सरस्वती देवता, हलो वीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं, श्रीबाला-त्रिपुरा-पूजाङ्गत्वेन देव-भावाप्तये सृष्टि-मातृका-न्यासे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास

ब्रह्मणे नमः शिरसि ।

गायत्री-छन्दसे नमः मुखे ।

सृष्टि-मातृका सरस्वती-देवतायै नमः हृदि ।

हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये ।

स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः ।

अव्यक्त-कीलकाय नमः नाभौ ।

श्रीबाला-त्रिपुरा-पूजाङ्गत्वेन देव-भावाप्तये सृष्टि-मातृका-न्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

प्राणायाम

'अं···अः' इन स्वरों से पूरक । 'कं···मं' इन व्यञ्जनों से कुम्भक और 'यं···क्षं' इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करे । यह क्रिया तीन बार करे ।

कर-न्यास

अं कं...ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः । इं चं···ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः । उं टं···णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट् । एं तं···नं ऐं अनामिकाभ्यां हुं । ओं पं···मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट् । अं यं···क्षं अः कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

षडङ्ग-न्यास

अं कं···ङं आं हृदयाय नमः । इं चं···ञं ईं शिरसे स्वाहा । उं टं···णं ऊं शिखायै वषट् । एं तं···नं ऐं कवचाय हुं । ओं पं···मं औं नेत्र-त्रयाय वौषट् । अं यं···क्षं अः अस्त्राय फट् ।

ध्यान

अर्द्धोन्मुक्त-शशाङ्क-कोटि-सदृशीमापीन-तुङ्ग-स्तनीम् ।
चन्द्रार्द्धाङ्कित-शेखरां मधु-दलैरालोल-नेत्र-त्रयाम् ।।
बिभ्राणामनिशं वरं जप-वटीं शूलं कपालं करैः ।
आद्यां यौवन-गर्वितां लिपि-तनुं वागीश्वरीमाश्रये ।।

न्यास

अं नमः ललाटे—मध्यमा+अनामिका
आं नमः मुख-वृत्ते—तर्जनी+मध्यमा+अनामिका
इं नमः दक्ष नेत्रे—अंगूठा (तर्जनी वा) + अनामिका

इं नमः वाम नेत्रे—अंगूठा (तर्जनी वा)+अनामिका
उं ,, दक्ष कर्णे— ,,
ऊं ,, वाम कर्णे— ,,
ऋं ,, दक्ष नासायाम्—अंगूठा+कनिष्ठा
ॠं ,, वाम नासायाम् ,, ,,
ऌं ,, दक्ष गण्डे—तर्जनी+मध्यमा+अनामिका
ॡं ,, वाम गण्डे ,,
(केवल मध्यमा वा)
एं ,, ऊर्ध्व ओष्ठे—मध्यमा
ऐं ,, अधो ओष्ठे ,,
ओं ,, ऊर्ध्व दन्त-पंक्तौ—अनामिका
औं ,, अधो दन्त-पंक्तौ ,,
अं ,, शिरसि—मध्यमा
अः ,, नमः मुखे—अनामिका (अनामिका+मध्यमा वा)
कं ,, दक्ष बाहु-मूले—मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा)
खं ,, दक्ष कूर्परे ,,
गं ,, दक्ष मणि-बन्धे ,,
घं ,, दक्ष कर-तले ,,
ङं ,, दक्ष कराग्रे ,,
चं ,, वाम बाहु-मूले—कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
छं ,, वाम कूर्परे ,,

जं नमः वाम मणि-बन्धे–कनिष्ठा+अनामा+मध्यमा
झं ,, वाम कर-तले ,,
ञं ,, वाम कराग्रे ,,
टं ,, दक्षोरु-मूले ,,
ठं ,, दक्ष जानुनि ,,
डं ,, दक्ष गुल्फे ,,
ढं ,, दक्ष पाद-तले ,,
णं ,, दक्ष पादाग्रे ,,
तं ,, वामोरु-मूले ,,
थं ,, वाम जानुनि ,,
दं ,, वाम गुल्फे ,,
धं ,, वाम पाद-तले ,,
नं ,, वाम पादाग्रे ,,
पं ,, दक्ष पार्श्वे ,,
फं ,, वाम पार्श्वे ,,
बं ,, पृष्ठे ,,
भं ,, नाभौ–अंगुष्ठ+कनिष्ठा+अनामिका + मध्यमा
मं नमः जठरे–अंगु०+तर्जनी+मध्यमा+अना०+कनि
यं त्वगात्मने नमः हृदि ,, ,, ,,

रं असृगात्मने नमः दक्षांशे–अंगुष्ठादि पाँच से
लं मांसात्मने " ककुदि "
वं मेदात्मने " वामांशे "
शं अस्थ्यात्मने " हृदादि दक्ष करांगुल्यन्तम् ।
षं मज्जात्मने " हृदादि वाम करांगुल्यन्तम् ।
सं शुक्रात्मने " नाभ्यादि दक्ष पादान्तम् ।
हं जीवात्मने " नाभ्यादि वाम पादान्तम् ।
ळं परमात्मने " हृदादि कुक्षौ ।
क्षं ज्ञानात्मने " हृदादि मुखे ।

अब स्थिति-मातृका-न्यास करे । यथा—

स्थिति-मातृका-न्यास

विनियोग

ॐ अस्य बहिर्मातृका-न्यासे स्थिति-मातृका-न्यास-मन्त्रस्य विष्णु ऋषिः, गायत्री छन्दः, स्थिति-मातृका-सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं, श्रीबाला-त्रिपुरा-पूजाङ्गत्वेन देव - भावाप्तये स्थिति-मातृका-न्यासे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास

विष्णवे ऋषये नमः शिरसि । गायत्री - छन्दसे नमः मुखे । स्थिति-मातृका-सरस्वती-देवतायै नमः

हृदि । हलो बीजाय नमः गुह्ये । स्वराः शक्तये नमः पादयोः । अव्यक्त-कीलकाय नमः नाभौ । श्रीबाला-त्रिपुरा-पूजाङ्गत्वेन देव-भावाप्तये स्थिति-मातृका-न्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

'अं···अः' इन स्वरों से पूरक । 'कं···मं' इन व्यञ्जनों से कुम्भक । 'यं···क्षं' इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करे । यह क्रिया तीन बार करे ।

कर-न्यास

अं कं···ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः । इं चं···ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा । उं टं···णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट् । एं तं···नं ऐं अनामिकाभ्यां हुं । ओं पं···मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट् । अं यं···क्षं अः कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

षडङ्ग-न्यास

अं कं···ङं आं हृदयाय नमः । इं चं···ञं ईं स्वाहा । उं टं···णं ऊं शिखायै वषट् । एं तं···नं ऐं कवचाय हुं । ओं पं···मं औं नेत्र-त्रयाय वौषट् । अं यं···क्षं अः अस्त्राय फट् ।

ध्यान

पक्षीन्द्रासन-संस्थितां भगवतीं श्यामां पिशङ्गावृताम् ।
शङ्खं चक्र-गदाब्ज-पाश-सृणिभिर्मालां दधानां पराम् ।।

विद्याऽभीति-वर-प्रदां त्रिनयनामापीन-तुङ्ग-स्तनीम् ।
देवीं विष्णु-मयीं समस्त-जननीं ध्यायामि तामम्बिकाम् ।

॥ न्यास ॥

डं नमः दक्ष गुल्फे । ढं नमः दक्ष पाद - तले । णं नमः दक्ष पादाग्रे । तं नमः वामोरु - मूले । थं नमः वाम जानुनि । दं नमः वाम गुल्फे । धं नमः वाम पाद - तले । नं नमः वाम पादाग्रे । पं नमः दक्ष पार्श्वे । फं नमः वाम पार्श्वे । बं नमः पृष्ठे । भं नमः नाभौ । मं नमः जठरे । यं त्वगात्मने नमः हृदि । रं असृगात्मने नमः दक्षांशे । लं मांसात्मने नमः ककुदि । वं मेदात्मने नमः वामांशे । शं अस्थ्यात्मने नमः हृदादि दक्ष - करान्तम् । षं मज्जात्मने नमः हृदादि वाम-करान्तम् । सं शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्ष - पादान्तम् । हं जीवात्मने नमः नाभ्यादि वाम-पादान्तम् । ळं परमात्मने नमः हृदादि कुक्षौ । क्षं ज्ञानात्मने नमः हृदादि-मुखे । अं नमः ललाटे । आं नमः मुखे-वृत्ते । इं नमः दक्ष नेत्रे । ईं नमः वाम नेत्रे । उं नमः दक्ष कर्णे । ऊं नमः वाम कर्णे । ऋं नमः दक्ष नासायाम् । ॠं नमः वाम नासायाम् । ऌं नमः दक्ष गण्डे । ॡं नमः वाम गण्डे । एं नमः ऊर्ध्व ओष्ठे ।

ऐं नमः अधो ओष्ठे । ओं नमः ऊर्ध्व दन्त-पंक्तौ । औं नमः अधो दन्त-पंक्तौ । अं नमः शिरसि । अः नमः मुखे । कं नमः दक्ष बाहु-मूले । खं नमः दक्ष कूर्परे । गं नमः दक्ष मणि - बन्धे । घं नमः दक्ष कर - तले । ङं नमः दक्ष कराग्रे । चं नमः वाम बाहु - मूले । छं नमः वाम कूर्परे । जं नमः वाम मणि - बन्धे । झं नमः वाम कर - तले । ञं नमः वाम कराग्रे । टं नमः दक्षोरु-मूले । ठं नमः दक्ष जानुनि ।

संहार-मातृका-न्यास

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य बहिर्मातृका-न्यासे संहार-मातृका-न्यास-मन्त्रस्य रुद्र ऋषिः, गायत्री छन्दः, संहार - मातृका-सरस्वती देवता, मं इत्यारभ्य कं इति अन्तं हलानि बीजानि, अः आरभ्य अं इति अन्तं स्वराः शक्तय, क्षं इति आरभ्य यं इति पर्यन्तं व्यञ्जनानि कीलकं, श्री-बाला-त्रिपुरा-पूजाङ्गत्वेन देव-भावाप्तये संहार-मातृका-न्यासे विनियोगः ।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

रुद्र-ऋषये नमः शिरसि । गायत्री-छन्दसे नमः मुखे । संहार-मातृका-सरस्वती-देवतायै नमः हृदि ।

मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं जं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं वीजाय नमः गुह्ये । अः अं औं ओं ऐं एं लृं लृं ऋृं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं शक्तये नमः पादयोः । क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं कीलकाय नमः नाभौ । श्रीबाला-त्रिपुरा-पूजाङ्गत्वेन देव-भावाप्तये संहार-मातृका-न्यासे विनियोगाय नमः अञ्जली ।

प्राणायाम

'अं''अः' इन स्वरों से पूरक । 'कं''भं' इन व्यञ्जनों से कुम्भक और 'यं''क्षं' इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करे । यह क्रिया तीन बार करे ।

षडङ्ग-न्यास

अः क्षं ळं हं सं षं तं वं लं रं यं अं अस्त्राय फट् । औं मं भं बं फं पं ओं नेत्र-त्रयाय वौषट् । ऐं नं धं दं थं तं एं कवचाय हुं । ऊं णं ढं डं ठं टं उं शिखायै वषट् । ईं ञं जं झं छं चं इं शिरसे स्वाहा । आं ङं घं गं खं कं अं हृदयाय नमः ।

कर-न्यास

अः क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं अं कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् । औं मं भं बं फं पं ओं नेत्र-त्रयाय वौषट् । ऐं नं धं दं थं तं एं अनामिकाभ्यां हुं । ऊं णं ढं

डं ठं टं उं मध्यमाभ्यां वषट् । ईं ञं झं जं छं चं इं तर्जनीभ्यां स्वाहा । आं ङं घं गं खं कं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ध्यान

धूम्राङ्गीं मुक्तकेशीमसि-मलिन-मुखीं घोर-रूपां त्रिनेत्रां ।
व्यस्तैर्हस्तैर्दधानां व्यजन-कर-धृतां दीप्तमग्निं वहाहां ।।
हाहाकाराट्ट-हासामभय-वर-करां ज्वालयन्तीं दिशाश्च ।
भक्तेभ्यः प्रेम-बद्धां दिशतु प्रति-दिनं भारतीं तां नमामि ।।

न्यास

क्षं ज्ञानात्मने नमः ललाटे । ळं परमात्मने नमः मुख-वृत्ते । हं जीवात्मने नमः दक्ष-नेत्रे । सं शुक्रात्मने नमः वाम नेत्रे । षं मज्जात्मने नमः दक्ष कर्णे । शं अस्थ्यात्मने नमः वाम कर्णे । वं मेदात्मने नमः दक्ष नासायाम् । लं मांसात्मने नमः वाम नासायाम् । रं असृगात्मने नमः दक्ष गण्डे । यं त्वगात्मने नमः वाम गण्डे । मं नमः ऊर्ध्व ओष्ठे । भं नमः अधो ओष्ठे । बं नमः ऊर्ध्व दन्त-पंक्तौ । फं नमः अधो दन्त-पंक्तौ । पं नमः शिरसि । नं नमः मुखे । धं नमः दक्ष बाहु-मूले । दं नमः दक्ष कूर्परे । थं नमः दक्ष मणि-बन्धे ।

तं नमः दक्ष कर-तले । णं नमः दक्ष कराग्रे । डं नमः वाम-बाहु-मूले । ढं नमः वाम कूर्परे । ठं नमः वाम मणि-बन्धे । टं नमः वाम कर - तले । जं नमः वाम कराग्रे । झं नमः वामोरु मूले । जं नमः वाम जानुनि । छं नमः दक्ष गुल्फे । चं नमः दक्ष पाद-तले । ङं नमः दक्ष पादाग्रे । घं नमः वामोरु मूले । गं नमः वाम जानुनि । खं नमः वाम गुल्फे । कं नमः वाम पाद-तले । अः नमः वाम पादाग्रे । अं नमः दक्ष पार्श्वे । औं नमः वाम पार्श्वे । ओं नमः पृष्ठे । ऐं नमः नाभौ । एं नमः जठरे । लृं नमः हृदये । लॄं नमः दक्षांशे । ऋृं नमः ककुदि । ऋं नमः वामांशे । ऊं नमः हृदयादि दक्ष करान्तम् । उं नमः हृदयादि वाम करान्तम् । ईं नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् । इं नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम् । आं नमः हृदयादि कुक्षौ । अं नमः हृदयादि मुखे ।

श्रीबाला-मातृका-न्यास

विनियोग

ॐ अस्य श्रीबाला-त्रिपुरा-मातृका-न्यास-मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीबाला - त्रिपुरा

देवता, ऐं बीजं, सौ शक्तिः, क्लीं कीलकं देव-भावाप्तये श्रीबाला - त्रिपुरा - पूजाङ्गत्वेन श्रीबाला-त्रिपुरा-मातृका-न्यासे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास

दक्षिणा-मूर्ति-ऋषये नमः शिरसि । पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे । श्रीबाला-त्रिपुरा-देवतायै नमः हृदि । ऐं-बीजाय नमः गुह्ये । सौः शक्तये नमः पादयोः । क्लीं-कीलकाय नमः नाभौ । देव-भावाप्तये श्रीबाला-त्रिपुरा-पूजाङ्गत्वेन श्रीबाला-त्रिपुरा-मातृका-न्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

प्राणायाम

मूल-मन्त्र का एक बार जप करते हुए पूरक, मूल-मन्त्र के चार बार जप से कुम्भक और मूल-मन्त्र के दो बार जप से रेचक—इस प्रकार अनुलोम - विलोम - क्रम से तीन बार प्राणायाम करे ।

कर-न्यास

ऐं सर्वज्ञता-शक्त्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः । क्लीं नित्य-तृप्तता-शक्त्यै तर्जनीभ्यां स्वाहा । सौः अनादि-बोधिता-शक्त्यै मध्यमाभ्यां वषट् । ऐं स्वतन्त्रता-शक्त्यै अनामिकाभ्यां हुं । क्लीं नित्यमलुप्तता - शक्त्यै नेत्र - त्रयाय वौषट् । सौः अनन्ता-शक्त्यै कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

षडङ्ग-न्यास

ऐं सर्वज्ञता-शक्त्यै श्रीबाला-त्रिपुरायै हृदयाय नमः। क्लीं नित्य - तृप्तता - शक्त्यै श्रीबाला-त्रिपुरायै शिरसे स्वाहा। सौः अनादि-बोधिता-शक्त्यै श्रीबाला-त्रिपुरायै शिखायै वषट्। ऐं स्वतन्त्रता-शक्त्यै श्रीबाला-त्रिपुरायै कवचाय हुं। क्लीं नित्यमलुप्तता - शक्त्यै श्रीबाला-त्रिपुरायै नेत्र - त्रयाय वौषट्। सौः अनन्ता - शक्त्यै श्रीबाला-त्रिपुरायै अस्त्राय फट्।

ध्यान

अकारादि - क्षकारान्त - वर्णावयव - रूपिणीम्,
सुधा-स्रवन्तीं ज्ञानाप्त्यै ब्रह्म-रन्ध्रे विचिन्तये।
भजे नित्यं बालां कुटिल-शशि-भालां त्रि-नयनाम्,
गले मालां हालां कनक-चषकेनापि दधतीम्।
विपक्षालां कोलां प्रणत-जन-पालां कमलगाम्,
लसद्-ग्रीवा-नालां गति-विशालां रवि-निभाम्॥

न्यास

सृष्टि - मातृका - न्यास में निर्दिष्ट अङ्गों में उन्हीं मुद्राओं के साथ बाला-त्रिपुरा-मातृकाओं का मूल-मन्त्र के साथ न्यास करे। प्रत्येक मातृका-वर्ण के पूर्व अङ्क ३ के स्थान पर 'ऐं क्लीं सौः' का तथा पश्चात् अङ्क ४ के स्थान पर 'सौः क्लीं ऐं नमः' का न्यास करे। यथा—

ऐं क्लीं सौः अं सौः क्लीं ऐं नमः ललाटे—मध्यमा + अनामिका, ऐं क्लीं सौः आं सौः क्लीं ऐं नमः मुख-वृत्ते—तर्जनी + मध्यमा + अनामिका।

३ इं ४ दक्ष-नेत्रे । ३ ईं ४ वाम-नेत्रे
३ उं ४ दक्ष-कर्णे । ३ ऊं ४ वाम-कर्णे
३ ऋं ४ दक्ष-नासायां । ३ ॠं ४ वाम-नासायां
३ ऌं ४ दक्ष-गण्डे । ३ ॡं ४ वाम-गण्डे
३ एं ४ ऊर्ध्व-ओष्ठे । ३ ऐं ४ अधो-ओष्ठे
३ ओं ४ ऊर्ध्व-दन्त-पंक्तौ । ३ औं ४ अधो-दन्त-पंक्तौ
३ अं ४ शिरसि । ३ अः ४ मुखे
३ कं ४ दक्ष-बाहु-मूले । ३ खं ४ दक्ष-कूर्परे
३ गं ४ दक्ष-मणि-बन्धे । ३ घं ४ दक्ष-कर-तले
३ ङं ४ दक्ष-कराग्रे । ३ चं ४ वाम-बाहु-मूले
३ छं ४ वाम-कूर्परे । ३ जं ४ वाम-मणि-बन्धे
३ झं ४ वाम-कर-तले । ३ ञं ४ वाम-कराग्रे
३ टं ४ दक्षोरु-तले । ३ ठं ४ दक्ष-जानुनि
३ डं ४ दक्ष-गुल्फे । ३ ढं ४ दक्ष-पाद-तले
३ णं ४ दक्ष-पादाग्रे । ३ तं ४ वामोरु-मूले
३ थं ४ वाम-जानुनि । ३ दं ४ वाम-गुल्फे
३ धं ४ वाम-पाद-तले । ३ नं ४ वाम-पादाग्रे
३ पं ४ दक्ष-पार्श्वे । ३ फं ४ वाम-पार्श्वे

३ बं ४ पृष्ठे । ३ भं ४ नाभौ

३ मं ४ जठरे ।

३ यं सौः क्लीं ऐं त्वगात्मने नमः हृदि ।

३ रं सौः क्लीं ऐं असृगात्मने नमः दक्षांशे ।

३ लं सौः क्लीं ऐं मांसात्मने नमः ककुदि ।

३ वं सौः क्लीं ऐं मेदात्मने नमः वामांशे ।

३ शं सौः क्लीं ऐं अस्थ्यात्मने ,, हृदादि-दक्ष-करान्तं ।

३ षं सौः क्लीं ऐं मज्जात्मने ,, हृदादि-वाम-करान्तं ।

३ सं सौः क्लीं ऐं शुक्रात्मने ,, नाभ्यादि-दक्ष-पादान्तं ।

३ हं सौः क्लीं ऐं जीवात्मने ,, नाभ्यादि वाम ,, ।

३ लं ४ हृदादि कुक्षौ ।

३ क्षं ४ हृदादि मुखे ।

देवी-कला-मातृका न्यास

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य देवी-कला-मातृका-न्यास-मन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदेवी-कला-मातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं, श्रीबाला-त्रिपुरा-पूजाङ्गत्वेन देव-भावाप्तये देवी-कला-मातृका-न्यासे विनियोगः । ॥

॥ ये पाँच न्यास आवश्यक हैं । कोई-कोई केवल मातृका-न्यास ही करते हैं और बीज-न्यास तथा कला-न्यास समयाभाव

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

प्रजा-पतये नमः शिरसि । गायत्री - छन्दसे नमः मुखे । श्रीदेवी-कला-मातृका - सरस्वती - देवतायै नमः हृदि । हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये । स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः । श्रीबाला - त्रिपुरा - पूजाङ्गत्वेन देव-भावाप्तये देवी-कला-मातृका-न्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

॥ प्राणायाम ॥

'अं···आं'—इन स्वरों से पूरक, 'कं···मं'—इन व्यञ्जनों से कुम्भक और 'यं···क्षं'—इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करे ।

॥ कर-न्यास ॥

ॐ अं ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ इं ॐ ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ उं ॐ ऊं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ एं ॐ ऐं अनामिकाभ्यां हुं । ॐ ओं ॐ औं कनिष्ठाभ्यां वौषट् । ॐ अं ॐ अः कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

॥ षडङ्ग-न्यास ॥

ॐ अं ॐ आं हृदयाय नमः । ॐ-इं ॐ ईं शिरसे स्वाहा । ॐ उं ॐ ऊं शिखायै वषट् । ॐ एं ॐ ऐं कवचाय हुं । ॐ ओं ॐ औं नेत्र-त्रयाय वौषट् । ॐ अं ॐ अः अस्त्राय फट् ।

के कारण नहीं करते । कोई - कोई इन पाँच के अतिरिक्त षोढा-न्यास आदि अन्य न्यास भी करते हैं ।

॥ ध्यान ॥

शङ्ख-चक्राब्ज-परशु-कपालेनाक्ष-मालिकाः ।
पुस्तकासव-कुम्भौ च त्रिशूलं दधतीं करैः ॥
सित-पीत-सित-श्वेत-रक्त - वर्णैस्त्रिलोचनैः ।
पञ्चास्यैः संयुतां चन्द्र-सकान्तिं शारदां भजे ॥

॥ न्यास ॥

सविन्दु मातृकाओं के बाद निम्न कलाओं का 'नमः' शब्द सहित सृष्टि - मातृका - न्यास में निर्दिष्ट स्थानों में और उन्हीं मुद्राओं द्वारा यह न्यास करे। यथा—

अं निवृत्यै नमः ललाटे, प्रतिष्ठायै, विद्यायै, शान्त्यै, इन्धिकायै, दीपिकायै, रेचिकायै, मोचिकायै, सूक्ष्मायै, सूक्ष्मातीतायै, अमृतायै, ज्ञानायै, व्योम-रूपायै, आप्यायिन्यै, व्यापिन्यै, अनन्त-रूपायै । सृष्टयै, वृद्धयै, स्मृत्यै, मेधायै, कान्त्यै, लक्ष्म्यै, धृत्यै, स्थिरायै, स्थित्यै, सिद्धयै । जरायै, पालिन्यै, शान्त्यै, ईश्वर्यै, रत्यै, कामिकायै, वरदायै, ह्लादिन्यै, प्रीत्यै, दीर्घायै । तीक्ष्णायै, रौद्रायै, भयायै, निद्रायै, तन्द्रिकायै, क्षुधायै, क्रोधिन्यै, क्रियायै, उत्कार्यै, मृत्यवे । पीतायै, श्वेतायै, अरुणायै, असितायै, सितायै । ※

※ 'निवृत्ति' से 'अनन्ता' तक अनन्त की १६, 'सृष्टि' से 'सिद्धि' तक ब्रह्मा की १०, 'जरा' से 'दीर्घा' तक विष्णु की १०, 'तीक्ष्णा' से 'मृत्यु' तक रुद्र की १०, 'पीता' से 'सिता' तक ईश्वर की ५—इस प्रकार कुल ५१ कलाएँ हैं।

श्रीबाला-त्रिपुरा-मूल-मन्त्र-न्यास

॥ विनियोग ॥

अस्य श्रीबाला-त्रिपुरा-मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः । पंक्तिश्छन्दः । श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता । ऐं बीजं । सौः शक्तिः । क्लीं कीलकं । श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि ।

ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे ।

ॐ श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै नमो हृदि ।

ॐ ऐं बीजाय नमो गुह्ये ।

ॐ सौः शक्तये नमः पादयोः ।

ॐ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ।

ॐ श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

॥ कर-न्यास ॥		॥ अङ्ग-न्यास ॥
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ क्लीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ सौः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ क्लीं	कनिष्ठाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ॐ सौः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

॥ व्यापक-न्यास ॥

ऐं नमः नाभ्याद् पादान्तम् । क्लीं नमः हृदयात् नाभ्यान्तम् । सौः नमः मूर्द्धात् हृदयान्तम् ।

॥ सम्मोहन-न्यास ॥

ऐं नमः दक्ष-करे । क्लीं नमः वाम-करे । सौः नमः भ्रू-मध्ये (उभयोः करयोः) ।

॥ मूर्ध्न्यादि-न्यास ॥

ऐं नमः मूर्ध्नि, क्लीं नमः अधरे, सौः नमः हृदये ।

॥ विद्या-न्यास ॥

ऐं नमः दक्ष मणि-बन्धे । क्लीं नमः दक्ष कर-तले । सौः नमः दक्ष-कराग्रे । ऐं नमः वाम-मणि-बन्धे । क्लीं नमः वाम-कर-तले । सौः नमः वाम-कराग्रे । ऐं नमः दक्ष-कुक्षे । क्लीं नमः दक्ष-कूर्परे । सौः नमः दक्ष-पार्णौ । ऐं नमः वाम-कुक्षे । क्लीं नमः वाम-कूर्परे । सौः नमः वाम-पार्णौ । ऐं नमः दक्ष-जङ्घा-कक्षे । क्लीं नमः दक्ष-जानुनि । सौः नमः दक्ष-पादाग्रे । ऐं नमः वाम-जङ्घा-कक्षे । क्लीं नमः वाम-जानुनि । सौः नमः वाम-पादाग्रे । ऐं नमः लिङ्गे । क्लीं नमः हृदये । सौः नमः नादान्ते ।

॥ नव-मन्त्र-न्यास ॥

ऐं नमः ब्रह्म-रन्ध्रे । क्लीं नमः गुह्ये । सौः नमः वक्षसि । ऐं नमः दक्ष-नेत्रे । क्लीं नमः वाम-नेत्रे । सौः

नमः सीमन्ते । ऐं नमः दक्ष - कर्णे । क्लीं नमः वाम-कर्णे । सौः नमः मुखे । ऐं नमः चिबुके । क्लीं नमः दक्षांशे । सौः नमः वामांशे । ऐं नमः दक्ष-जानौ । क्लीं नमः वाम-जानौ । सौः नमः गुह्ये ।

॥ नव-योनि-न्यास ॥

ऐं नमः वाम-कर्णे । क्लीं नमः दक्ष-कर्णे । सौः नमः चिबुके । ऐं नमः वाम-गण्डे । क्लीं नमः दक्ष-गण्डे । सौः नमः मुखे । ऐं नमः वाम-नेत्रे । क्लीं नमः दक्ष-नेत्रे । सौः नमः नासाग्रे । ऐं नमः वामांशे । क्लीं नमः दक्षांशे । सौः नमः जठरे । ऐं नमः वाम-कूर्परे । क्लीं नमः दक्ष - कूर्परे । सौः नमः नाभौ । ऐं नमः वाम-जानौ । क्लीं नमः दक्ष-जानौ । सौः नमः लिङ्गे । ऐं नमः वाम-पादे । क्लीं नमः दक्ष-पादे । सौः नमः गुह्ये । ऐं नमः वाम-पार्श्वे । क्लीं नमः दक्ष - पार्श्वे । सौः नमः हृदि । ऐं नमः वाम-स्तने । क्लीं नमः दक्ष-स्तने । सौः नमः कण्ठे ।

॥ रत्यादि-न्यास ॥

ऐं रत्यै नमः गुह्ये, सौः प्रीत्यै नमः हृदि, क्लीं मनोभवायै नमः भ्रू-मध्ये ।

॥ अमृतेश्यादि-न्यास ॥

ऐं अमृतेश्यै नमः गुह्ये, सौः योगीश्यै नमः हृदि, क्लीं विश्व-योन्यै नमः भ्रू-मध्ये ।

॥ मनोभवादि-न्यास ॥

('काम-न्यास'—'मनोभवादि' का दूसरा रूप)

ह्रीं मनोभवाय नमः शिरसि। क्लीं मकर-ध्वजाय नमः मुखे। ऐं कन्दर्पाय नमः हृदि। ब्लूं मन्मथाय नमः गुह्ये। स्त्रीं काम-देवाय नमः पादयोः।[1]

॥ वाणेशी-न्यास ॥

('पञ्च-वाण न्यास'—'वाणेशी' का दूसरा रूप)

द्रां द्राविण्यै नमः शिरसि। द्रीं[2] क्षोभिण्यै नमः पादयोः। क्लीं आकर्षिण्यै[3] नमः मुखे। ब्लूं वशी-करिण्यै[4] नमः गुह्ये। सः सम्मोहिन्यै नमः हृदि।

॥ कर-न्यास ॥

आं सौः क्लीं ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ईं सौः क्लीं ऐं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ऊं सौः क्लीं ऐं मध्यमाभ्यां वषट्। ऐं सौः क्लीं ऐं अनामिकाभ्यां हुं। औं सौः क्लीं ऐं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अः सौः क्लीं ऐं कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

॥ षडङ्ग-न्यास ॥

आं सौः क्लीं ऐं हृदयाय नमः। ईं सौः क्लीं ऐं शिरसे स्वाहा। ऊं सौः क्लीं ऐं शिखायै वषट्। ऐं सौः

---

१ पाठ-भेद—कामाय नमः। क्लीं मन्मथाय नमः। ऐं कन्दर्पाय नमः। ब्लूं मकर-ध्वजाय नमः। स्त्रीं मीन-केतवे नमः।

२ ह्रीं, ३ क्लीं वशीकरिण्यै, ४ ब्लूं आकर्षिण्यै।

क्लीं ऐं कवचाय हुं। औं सौः क्लीं ऐं नेत्र - त्रयाय वौषट्। अः सौः क्लीं ऐं अस्त्राय फट्।

॥ पीठ-न्यास ॥

आत्म-रक्षा के लिए हृदय पर हाथ रख निम्न मन्त्र पढ़े—

ऐं क्लीं सौः श्रीबाला-त्रिपुरे ! आत्मानं रक्ष रक्ष।

॥ न्यास ॥

मं मण्डूकाधाराय नमः मूलाधारे। कां कालाग्नि-रुद्राय नमः उपरि स्वाधिष्ठान-पर्यन्तं। मूं मूल-प्रकृत्यै नमः उपरि नाभि - पर्यन्तं। आं आधार - शक्त्यै नमः स्वाधिष्ठानात् हृदय-पर्यन्तं। हृदये—कूं कूर्माय नमः, अं अनन्ताय नमः, वं वराहाय नमः, पृं पृथिव्यै नमः, अं अमृतार्णवाय नमः, अं···क्षं नव-रत्न-मय-मणि-द्वीपाय नमः, नं नन्दनोद्यानाय नमः, स्वं स्वर्ण-प्राकाराय नमः, चिं चिन्तामणि-मण्डपाय नमः, रं रत्न-वेदिकायै नमः, रं रत्न-सिंहासनाय नमः।

इसके बाद अपनी देह को देवता के रत्न-सिंहासन के रूप में समझ कर निम्न प्रकार से पीठ-न्यास करे। पहले रत्न-सिंहासन के पाँवों में न्यास करे। यथा—

धं धर्माय नमः दक्षांशे। ज्ञां ज्ञानाय नमः वामांशे। वं वैराग्याय नमः दक्ष-जानौ। ऐं ऐश्वर्याय नमः वाम-जानौ।

यह रक्षा की क्रिया अपने कुल-क्रम के अनुसार करनी चाहिए।

इसके बाद सिंहासन के अङ्गों में न्यास करे। यथा—

अं अधर्माय नमः मुखे। अं अज्ञानाय नमः वाम-पार्श्वे। अं अवैराग्याय नमः नाभौ। अं अनैश्वर्याय नमः दक्ष-पार्श्वे।

इसके बाद हृदय में न्यास करे। यथा—

ह्रीं आदि-मायायै नमः। विं विद्यायै नमः। आं आनन्द-कन्द-पद्माय नमः। सं संविन्नालाय नमः। प्र प्रकृति-मय-पत्रेभ्यो नमः।

विं विकार - मय - केसरेभ्यो नमः। पं पञ्चाशद्-बीजाढ्य-सर्व-तत्त्व-रूपाय कर्णिकाय नमः।

तब कर्णिका में न्यास करे। यथा—

अं अर्क-मण्डलाय नमः। उं सोम-मण्डलाय नमः। रं वह्नि-मण्डलाय नमः। सं सत्त्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः।

तदनन्तर बीच में न्यास करे। यथा—

आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

इसके बाद केसरों में पूर्व से लेकर आठों दिशाओं में न्यास करे। यथा—

इं इच्छायै नमः। ज्ञां ज्ञानायै नमः। क्रिं क्रियायै नमः। कां कामिन्यै नमः। कां कामदायै नमः। रं रत्यै नमः। रं रति-प्रियायै नमः।

फिर बीच में न्यास करे। यथा—

मं मनोन्मन्यै नमः। हसौः सदा-शिव-महा-प्रेत-पद्मासनाय नमः।

इस प्रकार अपनी देह की देवता के पीठ-रूप में भावना करे।

अन्तर्याग

मानसिक पूजन

इस प्रकार पीठ-पूजा कर चुकने पर हृदय-कमल के पूर्वोक्त रत्न-सिंहासन पर देवता का ध्यान करे—

अरुण-किरण-जालैरञ्जिता सावकाशा,
विधृत-जप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था,
निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याण-शीला ॥१

रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसाम्,
समुद्यदादित्य-निभां त्रिनेत्राम्।
विद्याक्ष-मालाऽभय-दान-हस्ताम्
ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ॥२

अनेक साधक समयाभाव के कारण संक्षिप्त पञ्चोपचार की ही मानसिक पूजा करते हैं, जो निम्न प्रकार है। पहले हृत्-कमल में इष्ट-देवता के पूजा-यन्त्र का ध्यान करे। यन्त्र के विन्दु में इष्ट - देवता का पूर्व - वत् ध्यान करे। तब 'मानस पूजा' करे। यथा—

'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।'

यह पढ़कर अधो-मुख कनिष्ठांगुष्ठ-योग से गन्ध-मुद्रा दिखाए ।

'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।'

यह पढ़कर अधो-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ-योग से पुष्प-मुद्रा दिखाए ।

'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।'

यह पढ़कर ऊर्ध्व-मुख-तर्जन्यंगुष्ठ-योग से धूप-मुद्रा दिखाए ।

'रं वन्ह्यात्मकं दीपं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।'

यह पढ़कर ऊर्ध्व-मुख मध्यमांगुष्ठ-योग से दीप-मुद्रा दिखाए ।

'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।'

यह पढ़कर अनामांगुष्ठ-योग से नैवेद्य-मुद्रा दिखाए ।

'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।'

यह पढ़कर सर्वांगुलियों से ताम्बूल-मुद्रा दिखाए ।

विस्तार से जो मानसिक पूजन कर सकते हों, उनके लिए विस्तृत विधि निम्न प्रकार है—

मूलं* बाला - त्रिपुरा - देवि ! इदं हृदय-पद्मासन-मास्यताम् ।

---

* साधक जहाँ 'मूलं' शब्द आया है, वहाँ अपने 'मूल-मन्त्र' का उपयोग करे ।

यह मन्त्र पढ़कर पद्म-मुद्रा से हृदय-रूपी आसन पर देवता को बैठाए। तदनन्तर पाद्यादि उपचारों से उसका निम्न प्रकार से मानसिक पूजन करे—

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै सहस्रार-च्युतामृतं पाद्यं नमः।

यह पढ़कर चरणों पर सहस्र-दल-कमल से झरनेवाले अमृत-रूपी जल का पाद्य समर्पित करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः मन-रूपमर्घ्यं स्वाहा।

यह पढ़कर मस्तक पर मन-रूपी अर्घ्य प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः सहस्रार-च्युतामृत-रूपमाचमनं स्वधा।

यह पढ़कर सहस्र-दल-कमल से झरनेवाले अमृत से मुख में आचमन प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः सहस्रार-च्युतामृतैः सर्वाङ्गे स्नानं समर्पयामि।

यह पढ़कर सहस्र-दल-कमल से झरनेवाले अमृत - रूपी जल से स्नान कराए।

मूलं कामेश्वर - सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै आकाश-तत्त्व-रूप-वसनं समर्पयामि नमः।

यह पढ़कर आकाश-रूपी वसन और आभूषण प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः पृथ्वी-तत्त्व-रूपं गन्धं समर्पयामि।

यह पढ़कर पृथ्वी-तत्त्व-रूपी गन्ध प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः चित्त-रूपं पुष्पं समर्पयामि वौषट्।

यह पढ़कर चित्त-रूपी पुष्प प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः प्राण-रूपं धूपं समर्पयामि।

यह पढ़कर प्राण-रूपी धूप प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः तेजस्तत्त्व-रूपं दीपं समर्पयामि।

यह पढ़कर कर तेज-रूपी दीपक प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः सुधाम्बुधि-रूपं नैवेद्यं समर्पयामि।

यह पढ़कर सुधा-सागर-रूपी नैवेद्य प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः अनाहत-शब्द-रूप-घण्टा-वादनं समर्पयामि।

यह पढ़कर अनाहत-शब्द-रूपी घण्टा-वादन कर देवता को प्रसन्न करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः वायु-तत्त्व-रूपं चामरं समर्पयामि।

यह पढ़कर वायु-तत्त्व-रूपी चामर से देवता को प्रसन्न करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्य-रूपं नृत्यं समर्पयामि।

यह पढ़कर इन्द्रियों की गति-विधि और मन की चञ्चलता-रूपी नृत्य देवता को प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै नमः अमाय - अनहङ्कार - अराग-अमद-अमोह-अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य-अलोभ-अहिंसा-इन्द्रिय - निग्रह - दया-क्षमा-ज्ञान-रूपाणि पञ्चदश-पुष्पाणि समर्पयामि वौषट्।

यह पढ़कर अमाय आदि पन्द्रह पुष्पों की पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

मूलं श्रीकामेश्वर - सहितायै श्रीबाला - त्रिपुरायै काम-क्रोध-रूपं बलिं समर्पयामि नमः।

यह पढ़कर काम - क्रोध - रूपी पशु की बलि देवता को प्रदान करे।

इस प्रकार पूजन कर साधक अपने इष्ट-मन्त्र का जप करे। वह कुण्डलिनी को सूत्र मानकर स-विन्दु पञ्चाशत्-मातृका-वर्णों की माला ग्रथित करे, जिसमें लोम-विलोम-क्रम से अपने 'मूल-मन्त्र' का जप करे। इस वर्ण-माला में 'क्षं' वर्ण को सुमेरु माने। इसके बाद देवता को निम्न मन्त्र से जप का समर्पण करे—

सर्वान्तरात्म-निलये ! स्वान्तर्ज्योतिः-स्वरूपिणि !
गृहाणान्तर्जपं मातः ! बाले देवि ! नमोऽस्तु ते ॥

इसके बाद मानसिक हवन करे।

२—मानसिक हवन

यह हवन मूलाधार-चक्र के कमल में करे। यहाँ चित्-रूपी अग्नि में हवन करे। आधार - चक्र के कमल को अन्तरात्मा,

परमात्मा और ज्ञानात्मा--इन तीनों से व्याप्त समझना चाहिए। फिर कुण्ड की आनन्द-रूप मेखला का और त्रिवलय - युक्त नाद-विन्दु-रूप योनि - युक्त चित् - कुण्ड का ध्यान करे। इस कुण्ड में दाहिनी ओर पिङ्गला, बाँई ओर इडा और मध्य में सुषुम्णा का ध्यान करके धर्म-अधर्म-रूपी हवि से निम्न मन्त्रों से हवन करे—

'मूलं' नाभौ चैतन्य-रूपेऽग्नौ, हविषा मनसा स्रुवा।
ज्ञान - प्रदीपिते नित्यमक्ष - वृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥

श्रीबाला-देव्यै स्वाहा।

उक्त मन्त्र पढ़कर प्रथम आहुति प्रदान करे।

'मूलं' धर्माधर्म-हविर्दीप्ते, आत्माग्नौ मनसा स्रुवा।
सुषुम्ना-वर्त्मना नित्यं, ब्रह्म-वृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥

श्रीबाला-देव्यै स्वाहा।

उक्त मन्त्र पढ़कर द्वितीय आहुति प्रदान करे।

मूलं प्रकाशाकाश-हस्ताभ्यां, अवलम्ब्यात्मना स्रुवा।
ज्ञान-प्रदीपिते नित्यं, अक्ष - वृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥

श्रीबाला-देव्यै स्वाहा।

उक्त मन्त्र से तृतीय, निम्न मन्त्र से चौथी आहुति प्रदान करे—

मूलं अन्तर्निरन्तर-निरिन्धन-मेधमाने।
मोहान्धकार-परिपन्थिनि सम्विदग्नौ ॥
कस्मिंश्चिदद्भुत-मरीचि-विकास-भूमौ।
विश्वं जुहोमि वसुधा-दिशि-वावसानम् ॥

श्रीबाला-देव्यै स्वाहा।

इदं तु पात्र-भरितमहन्ता-परमामृतम् ।
पूर्णाहुति-मये वह्नौ, पूर्ण-होमं जुहोम्यहम् ॥
श्रीबाला-देव्यै स्वाहा ।

उक्त मन्त्र पढ़कर पूर्णाहुति दे ।

बाह्य-पूजा

अन्तर्याग कर चुकने पर बाह्य-पूजा का प्रारम्भ करे । यदि 'सामान्यार्घ्य' पहले न स्थापित किया गया हो, तो उस पूजा के लिए यहाँ पहले 'सामान्यार्घ्य-पात्र' की स्थापना करे । यथा—

सामान्यार्घ्य-पात्र का स्थापन

अपने दक्ष भाग में त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनावे और इस मन्त्र से मण्डल का पूजन करे—**'ॐ श्रीबाला-त्रिपुराया: सामान्यार्घ्य-पात्राधार-मण्डलाय नमः ।'**

फिर मण्डल पर आधार रखकर निम्न मन्त्र से उस आधार का पूजन करे—**'ॐ मं वह्नि-मण्डलाय धर्म - प्रद - दश-कलात्मने नमः ।'**

फट्—इस मन्त्र से शङ्खादि पात्र को धोकर उस आधार पर स्थापित करे ।

श्रीबाला-त्रिपुरा के क्रम में 'सामान्यार्घ्य-पात्र-स्थापन' का मण्डल बनाने से पहले 'कलश' के स्थापन का 'मण्डल' बना लिया जाता है । अतएव अपनी बाँईं ओर कलश के स्थापन का 'मण्डल' पहले बना ले, तब 'सामान्यार्घ्य - पात्र' का स्थापन आरम्भ करे ।

ॐ अं अर्क - मण्डलाय अर्थ-प्रद-द्वादश-कलात्मने श्रीबाला-त्रिपुराया: सामान्यार्घ्य-पात्राय नम: ।

उक्त मन्त्र से उस 'अर्घ्य-पात्र' का पूजन करे और 'ॐ' या 'नमः' मन्त्र से उस पात्र को शुद्ध जल से पूर्ण करे ।

ॐ उं सोम - मण्डलाय काम-प्रद-षोडश-कलात्मने श्रीबाला-त्रिपुराया: सामान्यार्घ्य-पात्र-द्रव्याय नम: ।

उक्त मन्त्र से उस पात्र के जल का पूजन करे । इसके बाद—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति !
नर्मदे सिन्धु कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

उक्त मन्त्र से अंकुश मुद्रा द्वारा 'सूर्य-मण्डल' से तीर्थों का उस पात्र के जल में आवाहन करे ।

फिर मूल - मन्त्र से गन्धादि उस जल में छोड़े और वरुण-बीज 'वं' का आठ बार जप कर उस पात्र को अभिमन्त्रित कर 'धेनु-मुद्रा' दिखाकर उसे अमृत-मय करे । फिर उसे 'मत्स्य-मुद्रा' से आच्छादित करे, तब 'योनि-मुद्रा' से उसे नमस्कार करे ।

कलश का स्थापन

'सामान्यार्घ्य-पात्र' के स्थापन के बाद पूजा-द्रव्यों का शोधन करे । प्रथम तत्त्व के शोधन के लिए 'कलश' का स्थापन करे । यथा—अपने वाम भाग में विन्दु - सहित त्रिकोण, उसके बाद षट्-कोण, वृत्त और चतुरस्र—ऐसा एक 'मण्डल' बनावे । फिर 'सामान्यार्घ्य' के जल से उसका प्रोक्षण कर इस मन्त्र से आधार-शक्तियों का पूजन करे—**'ॐ आधार-शक्तिभ्यो नम: ।'**

इसके बाद 'फट्' मन्त्र से आधार को धोकर 'नमः' मन्त्र पढ़कर आधार को उस मण्डल पर रक्खे । फिर आधार पर

अग्नि-मण्डल का पूजन करे—'रं वह्नि - मण्डलाय धर्म-प्रद-दश-कलात्मने नमः ।'

तदनन्तर कलश को 'फट्' मन्त्र से धोकर 'नमः' मन्त्र पढ़कर उसे आधार पर स्थापित करे। फिर निम्न मन्त्र से कलश पर 'सूर्य-मण्डल' का पूजन करे—'अं अर्क - मण्डलाय अर्थ-प्रद-द्वादश-कलाय नमः ।'

तब 'कलश' को कारण से पूर्ण करे। पहले कारण का नीचे लिखी प्रक्रिया से शोधन कर ले। यथा—

अपने सामने एक पात्र रखकर उसे कारण से पूर्ण कर उसका संस्कार करे। यथा—

(१) वौषट्—यह मन्त्र पढ़कर उसे देखे।

(२) फट्—यह मन्त्र पढ़कर फट्-कार से उसकी रक्षा करे।

(३) हुं—यह पढ़ उसका अवगुण्ठन-मुद्रा से अवगुण्ठन करे।

(४) वषट्—यह मन्त्र पढ़कर उसे शुद्ध करे।

(५) स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर उसका पूजन करे।

अब उसके दश दोषों का निवारण करे। 'नमः' मन्त्र पढ़कर उस पर हाथ रखकर नीचे के मन्त्र पढ़े—

(१) ॐ ह्रीं ऐं श्रीं गीं हसखफ्रें पथिक-देवताभ्यो हुं फट् स्वाहा।

(२) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें अस्फालिनि ग्राम-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा।

(३) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें स्पर्श-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा ।

(४) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें दृष्टि-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा ।

(५) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें क्रोध-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा ।

(६) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें सृष्टि-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा ।

(७) ॐ ह्रीं श्रीं ओं क्रों क्लीं हसखफ्रें घट-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा ।

(८) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें तपन-वेध-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा ।

(९) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें निर्दोष-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा ।

(१०) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें पशु-पाश-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा ।

इस प्रकार दश दोषों को दूर कर निम्न मन्त्र तीन बार जपे—

ॐ छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रैं छ्रौं छ्रः छुरिके, अलि-शोभने ! विकारान् अस्य द्रव्यस्य हर हर स्वाहा ।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से उसके शापों का मोचन करे—

ॐ एकमेव परं-ब्रह्म, स्थूल-सूक्ष्म-मयं ध्रुवम् ।
कचोद्भवां ब्रह्म-हत्यां, तेन ते नाशयाम्यहम् ।।
ॐ वेदानां प्रणवो वीजं, ब्रह्मानन्द-मयं यदि ।
तेन सत्येन हे देवि ! ब्रह्म-शापं व्यपोहतु ।।

ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्म-शाप-विमोचितायै सुधा-देव्यै नमः ।

उक्त मन्त्र का १० बार जप करे ।

ॐ सूर्य - मण्डल - सम्भूते, वरुणालय-सम्भवे !
अमा-वीज-मये देवि ! शुक्र-शापाद् विमुच्यताम् ।।

ॐ शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्र-शाप-विमोचितायै सुधा-देव्यै नमः ।

उक्त मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुरे! कृष्ण-शापं विमोचय विमोचय अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा—

उक्त मन्त्र का १२ बार जप करे ।

ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः रुद्र-शाप-विमोचितायै सुधा-देव्यै नमः ।

उक्त मन्त्र का १२ बार जप करे ।

ॐ पवमानः परानन्दः, पवमानः परो रसः ।
पवमानं परं ज्ञानं, तेन ते पावयाम्यहम् ।।

उक्त मन्त्र का तीन बार जप करे ।

ॐ कृष्ण-शापाद् विमुक्ता त्वं, विमुक्ता ब्रह्म-शापतः ।
विमुक्ता रुद्र - शापाच्च, पवित्रा भव साम्प्रतम् ॥

उक्त मन्त्र का तीन बार जप करे । इसके बाद 'तिरस्करिणी' का ध्यान करे । यथा—

नीलं हयं समधिरुह्य पुरः प्रयान्ती,
नीलांशुकाभरण-माल्य-विलेपनाढ्या ।
निद्रा - पटेन भुवनानि तिरोदधाना,
खड्गायुधा भगवती परिपातु भक्तान् ॥

उक्त प्रकार ध्यान कर नीचे के मन्त्र तीन बार जपे –

ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि ! सर्व-पशु-जन-मनश्चक्षुस्तिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं परम-प्रकाशिनि परमाकाश-शून्य-निवासिनि सूर्य-चन्द्राग्नि-भक्षिणि ! पातं विश विश स्वाहा ।

इस प्रकार 'कारण' का संस्कार कर 'विलोम-मातृका' (क्षं ळं हं सं षं शं, वं लं रं यं, मं भं बं फं पं, नं धं दं थं तं, णं ढं डं ठं टं, ञं झं जं छं चं, ङं घं गं खं कं, अः अं औं ओं ऐं एं ऌं ऍं ॠं ॠं ऊं उं ईं इं आं अं) और उसके अन्त में मूल-मन्त्र पढ़ता हुआ उस 'कारण' से कलश को पूर्ण करे । फिर लाल वस्त्र और लाल फूलों की माला से कलश को विभूषित कर उस पर चन्दन का लेप कर उसे देवी-स्वरूप समझे ।

इसके बाद कलश के 'द्रव्य' में निम्न-लिखित मन्त्र पढ़कर 'चन्द्र-मण्डल' का पूजन करे—

उं सोम-मण्डलाय षोडश-कलात्मने नमः ।

तदनन्तर कलश के 'द्रव्य' के मध्य में 'अ-क-थादि-त्रिकोण यन्त्र' की कल्पना-द्वारा रचना करे। फिर निम्न मन्त्र से उस त्रिकोण का पूजन करे—**ह्सौः मण्डलाय नमः।**

इसके बाद उस यन्त्र में आनन्द-भैरव और आनन्द-भैरवी का ध्यान करे। पहले आनन्द-भैरव का 'ध्यान' करे। यथा—

ॐ सूर्य-कोटि-प्रतीकाशं, चन्द्र-कोटि-सुशीतलम्।
अष्टादश - भुजं देवं, पञ्च - वक्त्रं त्रि-लोचनम्॥
अमृतार्णव - मध्यस्थं, ब्रह्म - पद्मोपरि - स्थितम्।
वृषारूढं नील - कण्ठं, सर्वाभरण - भूषितम्॥
कपाल-खट्वाङ्ग-धरं, घण्टा - डमरु - वादिनम्।
पाशांकुश - धरं देवं, गदा - मुशल-धारिणम्॥
खड्ग - खेटक - पट्टीशं, मुद्गरं शूल-दण्ड-धृक्।
विचित्र - खेटकं मुण्डं, वरदाभय - धारिणम्॥
लोहितं देव - देवेशं, भावयेत् साधकोत्तमः।

उक्त प्रकार आनन्द - भैरव का ध्यान कर निम्न मन्त्र से आनन्द-भैरव का पूजन करे—

ह्सक्ष-मलवरयूं आनन्द-भैरवाय वषट्।

तदनन्तर आनन्द-भैरवी का 'ध्यान' करे। यथा—

भावयेच्च सुधां देवीं, चन्द्र-कोटि-युत-प्रभाम्।
हिम-कुन्देन्दु-धवलां, पञ्च-वक्त्रां त्रि - लोचनाम्॥
अष्टादश - भुजैर्युक्तां, सर्वानन्द - करोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं, देव - देवस्य सम्मुखीम्॥

इस प्रकार आनन्द - भैरवी का ध्यान कर निम्न मन्त्र से आनन्द-भैरवी का पूजन करे—

'सहक्ष-मलवरयीं आनन्द-भैरव्यै वौषट् ।'

इसके बाद उन दोनों का संयोगावस्था का ध्यान करे और यह समझे कि उनके दिव्य स्राव से वह द्रव्य अमृत-मय हो गया है। और तब—

ऐं प्लूं स्त्रौं जूं सः अमृते'अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि ! अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ।

उक्त मन्त्र का आठ बार जप करे। इसके बाद निम्न 'वेद-मन्त्र' का तीन बार जप करे—

ॐ हंसः शुचिषत् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदीषद-तिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वर सद्-ऋत सद्-व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ।

ऐं ह्रीं श्रीं आनन्देश्वरि ! विद्महे सुधा-देव्यै धीमहि तन्नोऽर्द्ध-नारीश्वरि ! प्रचोदयात् ।

उक्त 'आनन्द - गायत्री' का दस बार जप कर निम्न 'वेद-मन्त्र' का पाठ करे—

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु - क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीर्मधु-नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिव ँ रजः । मधु - द्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः । मधु मधु मधु ॥

उपर्युक्त मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर 'मूल-मन्त्र' से उसे आठ बार अभिमन्त्रित करे। इसके बाद—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति !
नर्मदे सिन्धु कावेरि ! द्रव्येऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

इस मन्त्र से 'अंकुश-मुद्रा' द्वारा 'सूर्य - मण्डल' से तीर्थों का 'कारण' में आकर्षण करे। फिर 'वं' बीज-मन्त्र पढ़ 'धेनु-मुद्रा' दिखा 'कारण' को अमृत - मय करे। 'मत्स्य - मुद्रा' से उसे आच्छादित करे। तब 'हुं' पढ़ 'अवगुण्ठन - मुद्रा' से अवगुण्ठित करे। मूल-मन्त्र पढ़कर 'योनि-मुद्रा' से नमस्कार कर 'वं' वरुण-बीज और मूल-मन्त्र का आठ-आठ बार जप करे।

विशेषार्घ्य-पात्र-स्थापन

इसके बाद 'विशेषार्घ्य-पात्र' का स्थापन करे। इसे अपने और यन्त्र - राज के सिंहासन के बीच में स्थापित करे। पहले उस स्थान पर त्रिकोण - षट्-कोण - वृत्त - चतुरस्र का 'मण्डल' बनावे।

ॐ श्रीबालायाः विशेषार्घ्य-मण्डलाय नमः ।

उक्त मन्त्र से उस मण्डल का पूजन करे। मण्डल पर आधार स्थापित कर निम्न मन्त्र से आधार का पूजन करे—

'ॐ रं वह्नि - मण्डलाय धर्म-प्रद-द्वादश-कलात्मने श्रीबालायाः विशेषार्घ्याधाराय नमः ।'

'फट्'—इस मन्त्र से अर्घ्य-पात्र को धोकर उसे आधार पर स्थापित करे और—

ॐ अं अर्क - मण्डलाय अर्थ-प्रद-द्वादश-कलात्मने श्रीबालायाः विशेषार्घ्य-पात्राय नमः ।

उक्त मन्त्र से उस 'अर्घ्य - पात्र' का पूजन करे और 'मूल-मन्त्र' पढ़कर कलश के अमृत से पूर्ण करे। फिर—

ॐ उं सोम-मण्डलाय काम-प्रद-षोडश-कलात्मने श्रीबालायाः विशेषार्घ्य-पात्राय नमः।

उक्त मन्त्र से पात्र के द्रव्य का पूजन करे।

इसके बाद उस पात्र में पूर्वादि चारों दिशाओं और मध्य में पञ्च-रत्नों का नीचे के मन्त्रों से पूजन करे—

ॐ ग्लूं गोमेद-रत्नाय नमः पूर्वे। ॐ स्लूं सुवर्ण-रत्नाय नमः दक्षिणे। ॐ प्लूं पद्मराग - रत्नाय नमः पश्चिमे। ॐ न्लूं नील-रत्नाय नमः उत्तरे। ॐ म्लूं माणिक्य-रत्नाय नमः मध्ये।

इसके बाद पात्र के द्रव्य के मध्य में 'अ-क-थादि त्रिकोण' का और उसके ऊपर षट्-कोण का चिन्तन करे। तदुपरान्त त्रिकोण के तीनों कोनों में निम्न मन्त्रों से पूजन करे—

'ऐं नमः, क्लीं नमः, सौः नमः।'

इसके बाद षट्-कोणों में षडङ्गों का पूजन करे। यथा—

ऐं हृदय-शक्त्यै नमः। क्लीं शिरः-शक्त्यै नमः। सौः शिखा-शक्त्यै नमः। ऐं कवच-शक्त्यै नमः। क्लीं नेत्र-शक्त्यै नमः। सौः अस्त्र-शक्त्यै नमः।

इसके बाद निम्न मन्त्र पढ़कर ब्रह्म - रन्ध्र के 'सहस्र-दल-कमल' के चन्द्र-मण्डल से बहती हुई अमृत - धारा को नासा के मार्ग से पात्र के द्रव्य में गिरावे—

ॐ स्लूं ग्लूं प्लूं न्लूं म्लूं अमृतेऽमृतोद्भवेऽमृत-वर्षिणि ! अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ।

फिर 'मूल-मन्त्र' और 'वं' बीज का आठ-आठ बार जप कर पात्र के द्रव्य को अभिमन्त्रित करे और 'धेनु - मुद्रा' दिखाकर उसे अमृत-मय करे ।

मांसादि-द्रव्य-शोधन

विशेषार्घ्य की स्थापना के बाद द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम आदि तत्त्वों का शोधन करे ।

द्वितीय तत्त्व अर्थात् मांस का शोधन—अपने आगे त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनावे । उस पर 'मांस-पात्र' रखकर उसका संस्कार करे ।

दाहने हाथ पर बाँयाँ हाथ रख 'यं' वायु-बीज पढ़कर उसके दोषों का 'शोषण' करे । फिर बाँएँ हाथ पर दाहना हाथ रखकर 'रं' अग्नि-बीज पढ़कर उसके दोषों का 'दहन' करे । फिर धेनु-मुद्रा दिखाकर 'वं' वरुण-बीज पढ़कर उसे 'अमृत - मय' करे । फिर मूल - मन्त्र पढ़कर सामान्यार्घ्य का जल उस पर छिड़के । फिर 'मांस-पात्र' के ऊपर हाथ रखकर पढ़े —

छागलाज्येण मत्स्यान्त्रि-कृत-रूपाय विष्णवे ।
बल्यर्थं देव-देव्योश्च, पवित्री भव साम्प्रतम् ॥
ॐ प्रतद्-विष्णुस्तुवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गरिष्ठाः ।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधि-क्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥

तृतीय तत्त्व अर्थात् मत्स्य का शोधन—पूर्वोक्त प्रकार से 'मत्स्य' का पात्र मण्डल पर रखकर 'शोषणादि' संस्कार 'प्रोक्षण' तक कर उस पर हाथ रखकर यह मन्त्र पढ़े—

कृतावतारो हरिणा, कलिना पीड़ितं जगत् ।
बलिना निगृहीतं तु, कौलिकानां हिताय च ॥
भैरवी - परितोषार्थं, स्वयं मीनोऽभवद् हरिः ।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि - वर्द्धनम् ॥
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।

चतुर्थ तत्त्व अर्थात् मुद्रा का शोधन—पूर्व-वत् 'मुद्रा-पात्र' को स्थापित कर 'शोषणादि' संस्कार कर उस पर हाथ रखकर यह पढ़े—

श्रीदेव्यर्चन-काले तु, यानि यानीह साम्प्रतम् ।
वस्तूनि सौरभेयानि, पवित्राणीह सिद्धये ॥

ॐ तद्-विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति सूरयः ।
दिवीव चक्षुराततम् ॥

तद्-विप्रासो विपण्यवो, जागृवांसः समिन्धते ।
विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥

पञ्चम तत्त्व का शोधन—पञ्चम तत्त्व का पूर्व - वत् 'शोषणादि' संस्कार करके भावना द्वारा उस पर हाथ रख यह मन्त्र पढ़े—

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु, त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
आसिञ्चतु प्रजा - पतिर्धाता गर्भं दधातु वै ॥
गर्भं देहि सिनीवालि ! गर्भं देहि सरस्वति !
गर्भं धेह्यश्विनौ देवावाधत्तां पुष्कर - स्रजा ॥

श्रीपात्र-स्थापन

अब 'श्री-पात्र' की स्थापना करे। 'विशेषार्घ्य' के पास और अपने आसन तथा 'यन्त्र-राज' के बीच में 'श्री-पात्र' की स्थापना करे। पहले उस स्थान पर 'ह्रीं' - युक्त त्रिकोण-वृत्त-षट्-कोण-चतुरस्र का मण्डल बनावे। 'सामान्यार्घ्य' के जल से उसका 'प्रोक्षण' करे। फिर 'चतुरस्र' के चारों कोनों में आग्नेयादि-क्रम से नीचे के मन्त्रों से पीठों का पूजन करे—

पूं पूर्ण-गिरि-पीठाय नमः आग्नेये। उं उड्डीयान-पीठाय नमः नैर्ऋत्ये। जां जालन्धर - पीठाय नमः वायव्ये। कां काम-रूप-पीठाय नमः ईशाने।

पीठों का पूजन कर पूर्वादि-क्रम से 'षट् - कोण' के कोनों में नीचे के मन्त्रों से षडङ्गों का पूजन करे—

ॐ एं हृच्छक्त्यै नमः। ॐ क्लीं शिर - शक्त्यै नमः। ॐ सौः शिखा - शक्त्यै नमः। ॐ एं कवच-शक्त्यै नमः। ॐ क्लीं नेत्र - शक्त्यै नमः। ॐ सौः अस्त्र-शक्त्यै नमः।

इसके बाद 'नमः' मन्त्र से त्रिपद पर सामान्यार्घ्य का जल छिड़के और—**यं धूम्रार्चिषे नमः, रं ऊष्मायै नमः, लं ज्वलन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं रूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, लं हव्य-वाहिन्यै नमः, क्षं कव्य-वाहिन्यै नमः**—इन मन्त्रों से त्रिपद के चारों ओर पूर्वादि क्रम से अग्नि की दश कलाओं का पूजन कर उसके मध्य में—**रं वह्नि - मण्डलाय**

धर्म-प्रद-दश-कलात्मने नमः—इस मन्त्र से अग्नि - मण्डल की पूजा करे।

इसके बाद नारिकेल आदि के पात्र को 'फट्' मन्त्र से धोकर त्रिपद पर रक्खे और—**कं भं तपिन्यै नमः, खं बं तापिन्यै नमः, गं फं धूम्रायै नमः, घं पं मरीच्यै नमः, ङं नं ज्वालिन्यै नमः, चं धं रुच्यै नमः, छं दं सुषुम्नायै नमः, जं थं भोगदायै नमः, झं तं विश्वायै नमः, ञं णं बोधिकायै नमः, टं ढं धारिण्यै नमः, ठं डं क्षमायै नमः**—इन मन्त्रों से पात्र के चारों ओर पूर्वादि-कम से सूर्य की कलाओं का पूजन कर उसके मध्य में—**अं अर्क-मण्डलाय अर्थ-प्रद-द्वादश - कलात्मने नमः**—इस मन्त्र से सूर्य - मण्डल का पूजन करे।

इसके बाद पात्र में 'त्रिकोण - वृत्त - षट्-कोण' का एक मण्डल बनावे। 'त्रिकोण' के तीनों कोनों में मूल-मन्त्र के तीन भागों में से प्रत्येक भाग द्वारा एक-एक कोने में पूजन करे। फिर षडङ्ग के मन्त्रों में से प्रत्येक अङ्ग - मन्त्र द्वारा 'षट् - कोण' के प्रत्येक कोने में क्रमशः पूजन करे। फिर मूल-मन्त्र-युक्त 'विलोम-मातृका' का उच्चारण करता हुआ कलश के अमृत से त्रिकोण का भाग पूर्ण करे। फिर सामान्यार्घ्य के जल से उसका एक भाग पूर्ण करे। फिर पात्र में

गन्धाक्षत छोड़कर—**अं अमृतायै नमः, आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः, ईं तुष्ट्यै नमः, उं पुष्ट्यै नमः, ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ॠं शशिन्यै नमः ऌं चन्द्रिकायै नमः, ॡं ज्योत्स्नायै नमः, एं कान्त्यै नमः, ऐं श्रियै नमः, ओं प्रीत्यै नमः, औं अङ्गदायै नमः, अं पूर्णायै नमः, अः पूर्णामृतायै नमः**—इन मन्त्रों से पात्र के द्रव्य के चारों ओर चन्द्रमा की कलाओं का पूर्वादि क्रम से पूजन कर उसके बीच में—**उं सोम-मण्डलाय काम-प्रद-षोडश-कलात्मने नमः**—इस मन्त्र से सोम मण्डल का पूजन करे।

इसके बाद श्रीपात्र के द्रव्य में अकथ-त्रिकोण की कल्पना कर उसके तीनों कोनों में मूल-मन्त्र के तीन खण्डों से पूजन करे और '**ॐ गङ्गे च यमुने०**' इस मन्त्र को पढ़ अंकुश-मुद्रा से उस द्रव्य में तीर्थों का आवाहन करे और उसमें शुद्धि आदि तत्वों के खण्ड निक्षेप करे। इसके बाद—**हसक्षमलवरयूं आनन्द-भैरवाय वषट्**—इस मन्त्र से उस त्रिकोण के मध्य में आनन्द-भैरव का पूजन करे। फिर—**सहक्षमलवयरीं आनन्द-भैरव्यै वौषट्**—इस मन्त्र से आनन्द-भैरवी का वहीं पूजन करे। तदनन्तर—

ग्लूं गगन-रत्नेभ्यो नमः पूर्वे। ग्लूं स्वर्ग-रत्नेभ्यो

नमः दक्षिणे । म्लूं मर्त्य-रत्नेभ्यो नमः पश्चिमे । प्लूं पाताल-रत्नेभ्यो नमः उत्तरे ।

इन मन्त्रों से द्रव्य के चारों ओर भिन्न-भिन्न दिशाओं में चार रत्नों का पूजन कर उसके मध्य में **न्लूं नाग-रत्नेभ्यो नमः**—इस मन्त्र से पाँचवें रत्न का पूजन करे । इसके बाद—

ॐ ब्रह्माण्ड-खण्ड-सम्भूतमशेष-रस-सम्भृतम् ।
आपूरित-महापात्रं पीयूष-रसमावह ॥
ॐ अखण्डैक-रसानन्दाकरे पर-सुधात्मनि ।
स्वच्छन्द-स्फुरणामत्र निधेह्यकुल-रूपिणि ॥
ॐ अकुलस्थामृताकारे सिद्धि-ज्ञान-करे परे ॥
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्न-रूपिणि ॥
ॐ तद्रूपेणैकरस्थञ्च कृत्वार्घ्यं तत्स्वरूपिणि ।
भूत्वा परामृताकारं मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥

इन मन्त्रों से पात्र को अभिमन्त्रित करे । तदनन्तर—

(१) ऐं प्लूं क्ष्रौं सौं जूं सः अमृतेऽमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ।

(२) वद वद वाग्वादिनि ऐं ।

(३) क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु ।

(४) सौः मोक्षं कुरु ।

(५) **ह्सौः**—इन पाँच मन्त्रों से उस पात्र को अभिमन्त्रित करे।

इस प्रकार पात्र को अभिमन्त्रित कर अकथ त्रिकोण के मध्य में **'हंसः'** मन्त्र लिखा हुआ ध्यान करे। फिर इसी स्थान में इष्ट-देवता का—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीबाला-त्रिपुरे इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व मम सर्वोपचार-सहितां पूजां गृहाण गृहाण**—आवाहनादि पाँचों मुद्रायें दिखाता हुआ इस मन्त्र को पढ़ आवाहनादि करे।

इसके बाद ताल-त्रय से दिग्बन्धन कर देवता का अवगुण्ठन मुद्रा से अवगुण्ठन करे। फिर योनि-मुद्रा से नमस्कार कर धेनु-मुद्रा से अमृत-मय कर—**ह्सौर्नमः**—मन्त्र से पूजन करे। तदनन्तर—

ऐं हृच्छक्त्यै नमः आग्नेये। क्लीं शिर-शक्त्यै नमः ईशाने। सौः शिखा-शक्त्यै नमः वायव्ये। ऐं कवच-शक्त्यै नमः ईशाने। क्लीं नेत्र-शक्त्यै नमः मध्ये। सौः अस्त्र-शक्त्यै नमः सर्व-दिशासु।

इन षडङ्ग-मन्त्रों से आग्नेयादि कोणों में पूजन कर देवता का सकलीकरण करे। तब पात्र को शङ्ख-मुद्रा दिखावे। फिर तीन पुष्पाञ्जलियाँ प्रदान कर उसको देवता-स्वरूप समझे।

गुरु आदि पात्रों का स्थापन *

इसके बाद कलश और श्रीपात्र के बीच में गुरु-पात्र, भोग (आत्म) पात्र, शक्ति-पात्र, योगिनी-पात्र वीर-पात्र बलि-पात्र और आचमनीय आदि पात्रों को स्थापना करे।

गुरु-पात्र—कलश के समीप त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनावे। सामान्यार्घ्य के जल से—ॐ आधार-

---

* सम्प्रदाय तथा देश के भेद के अनुसार गुरु आदि पात्रों की स्थापना में बहुत अधिक मत-भेद है। अतएव इनकी स्थापना अपने गुरुदेव की परिपाटी के अनुसार साधक करते हैं। प्रायः नौ पात्र मुख्य माने गए हैं, जो इस प्रकार हैं—१ गुरु-पात्र, २ भोग-पात्र, ३ शक्ति-पात्र, ४ योगिनी-पात्र, ५ वीर-पात्र, ६ बलि-पात्र, ७ पाद्य-पात्र, ८ आचमनीय-पात्र, ९ श्री-पात्र।

यदि नौ पात्रों की स्थापना न कर सके तो सात पात्रों की स्थापना करे। यथा—१ श्री-पात्र, २ गुरु-पात्र, ३ भोग-पात्र, ४ शक्ति-पात्र, ५ योगिनी-पात्र, ६ बलि-पात्र, ७ वीर-पात्र।

यदि सात पात्र न स्थापित कर सके, तो पाँच पात्र स्थापित करे। यथा—१ श्री-पात्र, २ गुरु-पात्र, ३ भोग-पात्र, ४ योगिनी-पात्र, ५ बलि-पात्र।

शक्त्यै नमः—मन्त्र पढ़ उस पर जल छिड़के। 'नमः' मन्त्र से आधार को धोकर उस मण्डल पर रखे। 'फट्' मन्त्र से पात्र को धोकर उसे आधार पर रखे। 'नमः' मन्त्र से कलश के अमृत से उसे पूर्ण करे। 'ॐ' से उस पात्र में फूल छोड़े और मूल-मन्त्र पढ़ कर गन्ध या चन्दन छोड़े। अंकुश-मुद्रा से उसमें तीर्थों का आवाहन करता हुआ यह पढ़े—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि द्रव्येऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

फिर धेनुमुद्रा दिखा 'वं' बीज जप उसे अमृत-मय करे। फिर उसमें शुद्धि आदि छोड़े और 'हंसः शिवः सोहं' यह मन्त्र दश बार जप कर उस पात्र को अभिमन्त्रित करे।

यदि पाँच पात्र न स्थापित कर सके, तो तीन पात्र स्थापित करे। यथा—१ श्री-पात्र २ गुरु-पात्र ३ भोग-पात्र।

नौ पात्रों की स्थापना सर्वोत्तम, सात पात्रों की स्थापना उत्तम और पाँच पात्रों की स्थापना मध्यम तथा तीन पात्रों की स्थापना निकृष्ट कही गई है। अधिक-से-अधिक अठारह पात्रों की स्थापना का विधान किया गया है।

इसी प्रक्रिया से शेष अन्य पात्रों की स्थापना करे। * उनको अभिमन्त्रित करने के मन्त्र ये हैं—

भोग-पात्र—**ॐ ह्रीं हंसः सोहं स्वाहा**, शक्ति-पात्र—**ॐ ह्रीं**, योगिनी-पात्र—**ऐं ह्रीं श्रीं**, वीर-पात्र—**ॐ ह्रौं**, बलि-पात्र—**कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं**।

इन मन्त्रों का आठ-आठ बार जप कर पात्रों को अभिमन्त्रित करे।

इसके बाद श्रीपात्र के वाम-भाग में पाद्य-पात्र, अर्घ्य-पात्र, आचमनीय-पात्र और मधुपर्क-पात्र की स्थापना करे। पहले अर्घ्य-पात्र की स्थापना करे। यथा—त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनावे। '**ॐ आधार-शक्त्यै नमः**' से उसका पूजन करे। '**नमः**' या मूल-मन्त्र से उसे सामान्यार्घ्य के जल से पूर्ण करे। '**वषट्**' से उसमें फूल छोड़े। '**नमः**' से गन्ध छोड़े। फिर रक्त-चन्दन, सिद्धार्थ (सरसों), जपा पुष्प, दूर्वा छोड़कर मूल-मन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित कर योनि-मुद्रा से नमस्कार करे।

---

* गुरु-पात्रादि की स्थापना की जो विधि यहाँ दी गई है, वह अति संक्षिप्त है। उत्तम यह है कि सबकी स्थापना प्रत्येक पात्र का नामोल्लेख करते हुए सामान्यार्घ्य-पात्र की भाँति करे।

इसके बाद पाद्य-पात्र की स्थापना अर्घ्य-पात्र की भाँति करे। उसमें श्यामाक (सांवा), दूर्वा, कुश, अक्षत, विष्णु-क्रान्ता, दुग्ध, पुष्प, गन्ध आदि छोड़कर धेनु-मुद्रा दिखा कर अमृत-मय करे और योनि-मुद्रा से नमस्कार करे।

तदनन्तर मधुपर्क-पात्र की स्थापना अर्घ्य-पात्र की भाँति करे। उसमें मधु, दधि, घृत, छोड़कर योनि-मुद्रा से नमस्कार करे।

इसके बाद इसी प्रकार आचमनीय-पात्र की स्थापना करे। अर्घ्यादि पात्रों की स्थापना यदि इस प्रकार न करे, तो पाद्य और आचमनीय इन दो पात्रों की स्थापना गुरु आदि पात्रों के साथ अवश्य करे। यदि इन पात्रों की स्थापना करे, तो गुरु-पात्र आदि के साथ आचमनोय-पात्र की स्थापना की जरूरत नहीं है।

गुरु आदि का पूजन-तर्पण

इस प्रकार यथा-शक्ति पात्रों का स्थापन कर पूजन और तर्पण करे। पहले अपने आपको गन्धादि से विभूषित करे। फिर शिरस्थ सहस्रार में गुरु-त्रय का ध्यान करे। यथा—

कराभ्यां चिन्मुद्रा स-मधु-नृ-कपालं च दधतीम्।

द्रुत-स्वर्ण-प्रख्यामरुण-कुसमालेप-वसनाम् ।।
कृपा-पूर्णापाङ्गीमरुण-नयनां बर्बर-कचाम् ।
उपेतां तिलौघैर्यजत-गुरु-पंक्ति कृत-मतिः ।।

इस प्रकार गुरु-पंक्ति का ध्यान कर उसका पूजन और तर्पण करे । यथा—

दाहने हाथ की मुद्रा से गन्ध-पुष्प लेकर पूजन करे और बायें हाथ की मुद्रा से शुद्धि-खण्ड लेकर गुरु-पात्र के अमृत से तर्पण करे । प्रत्येक का तीन-तीन बार पूजन और तर्पण करे । मन्त्र ये हैं—

(१) श्रीगुरु श्रीगुरु-पत्न्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(२) श्रीपरम-गुरु श्रीपरम-गुरु-पत्न्यम्बा श्रीपादु० ।

(३) श्रीपरापर-गुरु श्रीपरापर-गुरु-पत्न्यम्बा श्रीपादु० ।

(४) श्रीपरमेष्ठि-गुरु श्रीपरमेष्ठि-गुरु-पत्न्यम्बा श्रीपादु० ।

यह पूजन-तर्पण अपने शिर पर करे । इसके बाद आनन्द-भैरव और आनन्द-भैरवी का पूर्व-वत् अपने हृदय में ध्यान करे और उन्हीं मुद्राओं से उनका पूजन और तर्पण हृदय-कमल में करे । उनका तर्पण श्री-पात्र के अमृत से करे । मन्त्र ये हैं—

(१) ह्सक्षमलवरयूं श्रीआनन्द-भैरव श्रीपादु० ।

(२) सहक्षमलवरयीं श्रीआनन्द-भैरवी श्रीपादु० ।

प्रत्येक का तीन-तीन बार पूजन-तर्पण करे । इसके बाद हृदय-कमल में त्रिकोण का ध्यान करे । उसके आगे के कोने में '**ॐ रति श्रीपादु०**' से रति का पूजन-तर्पण करे उत्तर के कोने में '**ॐ प्रीति श्रीपादु०**' से प्रीति का और दक्षिण के कोने में '**ॐ मनोभवा श्रीपादु०**' से मनोभवा का पूजन-तर्पण करे । फिर त्रिकोण के मध्य में इष्ट-देवता श्री बाला त्रिपुरा का ध्यान करे । तदनन्तर—

मूलं सायुधां सवाहनां सावरणां श्रीकामेश्वर-शिव-सहितां श्रीबाला त्रिपुरा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—इस मन्त्र से पूजन-तर्पण तीन बार श्रीपात्र के अमृत से करे ।

तत्व-शुद्धि

इसके बाद तत्त्व-शुद्धि करे । यथा—भोग-पात्र का अमृत हाथों में लेकर हाथों को शुद्ध करे । दाहिने हाथ की हथेली में वृत्त के सहित त्रिकोण बनावे । उसके बाद तीनों कोनों में और बीच में शुद्धि के छोटे-छोटे खण्ड रक्खे । फिर—

ह्रीं श्रीं शिव-शक्ति-सदाशिवेश्वर विद्या-कलात्मने

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ऐं (मूलं) आत्म-तत्वेन स्थूल-देहं शोधयामि स्वाहा—यह पढ़कर आगे के कोने का शुद्धि-खण्ड बायें हाथ की मध्यमा-अनामा-अंगुष्ठ से उठाकर खा जाय।

पुनः—ह्रीं श्रीं माया-कला-विद्या-राग-काल-नियति-पुरुषात्मने कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं क्लीं (मूलं) विद्या-तत्त्वेन सूक्ष्म-देहं शोधयामि स्वाहा—यह पढ़ वाम कोण का शुद्धि-खण्ड पूर्ववत् उठाकर खा जाय।

फिर—ह्रीं श्रीं प्रकृत्यहङ्कार-बुद्धि-मनः-श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-वाक्पाणि-पाद-पायूपस्थ-शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धाकाश-वाय्वग्नि-सलिल-भूम्यात्मने यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं सौः (मूलं) शिव-तत्त्वेन पर-देहं शोधयामि स्वाहा—यह पढ़कर दक्ष कोण का शुद्धि-खण्ड पूर्ववत् उठाकर खा जाय।

फिर—ह्रीं श्रीं शिव-शक्ति-सदाशिवेश्वर-विद्या-कलात्मने माया-कला-विद्या-राग-काल-नियति-पुरुषात्मने प्रकृत्यहङ्कार-बुद्धि-मनः-श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थ-शब्द-स्पर्श-रूप--रस-गन्धाकाश-वाय्वग्नि-सलिल-भूम्यात्मने अं···क्षं ऐं क्लीं सौः (मूलं) सर्व-तत्वेन तत्त्व-त्रयान्वितं बीजं शोधयामि स्वाहा—यह पढ़कर बीच का शुद्धि-खण्ड खा जाय।

परा-विन्दु-ग्रहण

इसके बाद व्यापक न्यास करे और हाथ धोकर परा-विन्दु को स्वीकार करे। भोग-पात्र का कुछ अमृत अन्य पात्र में लेकर उसे बाएँ हाथ में ले और दूसरे हाथ से ढँक ले। तब मूलाधार-चक्र से कुण्डलनी को जिह्वा के मूल तक आई हुई ध्यान कर उसी में अपने को तन्मय कर यह मन्त्र पढ़े—

ॐ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि योऽहमस्मि अहमस्मि अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।

यह मन्त्र पढ़ तत्त्व-मुद्रा से उस पात्र से एक बूँद अमृत लेकर पान करे।

फिर यह मन्त्र पढ़े—**ॐ त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु मां। अवतु वक्तारम्।**

यह मन्त्र पढ़ पुनः उसी प्रकार एक बूँद पान कर जाय। फिर यह मन्त्र पढ़े—**ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः। छन्देभ्योऽध्यमृतात् सम्बभूव। यमेन्द्रो मेधया स्पृणोतु। अमृतस्य देव धारणो भूयासम्। शरीरं मे विचर्षणम्। जिह्वा मे मधुमत्तमा। कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम्। ब्रह्मणः कोषोऽसि मेधया पिहितः। श्रुतं मे**

गोपाय । आवहन्ती वितन्वाना ।

यह मन्त्र पढ़ पुनः उसी प्रकार एक विन्दु स्वीकार करे। इसके बाद हाथ धोकर श्रीपात्र का अमृत अपने ऊपर छिड़क इष्ट-देवता का पूजन करे। उसके लिये यन्त्र-राज की स्थापना करे। यदि इष्ट-देवता का यन्त्र न हो, तो ताम्र-पात्र पर उसे अष्ट-गन्ध से बना ले।

यन्त्र-राज की स्थापना

अपने सामने विशेषार्घ्य-पात्र के पृष्ठ-भाग में जो सिंहासन रखा है, उस पर यन्त्रराजका निम्न प्रकार से स्थापन करे। यदि सिंहासन न हो, तो पहले उस स्थान पर सामान्यार्घ्य से **ऐं ह्रीं नमः**—यह मन्त्र पढ़-कर जल छिड़के, इसके बाद उस स्थान पर त्रिपद या चौकी रक्खे। यदि सिंहासन हो, तो उस पर अष्ट-दल-मण्डल-खचित एक तश्तरी स्थापित करे। इस मण्डल में अष्ट-गन्ध-लिप्त अक्षतों से ज्ञान-मुद्रा द्वारा पीठ का पूजन करे।

पीठ-पूजा

पीठ-पूजा—अष्ट-दल-कमल के मध्य में पीठ की शक्तियों का पूजन करे। यथा—**मं मण्डूकाय नमः। कां कालाग्नि-रुद्राय नमः। मूं मूल-प्रकृत्यै नमः। आं**

आधार-शक्त्यै नमः । कूं कूर्माय नमः । अं अनन्ताय नमः । वं वराहाय नमः । पृं पृथिव्यै नमः । अं अमृतार्णवाय नमः । अं···क्षं नव-रत्न-मय-मणि-द्वीपाय नमः । नं नन्दनोद्यानाय नमः । स्वं स्वर्ण-प्राकाराय नमः । चिं चिन्तामणि-मण्डपाय नमः । रं रत्न-वेदिकायै नमः । रं रत्न-सिंहासनाय नमः ।

इसके बाद मण्डल के चारों कोनों में पूजा करे—

धं धर्माय नमः आग्नेये । ज्ञां ज्ञानाय नमः वायव्ये । वैं वैराग्याय नमः नैऋत्ये । ऐं ऐश्वर्याय नमः ईशाने ।

इसके बाद मण्डल की पूर्वादि चारों दिशाओं में—

अं अधर्माय नमः पूर्वे । अं अज्ञानाय नमः दक्षिणे । अं अवैराग्याय नमः पश्चिमे । अं अनैश्वर्याय नमः उत्तरे ।

इसके बाद पुनः मण्डल के बीच में—ह्रीं आदि-मायायै नमः । विं विद्यायै नमः । आं आनन्द-कन्द-पद्माय नमः । सं संविन्नालय नमः । प्रं प्रकृति-मय-पत्रेभ्यो नमः । विं विकार-मय-केसरेभ्यो नमः । र वह्नि-मण्डलाय नमः । अं सूर्य-मण्डलाय नमः । उं सोम-मण्डलाय नमः । सं सत्वाय नमः । रं रजसे नमः । तं तमसे नमः ।

इसके बाद आग्नेयादि चारों कोनों में—आं

आत्मने नमः आग्नेये । अं अन्तरात्मने नमः वायव्ये । पं परमात्मने नमः नैऋत्ये । ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ईशाने ।

इसके बाद पूर्वादि-क्रम से दिशा-विदिशाओं में—**इं इच्छायै नमः पूर्वे । ज्ञां ज्ञानायै नमः आग्नेये । क्रिं क्रियायै नमः दक्षिणे । कां कामिन्यै नमः वायव्ये । कां कामदायै नमः पश्चिमे । रं रत्यै नमः नैऋत्ये । रं रति-प्रियायै नमः उत्तरे । नं नन्दायै नमः ईशाने ।**

इसके बाद मध्य में—**मं मनोन्मन्यै नमः । ह्सौः सदाशिव-महाप्रेत-पद्मासनाय नमः ।**

इस प्रकार पीठ-शक्तियों का पूजन कर मण्डल के बीच में पुष्प रख उस पर चाँदी की तश्तरी में रक्त-चन्दन से बनाये हुये श्रीबाला-त्रिपुरा के नव-योन्यात्मक पूजा-यन्त्र को रक्खे ।

इष्ट-देवता का आवाहनादि

इसके बाद कच्छप-मुद्रा से गन्ध-लिप्त पुष्प लेकर उस हाथ को हृदय पर रक्खे और हृदय-कमल में कामेश्वर-शिव सहित श्रीबाला-त्रिपुरा का ध्यान करे और उन्हें सुषुम्ना-मार्ग से सहस्रार में ले जाय । वहाँ उन्हें प्रणाम करे और नासिका-मार्ग से उन्हें उसी हाथ के पुष्प में ले आवे और यह पढ़े—

महा-पद्म-वनान्तस्थे कारणानन्द-विग्रहे ।
सर्व-भूत-हिते मातरेह्येहि परमेश्वरि ॥
देवेशि भक्ति-सुलभे परिवार-समन्विते ।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव ॥

यह प्रार्थना कर उस फूल को यन्त्र पर रख दे और इष्ट-देवता का आवाहन आदि करे । यथा—

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीबाला-त्रिपुरा-देवि इहागच्छ इहागच्छ (आवाहनी मुद्रा दिखावे) ।

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीबाला-त्रिपुरा-देवि इह तिष्ठ इह तिष्ठ (स्थापिनी मुद्रा) ।

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीबाला-त्रिपुरा देवि इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि (सन्निधापिनी मुद्रा) ।

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीबाला-त्रिपुरा-देवि इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व (संनिरोधिनी मुद्रा) ।

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीबाला-त्रिपुरा-देवि सम्मुखीकृता भव (सम्मुखीकरणी मुद्रा) ।

अब देवता के हृदय आदि अङ्गों में षडङ्ग-मन्त्रों का न्यास कर उसका सकलीकरण करे । यथा—ऐं हृच्छक्त्यै नमः । क्लीं शिर-शक्त्यै नमः । सौः शिखा-शक्त्यै नमः । ऐं कवच-शक्त्यै नमः । क्लीं नेत्र-शक्त्यै

नमः । सौः अस्त्र-शक्त्यै नमः । मूलं श्रीबाला-त्रिपुरा-देवि सकलीकृता भव ।

अवगुण्ठन—मूलं श्री बाला-त्रिपुरा-देवि अव-गुण्ठिता भव । (अवगुण्ठनी-मुद्रा चारों ओर घुमाकर अवगुण्ठन करे) ।

संरक्षण—मूलं श्रीबाला-त्रिपुरा-देवि संरक्षिता भव । (यह पढ़ कोटिका मुद्रा से संरक्षित करे ।)

अमृतीकरण—मूलं ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय महा-क्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौं स्हौं अं आं···ळं क्षं श्रीबाला-त्रिपुरा-देवि अमृतीकृता भव । यह पढ़ धेनु-मुद्रा दिखा-कर अमृतीकरण करे ।)

परमीकरण—मूलं श्रीबाला-त्रिपुरा-देवि परमी-कृता भव । (यह पढ़ महा-मुद्रा दिखा यह ध्यान करे कि देवता के मस्तक पर सामान्याघ्यं-पात्र के जल का तीन बार वर्षण हुआ ।)

प्राण-प्रतिष्ठा—आवाहन से परमीकरण तक की क्रियायें करने के बाद लेलिहानो-मुद्रा से पूजा-यन्त्र में देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करे—ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों सोऽहं हंसः श्रीकामेश्वर-शिव-सहित-श्रीबाला-त्रिपुरायाः पञ्च-प्राणाः इह स्थिताः । ॐ आं

ह्रीं क्रों यं ····· सं हों सोऽहं हंसः श्रीकामेश्वर-शिव-सहित-श्रीबाला-त्रिपुरायाः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं ····· सं हों सोऽहं हंसः श्रीकामेश्वर-शिव सहित-श्रीबाला-त्रिपुरायाः सर्वेन्द्रियाणि, ॐ आं ह्रीं क्रों यं ····· सं हों सोऽहं हंस श्रीकामेश्वर-शिव-सहित-श्रीबाला-त्रिपुरायाः वाङ्-मनो-चक्षु-श्रोत्र-घ्राण-प्राण-पदानि इहैवागत्य सुखं चिर तिष्ठन्तु स्वाहा। (यह मन्त्र तीन बार पढ़ें)।

मुद्रा-प्रदर्शन—अब वर, अभय, पुस्तक, अक्ष-माला, ज्ञान, अंकुश, पाश, चाप, वाण, कपाल, कमल आदि मुद्रायें दिखावे।

इष्ट-देवता का षोडशोपचार-पूजन

इसके बाद आसनादि षोडश उपचारों से देवता का पूजन करे। पहले वह देवता का स्वागत करे। यथा—**हे श्रीबाला-त्रिपुरे मातः आगतं सु-स्वागतं**—यह कह दोनों हाथों को अँगुलियाँ फैला उन्हें अधोमुखकर स्वागत करे।

इसके बाद—**मूलं श्रीबाला-त्रिपुरा-देवि इदमासनं आस्यताम्**—यह वाक्य कहकर देवता के वाम भाग में पद्म-मुद्रा से आसन-रूप एक पुष्प प्रदान करे।

आवरण-भावना—इसके बाद [१] पूजा-यन्त्र के विन्दु के ऊपर वायव्य के कोने से ईशान के कोने तक दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ तथा गुरु-चतुष्टय की और त्रिकोण के तीनों कोनों में रति आदि की पंक्ति-रूप में कल्पना करे।

[२] यन्त्र के विन्दु के आग्नेयादि चारों कोनों तथा आगे और मध्य में षडङ्गों की भावना करे।

[३] तब मध्य त्रिकोण के बाहर मनोभव, मकर-ध्वज, कन्दर्प, मन्मथ और कामदेव—इन पाँच कामदेवों का ध्यान करे।

[४] पुनः कामदेवों के पास ही उनकी—द्राविणी, क्षोभिणी, आकर्षिणी, वशीकरिणी, सम्मोहिनी—शक्तियों की भावना करे।

[५] पुनः आठों योनियों में सुभगादि अष्ट-शक्तियों का ध्यान करे।

[६] पुनः अष्ट-दल कमल के अष्ट-केशरों में ब्राह्मी आदि अष्ट मातृकाओं का ध्यान करे।

[७] पुनः अष्ट-दल कमल के दलों में पूर्वादि-क्रम से असिताङ्ग आदि भैरवों की भावना करे।

[८] दलों के अग्र-भाग में काम-रूप आदि पीठों का ध्यान करे।

[९] इसके बाद भू-पुर की भीतरी रेखा में हेतुकादि भैरवों की भावना करे।

[१०] तदनन्तर भू-पुर की मध्य रेखा में इन्द्रादि दिग्पालों की और—

[११] भू-पुर की तीसरी रेखा में वज्रादि अस्त्रों की यथा-क्रम यथा-स्थान भावना करे।

[१२] अन्त में भू-पुर के बाहर बटुक आदि का ध्यान करे।

इस प्रकार आवरण-वृन्द को यथा-क्रम स्थापित कर पाद्यादि उपचारों से इष्ट-देवता का पूजन करे। यथा—

१ पाद्य—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि**—यह पढ़कर पाद्य-पात्र[*] का सब कुछ अनामा-अंगुष्ठ की मुद्रा से देवता के चरणों में पाद्य प्रदान करे।

२ अर्घ्य—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै इदं अर्घ्यं स्वाहा**—यह पढ़कर अर्घ्य-पात्र का सब कुछ सब अँगुलियों की मुद्रा से देवता के शिर में

---

[*]पाद्य-पात्र आदि यदि न स्थापित किए हों, तो सामान्यार्घ्य का जल एक पात्र में लेकर उसमें पाद्यादि के द्रव्य छोड़कर पाद्य आदि प्रदान करे।

अर्घ्य प्रदान करे।

३ आचमन—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः इदमाचमनं स्वधा**—यह पढ़कर आचमनीय पात्र का जल लेकर कनिष्ठा-रहित चार अँगुलियों को आचमन-मुद्रा से आचमन के लिए देवता के मुख में प्रदान करे।

४ मधुपर्क—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला त्रिपुरायै इदं मधुपर्कं स्वधा**—यह पढ़कर मधुपर्क-पात्र से मधुपर्क लेकर अधोमुखी अनामा और अंगुष्ठ की मुद्रा से देवता के मुख में प्रदान करे।

पुनः आचमन—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै इदं शुद्धमाचनीयं समर्पयामि**—यह पढ़कर आचमनीय-पात्र से जल लेकर पूर्ववत् पुनः आचमन करावे।

५ स्नान—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः**—यह पढ़कर ज्ञान-मुद्रा से गन्धाक्षत छोड़ देवता को स्नान-मण्डप में ले जाने की भावना करे।

फिर—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः इदं हरिद्रादि-द्रव्यं तैलं च समर्पयामि**—

ज्ञान-मुद्रा से गन्धाक्षत छोड़कर ये द्रव्य प्रदान करे। तब—

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः स्नानं समर्पयामि—यह पढ़कर कनिष्ठा-रहित दाहिने हाथ की शेष अंगुलियों की मूठी से सामान्यार्घ्य के जल से स्नान करावे।

६ वस्त्र—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः वस्त्रं समर्पयामि नमः**—यह मन्त्र पढ़कर अँगूठे से छुई हुई अनामा और मध्यमा से रक्त वस्त्र प्रदान करे।

७ यज्ञोपवीत—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि**—इस मन्त्र से वस्त्र-प्रदान-मुद्रा से यज्ञोपवीत प्रदान करे।

८ आभूषण—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः भूषणानि समर्पयामि**—इस मन्त्र से दाहिने अँगूठे और अनामिका के योग से बनी मुद्रा से आभूषण प्रदान करे।

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः—यह मन्त्र पढ़ यह भावना करे कि आवरण-देवताओं के साथ इष्ट-देवता ने महा-चक्र का आरोहण किया है और चक्र के बिन्दु में प्रसन्न बैठी है।

९ गन्ध—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः गन्धं समर्पयामि—इस मन्त्र से कनिष्ठा और अंगुष्ठ को बनी मुद्रा-द्वारा कर्पूर-मिश्रित चन्दन देवता के अङ्ग में प्रदान करे।

१० अक्षत—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः अक्षतान् समर्पयामि—इस मन्त्र से सब अंगुलियों के संयोग से बनी मुद्रा-द्वारा अक्षत प्रदान करे।

११ पुष्प—मूलं श्रीकामेश्वर-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः पुष्पं समर्पयामि वौषट्—इस मन्त्र से तर्जनी और अंगुष्ठ की मुद्रा से पुष्प प्रदान करे।

१२ धूप—सामान्यार्घ्य के जल से 'फट्' मन्त्र पढ़कर धू -पात्र का प्रोक्षण करे। 'नमः' मन्त्र पढ़ गन्ध-पुष्प से उसका पूजन करे। धूप-पात्र को अपने सामने रखकर 'रं' बीज का उच्चारण कर उस पर अग्नि रक्खे। मूल-मन्त्र से अग्नि में दशाङ्ग धूप छोड़े। फिर बायें हाथ से घण्टा बजाते और दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे की मुद्रा से धूप-पात्र लिये देवता का गुण-कीर्तन करते नाभि-देश से उसको धूप प्रदान करे। यथा---

ॐ वनस्पति-रसोपेतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्व-देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

मूलं साङ्गायै सपरिवारायै श्रीकामेश्वर-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः धूपं घ्रापयामि—यह पढ़ धूप प्रदान करे और धूप-पात्र देवता के वाम-भाग में रख उस पर सामान्यार्घ्य का जल छोड़ दे।

१३ दीप--घृत-पूर्ण दीप-पात्र लेकर उसमें मूल-मन्त्र के अक्षरों की संख्या के तन्तुओं की बत्ती रक्खे। **'फट्'** मन्त्र से सामान्यार्घ्य के जल से प्रोक्षण करे। प्रणव से उसे जलावे। घण्टा बजाता हुआ नेत्रों से लेकर पाद-पर्यन्त दीप दिखावे। यथा--

ॐ सु-प्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
स-बाह्याभ्यन्तर-ज्योतिर्दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम्॥

मूलं साङ्गायै सपरिवारायै श्रीकामेश्वर-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः दीपं दर्शयामि—यह पढ़ दीप प्रदान कर दीप-पात्र को देवता के दाहिने रख दे। सामान्यार्घ्य के जल से उत्सर्ग कर मध्यमा-अंगुष्ठ की दीप-मुद्रा दिखावे।

१४ नैवेद्य—इसके बाद ग्रास-मुद्रा से बायें हाथ में शुद्ध तीर्थ का पात्र ले और दाहिने हाथ में शुद्ध शुद्धि-खण्ड ले। फिर यह पढ़े—**मूलं शुद्धि-सहितमिद-मासवं श्रीबाला-त्रिपुरा-देवतायै निवेदयामि।**

यह पढ़ उस आसव को देवता के मुख में निवे-

दित करे। फिर उस पात्र को अपने बायें या सामने आधार पर रख हाथ से ढँक नमस्कार करे और यह पढ़े--

ॐ शुद्धासव-रसास्वाद-परमानन्द-निर्भरे ।
अपारे भव-संसारे पाहि मां परमेश्वरि ॥

इसके बाद देवता के सम्मुख या दाहिने जल से चतुरस्र का मण्डल बनावे। उस पर नैवेद्य-पात्र रक्खे। नैवेद्य-द्रव्य विविध प्रकार का हो। **'फट्'** मन्त्र पढ़कर चक्र-मुद्रा से उसकी रक्षा करे। **'ॐ ह्रीं नमः'** इस मन्त्र को पढ़ सामान्यार्घ्य-जल से उसका प्रोक्षण करे। मूल-मन्त्र पढ़ उसका वीक्षण करे। दाहिने हाथ के ऊपर बाँया हाथ रक्खे। इस मुद्रा से नैवेद्य-पात्र को ढँक वायु-वीज **'यं'** का सोलह बार जप करे और यह समझे कि वायु ने उसके दोषों का शोषण कर डाला। फिर उसी तरह बायें हाथ पर दाहिना हाथ रक्खे। इस मुद्रा से नैवेद्य-पात्र को दिखाकर अग्नि-वीज **'रं'** का सोलह बार जप करे और यह समझे कि अग्नि ने उसके दोषों को जला डाला है।

तदनन्तर बायें कर-तल में अमृत-बीज **'वं'** का सोलह बार जप करे और यह समझे कि नैवेद्य अमृत-वृष्टि से भर गया है। मूल-मन्त्र से उसका प्रोक्षण

जल से करे। धेनु-मुद्रा दिखावे। मूल-मन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करे। गन्ध-पुष्प से उसका पूजन करे। देवता के मुख से निकलते हुए तेज का स्मरण करे। बायें अँगूठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श कर और दाहिने हाथ से जल लेकर—

ॐ सत्पात्र-सिद्धं-सुहविर्विविधानेक-भक्षणम्।
निवेदयामि देवेशि सानुगायै गृहाण भो॥

मूलं सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः नैवेद्यं समर्पयामि—यह पढ़कर देवता के दाहिने हाथ में जल छोड़कर बायें हाथ से कमल-मुद्रा और दाहिने हाथ से ग्रास-मुद्रा दिखावे। ग्रास-मुद्रायें ये हैं—

मूलं ॐ प्राणाय स्वाहा—कनिष्ठा-अनामा-अंगुष्ठ से।
मूलं ॐ अपानाय स्वाहा—वृद्धा-मध्या-तर्जनी से।
मूलं ॐ समानाय स्वाहा—अंगुष्ठ-अनामा-मध्यमा से।
मूलं ॐ उदानाय"--अनामा-अंगुष्ठ-मध्यमा-तर्जनी से।
मूलं ॐ व्यानाय स्वाहा—सब अँगुलियों से।

इस प्रकार पाँच आहुतियाँ देकर यह भावना करे कि उसके और देवता के बीच में यवनिका पड़ी है और देवता भोजन कर रहा है। अब हाथ में फूल लेकर यह पढ़कर पुष्पांजलि प्रदान करे—

१५ पुष्पाञ्जलि—

ब्रह्मेशाद्यैरमर-निकरैः स्तूयमानैः समन्तात् ।
चञ्चद्बाल-व्यजन-निकरैः वीज्यमानां सखीभिः ॥
नर्म-क्रीडा-प्रहसन-परां पंक्ति-भोक्त्रीं हसन्तीम् ।
भुंक्ते पात्रे कनक-घटिते षड्-रसान् चिद्विलासान् ॥

पुष्पाञ्जलि देकर आचमन हेतु जल प्रदान करे--

ॐ समस्त-देव-देवेशि सर्वावाप्ति-करं परम् ।
अखण्डानन्द-सम्पूर्णे गृहाण जलमुत्तमम् ॥

मूलं साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः जलं समर्पयामि ।

यह पढ़ कर्पूरादि सुवासित जल या सामान्यार्घ्य का जल स्वर्णादि पात्र में प्रदान करे । फिर—

मूलं हे श्रीबाला-त्रिपुरे मातः तृप्तासि ?—यह कह प्रश्न करे ।

इसके बाद आचमनीय पात्र का जल लेकर—

'ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा' यह पढ़कर आचमन-मुद्रा से वह जल देवता के मुख में छोड़े ।

१६ ताम्बूल—इसके बाद सामान्यार्घ्य का जल कर्पूरादि वीटिक पर छिड़क कर **'वं'** बीज का उच्चारण कर धेनु-मुद्रा दिखा उसे अमृत-मय कर देवता के आगे

रख बायें हाथ से छूकर देवता को अर्पित करे। यथा—

एला-लवङ्ग-कर्पूर-नागवल्ली-दलैर्युतम् ।
पूजा-भागेरितं देवि ताम्बूलं गृह्यतां नमः ॥

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः ताम्बूलं समर्पयामि—यह पढ़ तत्व-मुद्रा से देवता के मुख में ताम्बूल प्रदान करे।

पुष्पाञ्जलि—**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः**—इस मन्त्र से देवता को स्वर्ण-पुष्पों के अभाव में पीत-पुष्पों को पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। यह पुष्पाञ्जलि पैर, गुह्य, हृदय, मुख और शिर में अलग-अलग मन्त्र पढ़कर पाँच बार प्रदान करे।

१७ तर्पण—इसके बाद देवता का तर्पण श्री-पात्र से करे। वाम तत्व-मुद्रा में शुद्धि-खण्ड और दक्ष ज्ञान-मुद्रा में गन्धाक्षत लेकर—'**मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितां साङ्गां सायुधां सवाहनां सपरिवारां श्रीबाला-त्रिपुरां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।**' यह पढ़कर तीन या सात बार बिन्दु में देवता का पूजन और तर्पण करे।

१८ पुनः मुद्रा-प्रदर्शन—इष्ट-देवता के हृदय को योनि-मुद्रा, मुख को क्षोभिणी, भ्रू-मध्य को द्राविणी,

ललाट को आकर्षिणी, ब्रह्म-रन्ध्र को वशिनी तथा आह्लादिनी आदि मुद्रायें दिखावे।

आवरण-पूजन

हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर—

ॐ सच्चिन्मयि परे देवि परामृत-रस-प्रिये।
अनुज्ञां त्रिपुरे देहि परिवारार्चनाय मे॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

(१) पहले '**ॐ प्रथमावरण-देवताभ्यो नमः**' से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। फिर विन्दु के आगे वायव्य से ईशान तक तीन पंक्तियों में गुरुओं का ध्यान करे--

ते रक्त-माल्याम्बर-भूषणाद्यैः स्वलंकृताः पङ्कज-विष्टरस्थाः। सर्वे च सालम्बन-योन-निष्ठाः प्राप्ताखिलैश्वर्य-गुणाष्ट-कार्याः।

तब ज्ञान-मुद्रा से गन्धाक्षत और तत्व-मुद्रा से शुद्धि-खण्ड लेकर गुरु-पात्र से पहले दिव्यौघ के गुरुओं का पूजन और तर्पण ※ करे।

पहले उन्हें—**दिव्यौघाख्य-गुरुभ्यो नमः**--यह पढ़कर

※ यहाँ गुरु-पंक्ति की पूजा केवल पूर्णाभिषिक्त साधक ही करते हैं। साधारण साधक अगले पृष्ठ पर दिए मन्त्रों से केवल गुरु, परम गुरु, परापर गुरु और परमेष्ठि गुरुओं का ही पूजन-तर्पण करते हैं।

पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। फिर पहली पंक्ति में नीचे के मन्त्रों से प्रत्येक का पूजन और तर्पण करे—

ॐ प्रकाशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

ॐ परमेशानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ परशिवानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ कामेश्वरानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ मोक्षानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ कामानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ अमृतानन्दनाथ श्रीपादु०।

इसके बाद—**ॐ सिद्धौघाख्य-गुरुभ्यो नमः**—यह पढ़कर सिद्धौघ के गुरुओं को पुष्पाञ्जलि दे और उसके आगे की पंक्ति में पूर्ववत् उनका पूजन और तर्पण करे—

ॐ ईशानानन्दनाथ श्रीपादुकां पूज०।

ॐ तत्पुरुषानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ अघोरानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ वामदेवानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ सद्योजातानन्दनाथ श्रीपादु०।

इसके बाद—**ॐ मानवौघाख्य-गुरुभ्यो नमः**—यह पढ़कर पुष्पांजलि प्रदान करे और तीसरी पंक्ति में

पूजन-तर्पण करे—

ॐ गगनानन्दनाथ श्रीपादुकां पूज०।

ॐ विश्वानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ विमलानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ मदनानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ आत्मानन्दनाथ श्रीपादु०।

ॐ प्रियानन्दनाथ श्रीपादु०।

इसके बाद स्व-गुरु आदि का पूजन-तर्पण करे। यथा—

(१) अमुक स्व-गुरुनाथ तच्छक्त्यम्बा श्रीपादु०।

(२) अमुक परम-गुरुनाथ " श्रीपादु०।

(३) अमुक परापर-गुरुनाथ " श्रीपादु०।

(४) अमुक परमेष्ठि-गुरुनाथ " श्रीपादु०।

इस प्रकार गुरुओं का पूजन कर मध्य की योनि में उन्हीं मुद्राओं से शक्तियों का पूजन और तर्पण करे। तर्पण शक्ति-पात्र से करे। यथा—

ॐ रति श्रीपादुकां पूज०—बाएँ कोने में

ॐ प्रीति श्रीपादुकां पूज०—दाएँ कोने में

ॐ मनोभवा श्रीपादुकां पूज०—आगे के कोने में

अब पुष्पांजलि लेकर और 'मूल' के स्थान में मूलमन्त्र का उच्चारण करता हुआ—

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

यह पढ़कर देवता को पुष्पांजलि छोड़े और—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से विशेषार्घ्य का द्रव्य छोड़कर तृप्त करे ।

(२) इसके बाद 'ॐ द्वितीयावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर यन्त्र के मध्य योनि के त्रिन्दु के आग्नेयादि चारों कोनों में तथा पूर्व दिशा और मध्य में षडङ्गों का पूजन और तर्पण करे। तर्पण शक्ति-पात्र से करे—

ॐ ऐं हृच्छक्ति श्रीपादुकां पूज० आग्नेये ।
ॐ क्लीं शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूज० वायव्ये ।
ॐ सौः शिखा-शक्ति श्रीपादुकां पूज० नैर्ऋत्ये ।
ॐ ऐं कवच-शक्ति श्रीपादुकां पूज० ईशाने ।
ॐ क्लीं नेत्र-शक्ति श्रीपादुकां पूज० पूर्वे ।
ॐ सौः अस्त्र-शक्ति श्रीपादुकां पूज० सर्व-दिशासु।
मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि दे और—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे ।

(३) 'ॐ तृतीयावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पां-

जलि देकर मध्य योनि के बाहर पूर्वादि चारों दिशाओं में और योनि के आगे कामदेवों का पूजन-तर्पण पूर्ववत् करे । तर्पण वीर-पात्र से करे । यथा—

ॐ ह्रीं मनोभव श्रीपादुकां पूज० —पूर्वे
ॐ क्लीं मकरध्वज श्रीपादुकां पूज०—दक्षिणे
ॐ ऐं कन्दर्प श्रीपादुकां पूज०—पश्चिमे
ॐ ब्लूं मन्मथ श्रीपादुकां पूज०—उत्तरे
ॐ स्त्रीं कामदेव श्रीपादुकां पूज०—अग्रे

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ।।

पुष्पांजलि दे और—**सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु**—से तृप्त करे ।

(४) **ॐ चतुर्थावरण-देवताभ्यो नमः**—से पुष्पांजलि देकर कामदेवों के पास ही उनकी शक्तियों का उसी प्रकार पूजन-तर्पण करे । इनका तर्पण शक्ति-पात्र से करे—

ॐ द्रां द्राविणी श्रीपादुकां पूज० पूर्वे ।
ॐ द्रीं क्षोभिणी श्रीपादुकां पू० दक्षिणे ।
ॐ क्लीं आकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० पश्चिमे ।
ॐ ब्लूं वशीकरिणी श्रीपादुकां पूज० उत्तरे ।
ॐ सः संमोहिनी श्रीपादुकां पूज० अग्रे ।

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि दे और—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे ।

(५) ॐ पञ्चमावरण-देवताभ्यो नमः--से पुष्पांजलि देकर दक्षिणावर्त-क्रम से आठों योनियों में पूर्ववत् पूजन और तर्पण करे । इनका पूजन शक्ति-पात्र से करे—

ॐ सुभगा श्रीपादुकां पूज० ।
ॐ भगा श्रीपादुकां पूज० ।
ॐ भग-सर्पिणी श्रीपादुकां पूज० ।
ॐ भगमाला श्रीपादुकां पूज० ।
ॐ अनङ्गा श्रीपादुकां पूज० ।
ॐ अनङ्ग-कुसुमा श्रीपादुकां पूज० ।
ॐ अनङ्ग-मेखला श्रीपादुकां पूज० ।
ॐ अनङ्ग-मदना श्रीपादुकां पूज० ।

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि देकर—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे ।

(६) 'ॐ षष्ठावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि

प्रदान करे और उनका आठों दलों के केसरों में पूजन-तर्पण करे। तर्पण योगिनी-पात्र से करे—

ॐ आं ब्राह्मी श्रीपादुकां पूज०।
ॐ ईं माहेश्वरी श्रीपादुकां पूज०।
ॐ ऊं कौमारी श्रीपादुकां पूज०।
ॐ ऋं वैष्णवी श्रीपादुकां पूज०।
ॐ ऌं वाराही श्रीपादुकां पूज०।
ॐ ऐं इन्द्राणी श्रीपादुकां पूज०।
ॐ औं चामुण्डा श्रीपादुकां पूज०।
ॐ अः महालक्ष्मी श्रीपादुकां पूज०।

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले।
भक्त्या समर्प्ये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि देकर—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे।

(७) ॐ सप्तावरण-देवताभ्यो नमः—से पुष्पांजलि देकर आठों दलों में पूर्ववत् पूजन और तर्पण करे। तर्पण वीर-पात्र से करे—

ॐ अं असिताङ्ग-भैरव श्रीपादुकां पूज०।
ॐ इं रुरु-भैरव श्रीपादुकां पूज०।
ॐ उं चण्ड-भैरव श्रीपादुकां पूज०।
ॐ ऋं क्रोध-भैरव श्रीपादुकां पूज०।

ॐ लं उन्मत्त-भैरव श्रीपादुकां पूज० ।

ॐ एं कपालि-भैरव श्रीपादुकां पूज० ।

ॐ ओं भीषण-भैरव श्रीपादुकां पूज० ।

ॐ अं संहार-भैरव श्रीपादुकां पूज० ।

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्प्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि देकर—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे ।

(८) 'ॐ अष्टमावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर दलों के अग्रभाग में वामावर्त क्रम से पूजन-तर्पण करे । तर्पण श्री-पात्र से करे—

ॐ कामरूप-पीठ श्रीपादुकां पूज० ।

ॐ मलय-पीठ श्रीपादुकां पूज० ।

ॐ कुलनाग-पीठ श्रीपादुकां पूज० ।

ॐ कुलान्त-पीठ श्रीपादुकां पूज० ।

ॐ चौहार-पीठ श्रीपादुकां पूज० ।

ॐ जालन्धर-पीठ श्रीपादुकां पूज० ।

ॐ उडयान-पीठ श्रीपादुकां पूज० ।

ॐ देवीकोट-पीठ श्रीपादुकां पूज० ।

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि दे और—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे।

(९) ॐ नवमावरण-देवताभ्यो नमः—से पुष्पांजलि देकर भूपुर की भीतरी रेखा में क्रमशः पूर्ववत् पूजन-तर्पण करे। तर्पण वीर पात्र से करे—

ॐ हेतुक	श्रीपादुकां	पूज०।
ॐ त्रिपुरान्तक	,,	,,
ॐ वेताल	,,	,,
ॐ अग्नि-जिह्व	,,	,,
ॐ कालान्तक	,,	,,
ॐ कपाल	,,	,,
ॐ एकपाद	,,	,,
ॐ भीमरूप	,,	,,
ॐ मलय	,,	,,
ॐ हाटकेश्वर	श्रीपादुकां	पूज०

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥

पुष्पांजलि दे और—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे।

(१०) ॐ दशमावरण-देवताभ्यो नमः—से पुष्पांजलि देकर भू-गृह की मध्य-रेखा में दक्षिणावर्त से

पूजन और तर्पण करे। तर्पण वीर-पात्र से करे—

ॐ इन्द्र	श्रीपादुकां	पूज०।
ॐ अग्नि	,,	,,
ॐ यम	,,	,,
ॐ निऋत	,,	,,
ॐ वरुण	,,	,,
ॐ वायु	,,	,,
ॐ कुबेर	,,	,,
ॐ ईशान	,,	,,
ॐ ब्रह्मा	,,	,,
ॐ अनन्त	,,	,,

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम्॥

पुष्पांजलि देकर—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे—

(११) ॐ एकादशावरण-देवताभ्यो नमः—से पुष्पांजलि देकर भूपुर की बाहर की तीसरी रेखा में पूजन-तर्पण करे। वीर-पात्र से तर्पण करे—

ॐ वज्र	श्रीपादुकां	पूज०।
ॐ शक्ति	,,	,,
ॐ दण्ड	,,	,,

ॐ खड्ग	श्री पादुकां	पूज०
ॐ पाश	,,	,,
ॐ अंकुश	,,	,,
ॐ गदा	,,	,,
ॐ त्रिशूल	,,	,,
ॐ पद्म	,,	,,
ॐ चक्र	,,	,,

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशावरणार्चनम् ।।

पुष्पांजलि देकर—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे ।

(१२) ॐ द्वादशावरण-देवताभ्यो नमः—से पुष्पांजलि दे भूपुर के बाहर पूजन-तर्पण करे । तर्पण बलि-पात्र से करे—

ॐ वं वटुक	श्रीपादुकां	पूज०	पूर्वे ।
ॐ यां योगिनी	,,	,,	दक्षिणे ।
ॐ क्षं क्षेत्रपाल	,,	,,	पश्चिमे ।
ॐ गं गणेश	,,	,,	उत्तरे ।
ॐ वसु	,,	,,	आग्नेये ।
ॐ सूर्य	,,	,,	नैर्ऋत्ये ।
ॐ शिव	,,	,,	वायव्ये ।

ॐ भूत श्रीपादुकां पूज० ईशाने ।
मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वादशावरणार्चनम् ॥

पुष्पांजलि दे—सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे ।

इस प्रकार आवरण-पूजन कर चुकने पर साधक इष्ट-देवता को पुनः धूप आदि प्रदान करे । यथा—

धूप—धूप-पात्र का पूर्व-वत् प्रोक्षण कर उस पर अङ्गार रख उस पर धूप डाल देवता को निम्न मन्त्र से अर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं दिव्यं गवाज्य-सितयान्वितम् ।
कृष्णागरु-युतं देवि धूपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ॥

मूलं श्री कामेश्वर-सहितायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्रीबाला-त्रिपुरायै नमः धूपं आपयामि नमः ।

दीप—दीप-पात्र का 'फट्' से प्रोक्षण कर 'नमः' से उस पर फूल चढ़ा उसे जलावे और निम्न मन्त्र से नीराजन करे—

ॐ आनन्दोभूत-कार्पास-वर्ति-राज्य-समन्वितम् ।
सकर्पूरञ्च देवेशि दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ॥

नैवेद्य—देवता के आगे चतुरस्र का मण्डल बनावे ।

उस पर एक लाल फूल चढ़ावे। फिर उस मण्डल पर आधार स्थापित कर उस पर नैवेद्य-पात्र रक्खे। पूर्ववत् शोषणादि-संस्कार कर अमृतीकरण करे। मूल-मन्त्र और वरुण-बीज 'वं' से आठ-आठ बार अभिमन्त्रित कर बायें हाथ के अँगूठे से पात्र को स्पर्श कर—

लेह्य-चोष्य-भक्ष्य-भोज्य-नाना-पक्वान्न-संयुतम् ।
पायसापूप-वटका दध्योदन-पलोदनम् ॥
पर्पटा-वटिकास्तद्वन्नाना-सन्धान-संयुतम् ।
मोदकानेक-जातीया नाना-शाक-समन्वितम् ॥
दुग्धाज्य-सितया युक्तं शुद्धकासार-संयुतम् ।
कट्वम्ल-मधुरादिभिर्नाना-स्वादु-समन्वितम् ॥
समानीतं मया भक्त्या नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।

इस मन्त्र से नैवेद्य समर्पित कर—'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'—से देवता के मुख में आचमन प्रदान कर ग्रास-मुद्रा दिखलावे और देवता तथा अपने बीच में यवनिका की कल्पना कर हाथ में फूल लेकर—

ॐ वामेषु स्वर्ण-पात्रीमनुपम-परमान्नेन पूर्णां दधाना—
वत्येन स्वर्ण-दर्वीं निज-जन-हृदयाभीष्टदां धारयन्ती ।
सिन्दूरारक्त-वस्त्रा विविध-मणि-लसद्-भूषणामेचकाङ्गी ।
तिष्ठन्ती प्राग्रतस्ते मधु-मद-मुदिता अन्नपूर्णा सदैव ।

पंक्त्योपविष्टान् परितस्तु चक्र-
शक्त्यास्त्रियालिङ्गित-वाम-भागान् ।

सर्वोपचारैः परिपूज्य भक्त्या

तवाम्बिके पारिषदान्नमामि ॥

इस मन्त्र से देवता को पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। फिर तत्व-मुद्रा से विशेषार्घ्य के द्रव्य से देवता को तर्पण करावे। यथा—

ॐ ऐं आत्म-तत्व-व्यापिका श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दरि तृप्यतु।
ॐ क्लीं विद्या " " " "
ॐ सौः शिव " " " "
मूलं सर्व-तत्व-व्यापिका " " "

होम ※

साधक अब होम की क्रिया करे। वह अपने दाहिने एक हाथ लम्बी-चौड़ी तथा एक अंगुल ऊँची बालुका की वेदी बनावे। उसे मूल-मन्त्र पढ़कर देखे। 'फट्' से सामान्यार्घ्य के जल से उसका प्रोक्षण कर 'फट्' से ही कुश के अग्र भाग से उसका ताड़न करे। 'हुं' से मूठी से जल द्वारा उसको सींचे। फिर अग्नि लावे। उसका एक अङ्गार--'मूलं हूं फट् क्रव्यादेभ्यः'- यह मन्त्र पढ़कर नैऋत्य-कोण में क्रव्याद का अंश समझ कर गिरा दे और तब उस आग को मूल-मन्त्र से वेदी पर रखे और समिधा रखकर अग्नि जला कर

※ प्रायः साधक हवन नहीं करते।

यह मन्त्र पढ़े—

ॐ वह्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्ण-वर्णमनलं समीद्धः सर्वतोमुखम् ॥

इसके बाद हाथ में जल लेकर सङ्कल्प पढ़े। सङ्कल्प के अन्त में—**'श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दरी-पूजाङ्गं नित्य-होमं करिष्ये'**—यह पढ़ हाथ का जल छोड़े। अब मूल-मन्त्र से प्राणायाम कर इष्ट-देवता का विनियोग पढ़ ऋष्यादि न्यास करे और इष्ट-देवता का ध्यान करे। फिर मूल-मन्त्र से अग्नि के ऊपर जल छिड़के। तब उसका पञ्चोपचार से पूजन करे। इसके बाद पीठस्थ अपने इष्ट-देवता का अग्नि-रूप में ध्यान करे और उसका पञ्चोपचार से पूजन करे। फिर घृत या पायस की आहुतियाँ निम्न मन्त्रों से प्रदान करे—

ॐ स्यूं हिरण्यायै स्वाहा। ॐ ष्यूं गगनायै स्वाहा। ॐ श्यूं रक्तायै स्वाहा। ॐ व्यूं कृष्णायै स्वाहा। ॐ ल्यूं सुप्रभायै स्वाहा। ॐ न्यूं बहु-रूपायै स्वाहा। ॐ य्यूं अति-रक्तायै स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

इस प्रकार आहुतियाँ देकर—**'मूलं श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यै स्वाहा श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दर्या इदं'**—मन्त्र तीन

बार पढ़कर तीन आहुतियाँ दे। इसके बाद—ॐ गुरवे स्वाहा, ॐ परम-गुरवे स्वाहा, ॐ परापर-गुरवे स्वाहा, ॐ परमेष्ठि-गुरवे स्वाहा—इन चार मन्त्रों से चारों गुरुओं के लिए और—ॐ रत्यै स्वाहा, ॐ प्रीत्यै स्वाहा, ॐ मनोभवायै स्वाहा—इन तीन मन्त्रों से तीनों शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे। फिर इष्ट-देवता के षडङ्गों के लिये इस प्रकार आहुतियाँ दे—

ॐ ऐं हृच्छक्त्यै स्वाहा। ॐ क्लीं शिरः-शक्त्यै स्वाहा। ॐ सौः शिखा-शक्त्यै स्वाहा। ॐ ऐं कवच-शक्त्यै स्वाहा। ॐ क्लीं नेत्र-शक्त्यै स्वाहा। ॐ सौः अस्त्र-शक्त्यै स्वाहा।

इसके बाद कामदेवों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा—ॐ मनोभवाय स्वाहा, ॐ मकर-ध्वजाय स्वाहा, ॐ कन्दर्पाय स्वाहा, ॐ मन्मथाय स्वाहा, ॐ काम-देवाय स्वाहा।

फिर कामदेवों की शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा—ॐ द्राविण्यै स्वाहा, ॐ क्षोभिण्यै स्वाहा, ॐ आकर्षिण्यै स्वाहा, ॐ वशीकरिण्यै स्वाहा, ॐ सम्मो-हिन्यै स्वाहा।

आठ शक्तियों को—ॐ सुभगायै स्वाहा, ॐ भगायै, ॐ भग-सर्पिण्यै, ॐ भग-मालायै, ॐ अनङ्गायै, ॐ

अनङ्ग-कुसुमायै, ॐ अनङ्ग-मेखलायै, ॐ अनङ्ग-मदनायै ।

अष्ट-मातृकाओं को—ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा, ॐ माहेश्वर्यै, ॐ कौमार्यै, ॐ वैष्णव्यै, ॐ वाराह्यै, ॐ इन्द्राण्यै, ॐ चामुण्डायै, ॐ महा-लक्ष्म्यै ।

आठ भैरवों को—ॐ असिताङ्ग-भैरवाय स्वाहा, ॐ रुरु-भैरवाय, ॐ चण्ड-भैरवाय, ॐ क्रोध-भैरवाय, ॐ उन्मत्त-भैरवाय, ॐ कपालि-भैरवाय, ॐ भीषण-भैरवाय, ॐ संहार-भैरवाय ।

आठ पीठों को—ॐ कामरूप-पीठाय स्वाहा, ॐ मलय-पीठाय, ॐ कुलनाग-पीठाय, ॐ कुलान्त-पीठाय, ॐ चौहार-पीठाय, ॐ जालन्धर-पीठाय, ॐ उड्डीयान-पीठाय, ॐ देवीकोट-पीठाय ।

दस भैरवों को—ॐ हेतुकाय स्वाहा, ॐ त्रिपुरान्तकाय, ॐ वेतालाय, ॐ अग्नि-जिह्वाय, ॐ कालान्तकाय, ॐ कपालाय, ॐ एक-पादाय, ॐ भीम-रूपाय, ॐ मलयाय, ॐ हाटकेश्वराय ।

दस दिक्पालों को—ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ अग्नये, ॐ यमाय, ॐ निऋताय, ॐ वरुणाय, ॐ वायवे, ॐ कुवेराय, ॐ ईशानाय, ॐ ब्रह्मणे, ॐ अनन्ताय ।

दिक्पालों के आयुधों को—ॐ वज्राय स्वाहा, ॐ शक्त्यै, ॐ दण्डाय, ॐ खड्गाय, ॐ पाशाय, ॐ अंकु-

शाय, ॐ गदायै, ॐ त्रिशूलाय, ॐ पद्माय, ॐ चक्राय ।

बलि-देवताओं को—ॐ वटुकाय स्वाहा, ॐ योगिन्यै, ॐ क्षेत्र-पालाय, ॐ गणेशाय, ॐ वसवे, ॐ सूर्याय, ॐ शिवाय, ॐ भूताय ।

मूल-मन्त्र के अन्त में 'स्वाहा' लगाकर २५ आहुतियाँ प्रदान कर चार व्याहृतियों की आहुतियाँ दे—ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । फिर २५ बार मूल-मन्त्र का जप करे । उसका फल देवता को अर्पित कर देवता के चक्र में पुनः आ विराजने की भावना करे । इसके बाद निम्न मन्त्र से भस्म का वन्दन करे—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषं ।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषं ॥

फिर यह मन्त्र पढ़कर अग्नि का विसर्जन करे—

ॐ भो भो वह्ने महा-शक्ते सर्व-काम-प्रसाधक ।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥

पञ्च-बलि

१ वटुकनाथ—इष्ट-देवता के पीठ के ईशान-कोण में भूमि पर 'ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं व्यापक-मण्डलाय नमः'—इस मन्त्र से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र मण्डल की रचना कर—'ॐ वटुकनाथ बलि-मण्डलाय नमः' से उसका

पूजन करे। फिर—**वटुक-नाथ इहागच्छ इह तिष्ठ इह सन्निधेहि इह सन्निरुद्धस्व इह सम्मुखो भव**—यह पढ़ पाँच मुद्राओं को दिखाता हुआ वटुक-नाथ का आवाहन करे। इसके बाद **'वां वीं वूं वैं वौं वः'** की योजना कर षडङ्ग मन्त्रों से सकलीकरण करे। फिर आधार पर बलि-युक्त बलि-पात्र रखकर—**ॐ वटुक-नाथ बलि-द्रव्याय नमः**—से उसका पूजन कर उसे बायें हाथ के अँगूठे और अनामिका से पकड़ तथा दाहिने हाथ से बलि-पात्र का अमृत लाकर—**ॐ ॐ ॐ एह्योहि देवी-पुत्र वटुक-नाथ कपिल-जटा-भार-भास्वर पिङ्गल त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व-विघ्नान् नाशय नाशय इमं पूजनं सर्वोपचार-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। एष बलिर्वं वटुकाय नमः**—से वाम तत्व-मुद्रा से बलि देकर निम्न मन्त्र से पुष्पाञ्जलि दे—

ॐ बलिदानेन सन्तुष्टो वटुकः सर्व-सिद्धिदः।
रक्षां करोतु मे नित्यं भूत-वेताल-सेवितः॥

२ **योगिनी**—पीठ के आग्नेय कोण में—**ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं व्यापक-मण्डलाय नमः**—से त्रिकोण-वृत्त चतुरस्र का मण्डल बनाकर **'यां योगिनी बलि-मण्डलाय नमः'**—से उसका पूजन करे। **'योगिनी-गणा इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु इह सन्निधाप्ता भवन्तु इह सन्निरुद्धाप्ता भवन्तु**

इह सम्मुखो भवन्तु—यह पढ़ आवाहनी आदि पाँच मुद्राओं को दिखाता हुआ योगिनी-गण का आह्वान करे। 'यां यीं यूं यें यौं यः' को यथा-क्रम योजना कर षडङ्ग के मन्त्रों से सकलीकरण करे। फिर आधार पर बलि-युक्त बलि-पात्र रखकर 'ॐ योगिनी-बलि-द्रव्याय नमः'—से उसका पूजन करे। फिर बायें हाथ की गज-मुण्ड मुद्रा से बलि-पात्र को पकड़ और दाहने हाथ से बलि-पात्र का अमृत ला—

ॐ ॐ ॐ ऊर्ध्वे ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगन-तले भू-तले निष्कले वा। पाताले वाऽतले वा सलिल-पवन-योर्यत्र कुत्र स्थितो वा। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृत-पदा पुष्प-धूपादिकेन। प्रीताः देव्यः सदा नः शुभ-बलि-विधिना पान्तु वीरेन्द्र-वन्द्याः॥ ॐ यां योगिनी-भ्यो हुँ फट् सर्व-वर्ण-योगिनीभ्यो हुँ फट् स्वाहा—से दाहिनी तत्त्व-मुद्रा से बलि देकर नाराच-मुद्रा से पुष्पाञ्जलि दे—

ॐ या काचिद् योगिनी रौद्री सौम्या घोर-तरा परा।
भूचरी खेचरी व्योम-चरी प्रीतास्तु मे सदा॥

३ क्षेत्रपाल—पीठ के नैऋत्य-कोण में त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल—ॐ ऐं ह्रीं हूं व्यापक-मण्डलाय नमः—से बना कर 'क्षं क्षेत्रपाल बलि-

मण्डलाय नमः'—से उसका पूजन करे। **'क्षेत्रपाल इहागच्छ इह तिष्ठ इह सन्निधेहि इह संनिरुद्धस्व इह सम्मुखो भव'**—यह पढ़ पाँच मुद्राओं को दिखाता हुआ क्षेत्रपाल का आवाहन करे। **'क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः'**—की योजना कर यथा-क्रम षडङ्ग-मन्त्रों से सकलीकरण करे। आधार पर बलि-युक्त बलि-पात्र स्थापित कर **'ॐ क्षेत्रपाल बलि-द्रव्याय नमः'**—से उसका पूजन करे। बायें हाथ की तर्जनी और अँगूठे से बलि-पात्र को पकड़ और दाहिने हाथ से बलि-पात्र का अमृत ला—**ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्थान-क्षेत्रपाल इहागच्छ इमं धूप-दीपादि-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण आपय आपय सिद्धिं मे प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा। एष बलिः क्षेत्रपालाय नमः**—यह पढ़ बायें हाथ को मूठ को तर्जनी से बलि प्रदान कर पुष्पाञ्जलि दे—

ॐ यस्मिन् क्षेत्रे निवासो च क्षेत्रपालस्य किङ्करः।
प्रीतोऽयं बलि-दानेन शान्तिं रक्षां करोतु मे॥

४ गणेश—पीठ के वायव्य कोण में—**ॐ ऐं ह्रीं ह्लूं व्यापक-मण्डलाय नमः**—से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनाकर **'गं गणपति-बलि-मण्डलाय नमः'**—से उसका पूजन करे। **'गणपति इहागच्छ इह तिष्ठ इह सन्निधेहि इह सनिरुद्धस्व इह सम्मुखो भव'**—यह पढ़

आवाहिनी आदि पाँच मुद्राओं को दिखाता हुआ गणेश का आवाहन करे। **'गां गीं गूं गैं गौं गः'** को यथा-क्रम षडङ्ग-मन्त्रों में युक्त कर सकलीकरण करे। आधार पर बलि-द्रव्य-युक्त बलि-पात्र रक्खे। बायें हाथ की मध्यमा और अंगुष्ठ से बलि-पात्र को पकड़ और दाहिने हाथ से बलि-पात्र का अमृत ला--**ॐ गां गीं गूं गणपतये वर वरद सर्व-जनं मे वशमानय सर्वोपचार-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। एष बलिर्गं गणपतये नमः**--यह पढ़ बायें हाथ की मिली हुई खड़ी, पर कुछ झुकी अंगुलियों के बीच अँगूठा रख बलि प्रदान करे। फिर नाराच-मुद्रा से पुष्पाञ्जलि दे--

ॐ सर्वदा सर्व-कार्याणि निर्विघ्नानि सुसाधय।
सन्निधिं कुरु मे नित्यं गण-राज स-शक्तितः॥

५ **सर्व-भूत**--पीठ की उत्तर दिशा में--**ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं व्यापक-मण्डलाय नमः**--से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनाकर **'ॐ सर्व-भूत-बलि-मण्डलाय नमः'**--से उसका पूजन करे। **'सर्व-भूत-गणा इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु इह सन्निधाप्ता भवन्तु इह सन्निरुद्धाप्ता भवन्तु इह सम्मुखी भवन्तु'**--यह पढ़ आवाहिनी आदि पाँच मुद्राओं को दिखाता हुआ सर्व-भूतों का आवाहनादि करे। **'हां हीं हूं हैं हौं हः'** की यथा-क्रम

षडङ्ग के मन्त्रों में योजना कर सकलीकरण करे। आधार पर बलि-द्रव्य-युक्त बलि-पात्र स्थापित कर '**ॐ सर्व-भूत-बलि-द्रव्याय नमः**'—से उसका पूजन करे। बायें हाथ की अँगुलियों से बलि-पात्र पकड़ और दाहिने हाथ से बलि-पात्र का अमृत ला—**ॐ ह्रीं सर्व-विघ्न-कृद्भ्यो सर्व-भूतेभ्यो हुँ फट् स्वाहा। एष बलिः सर्व-भूतेभ्यो नमः**—से बलि देकर नाराच-मुद्रा से पुष्पाञ्जलि दे—

ऐं भूता ये विविधाकारा दिव्य-भूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालातल-संस्थाश्च शिव-योगेन भाषिताः॥
क्रूराद्याः सप्त-सन्धाश्च इन्द्राद्येषु व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सर्व-गन्धर्वा ऐन्द्राद्याः सर्व-देवताः॥
ते सर्वे प्रीति-मनसो भूत्वा गृह्णन्त्विमां बलिम्।

अब '**सर्वाभ्यो बलि-देवताभ्यो नमः**'—से सब मण्डलों का पञ्चोपचार-पूजन कर तीन बार फट्कार कर निम्न मन्त्र से फूल देकर बलि-देवताओं का विसर्जन करे—

बलिदानेन सन्तुष्टा क्षमध्वं बलि-देवताः।
यथा-सुखं विहरन्तु यथेच्छा सुदिशासु च॥

इसके बाद साधक स्वस्तिक-आसन से बैठकर सामान्याघ्यं का जल एक दूसरे पात्र में लेकर '**वं**' बीज पढ़कर धेनु-मुद्रा दिखाकर अमृत-मय करे। फिर—

ॐ सलिलं पावनं देवि शीतलं सुमनोहरम् ।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥

मूलं साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्रीबाला-त्रिपुरायै जलं निवेदयामि नमः—से जल देकर देवता का ध्यान करे। फिर--**मूलं श्रीबाला-त्रिपुरे मातः तृप्तासि ?** से प्रश्न पूछे।

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा——यह मन्त्र पढ़कर सामान्यार्घ्य जल से आचमन करावे और यह भावना करे कि नैवेद्य गत-रस हो गया है। तब उसे उठाकर नैर्ऋत्य कोण में रख दे और **'फट्'** मन्त्र से उस स्थान का शोधन करे। फिर हाथ धोने के लिये जल देकर गन्ध-द्रव्य उद्वर्तन के लिए देवे। इसके बाद मूल-मन्त्र से आचमन करावे ।

तब सामान्यार्घ्य के जल से ताम्बूल का प्रोक्षण कर उसके शोषणादि संस्कार कर धनु-मुद्रा से उसका अमृतीकरण करे और—

ॐ एला-लवङ्ग-कर्पूर-मुक्ता-चूर्ण-समन्वितम् ।
केतकी-वासितैः शुद्धैः खदिरैर्मृग-नाभि-युक् ॥
नाग-वल्ली-दलैर्युक्तं शुद्ध-पूगी-फलैर्युतम् ।
हेम-पात्र-समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
मूलं साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै

श्रीबाला-त्रिपुरायै ताम्बूलं समर्पयामि—यह पढ़ और उसे बायें हाथ की पाँचों अँगुलियों से स्पर्श कर सामान्यार्घ्य का जल छोड़ कर ताम्बूल-मुद्रा दिखावे। इसके बाद पशु-बलि करे।

पशु-बलि

सुन्दर रङ्गवाला एक युवा छाग, तेज धारवाला खड्ग, छाग-बन्धन के लिए नई रस्सी स्तम्भ, रुधिर ग्रहण करने के लिए ताम्र-पात्र, पका केला, पकड़ने-वाले दो आदमी, छेदन करनेवाला एक आदमी—यह सब पशु-बलि में चाहिए।

सुन्दर लक्षण से युक्त पशु को मूल-मन्त्र से स्नान कराकर देवी के सामने अपने वाम-भाग में पूर्व-दिशा की ओर पशु का मुख कर उसके दोनों सींगों में सिन्दूर लगावे और गले में बेल-पत्र की माला पहनावे। इसके बाद सामान्यार्घ्य-पात्र के जल से मूल-मन्त्र से तीन बार प्रोक्षण और कवच-मन्त्र 'हुं' से अवगुण्ठन और धेनु-मुद्रा का प्रदर्शन कर **'एतत् पाद्यं छाग-पशवे नमः'** से पाद्यादि के द्वारा पशु-पूजा करे। फिर पशु के कान में यह मन्त्र-पढ़े—**'ॐ पशु-पाशाय विद्महे विश्व-कर्मणे धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।'**

इसके बाद शुद्ध जल से खड्ग को धोकर सिन्दूर से उस पर वृत्ताकार तीन चिह्न करे और उन चिह्नों में विल्व-पत्र के डंठल से **'ह्रीं'** मन्त्र लिखकर **'ॐ ह्रीं कालि कालि वज्रेश्वरि लौह-दण्डाय नमः'** से गन्ध-पुष्प-द्वारा खड्ग की पूजा करे। फिर खड्ग के अग्र, मध्य, मूल भाग में गन्ध-पुष्प के द्वारा **'हुं वागीश्वरी-ब्रह्माभ्यां नमः, हुं लक्ष्मी-नारायणाभ्यां नमः, हुं उमा-महेश्वराभ्यां नमः'** से पूजा करे। फिर **'एते गन्ध-पुष्पे ॐ ब्रह्मा-विष्णु-शिव-शक्ति-युक्ताय खड्गाय नमः'** से पूजन कर उसे प्रणाम करे—**ॐ खड्गाय खड्ग-धाराय शक्ति-कार्यार्थ-तत्पर। पशुं छिन्धतां शीघ्रं खड्ग-नाथ नमोऽस्तु ते॥**

इसके बाद तिल, कुश, जल हाथ में लेकर सङ्कल्प करे—**'ॐ अद्येत्यादि श्रीबाला-त्रिपुरा-देव्याः प्रीति-कामः इमं छाग-पशुं श्रीबाला-त्रिपुरा-देवतायै अहम् सम्प्रददे।'** फिर हाथ जोड़कर **'ॐ बलिं गृह्ण महादेवि, पशुं सर्व-गुणान्वितम्। यथोक्तेन विधानेन तुभ्यमस्तु समर्पितम्'** यह मन्त्र पढ़े। **'आं हुं फट्'** से पशु के कन्धे पर धीरे से खड्ग छुआवे। फिर पशु को स्तम्भ में बाँधे और अर्घ्योदक से प्रोक्षण कर गन्ध-पुष्प से स्तम्भ की पूजा करे। तब पशु का छेदन करे।

पशु का सिर और पशु का रक्त थोड़े मांस के साथ ताम्र-पात्र के अन्दर रख कर देवी के सामने ले जावे और पशु का सिर उत्तर-मुख करके विल्व-पत्र के ऊपर रख दे। उस सिर के ऊपर घी की बत्ती जलावे। फिर इस मन्त्र से सिर को निवेदन करे—

एष सप्रदीप-छाग-शीर्ष-बलिः श्रीबाला-त्रिपुरा-देव्यै नमः।
एष समांस-रुधिर-बलिः श्रीबाला-त्रिपुरा-देव्यै नमः॥

फिर उस रक्त के चार भाग करे—हर एक भाग का गन्ध-पुष्प के द्वारा '**एष समांस-रुधिर-बलिः हुं वं वटुकाय नमः।**' इत्यादि क्रम से '**हुं यं योगिनोभ्यो नमः, हुं क्षं क्षेत्रपालाय नमः, हुं गं गणेशाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कौशिकी रुधिरेणाप्यायताम्**' से पूजन करे। इस विधि से पशु-बलि कर नीराजन करे।

नीराजन

एक थाली में स्वस्तिकादि कोई एक मण्डल बनावे। उस पर आटे के बने पाँच दीप जलावे। फिर—

ग्लूं गगन-लोक गोमेदक-रत्नाय ग्लूं नमः।
स्लूं स्वर्ग-लोक सुवर्ण-रत्नाय स्लूं नमः॥
म्लूं मर्त्य-लोक माणिक्य-रत्नाय म्लूँ नमः।
प्लूं पाताल-लोक पद्मराग-रत्नाय प्लूं नमः॥
न्लूं नाग-लोक नील-रत्नाय न्लूं नमः।

इन मन्त्रों से पूर्वादि दिशाओं में और मध्य में उन रत्नों का गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन करे और चक्र-मुद्रा दिखावे। फिर नीराजन-स्तुति * का पाठ करते हुए श्री जगदम्बा की आरती करे। अन्त में एक पात्र में सामान्यार्घ्य का जल लेकर—

ॐ समस्त-चक्र-चक्रेशि-युते देवि नवात्मिके।
आरार्तिकमिदं तुभ्यं गृहाण परमेश्वरि॥

यह मन्त्र पढ़ कर जल छोड़ कर समर्पण करे। फिर अपने भीतर के और बाहर के तेज के एकीभूत होने की भावना करे। तब वह दीपक-पात्र (थाली) उठा-कर गाँठों के बल खड़े हो घण्टा-भेरी के बजने के साथ मूल-मन्त्र पढ़ता हुआ देवी के पैर से सिर तक सात बार नीराजन करे। पैरों का, हृदय का और मुख का तीन-तीन बार नीराजन करे। इसके बाद मूल-मन्त्र से देवता को पुष्पाञ्जलि देकर मूल-मन्त्र का जप करे।

जप-प्रक्रिया

गुरु-देव का स्मरण कर निम्न-क्रम से इष्ट-मन्त्र का जप करे—

---

* नीराजन-स्तुतियाँ 'चक्रपूजा के स्तोत्र' और 'आरति-माला' नामक पुस्तकों में दी हैं।

१ शापोद्धार—ऐं ऐं सौः क्लीं क्लीं ऐं सौः सौः क्लीं—अष्टोत्तर-शतं ।

२ चेतनी मन्त्र—ऐं ईं औं } एतयोः शत-वारं जपात्

३ आह्लादिनी मन्त्र—ॐ क्लीं नमः } निष्कीलनम्

४ दीपनी—ॐ वद वद वाग्वादिनि ऐं—प्रथम वीजस्य ।

ॐ क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु—मध्य,,

ॐ सौः मोक्षं कुरु—अन्त वीजस्य ।

एभिर्मन्त्रैः सुदीप्तानि वीज-त्रयाणि; प्रत्येकं शत-वारं जपेत् ।

५ सञ्जीवनी—ॐ श्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीं सौः श्रीं ॐ—दशधा ।

६ सेतु-मन्त्र—ॐ—इति पादयोः दशधा जपेत् ।

७ महासेतु मन्त्र—ॐ ह्रीं ॐ—इति नाभौ दशधा ।

निर्वाण—ॐ ह्रीं अं आं···लं ळ ह्रीं ॐ—हृदि एकवारं ।

८ कुल्लिका मन्त्र—ॐ ऐं स्त्रीं फट्—इति मूर्ध्नि दशधा ।*

---

* कुछ साधक सूतक में भी मन्त्र का जप बन्द नहीं करते । वे प्रणव से पुटित इष्ट-मन्त्र का दश बार जप कर सूतक का परिहार कर लेते हैं ।

इसके बाद बाएँ हाथ में माला लेकर उसका पूजन करे। फिर उसे दाएँ हाथ में लेकर यथाशक्ति जप करे। मूल मन्त्र का १०८ या ११०८ बार जप करे। जप कर चुकने पर माला को शिर पर धारण कर फिर इष्ट-मन्त्र के ऋष्यादि और षडङ्गादि न्यास करे। फिर प्राणायाम करके मानसिक पञ्चोपचारों* से देवता का पूजन करे। इसके बाद सामान्याध्य के जल से जप-फल देवता के दाहिने हाथ में समर्पित करे। यथा---

ॐ गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

अब गन्ध-पुष्प से माला का पूजन कर उसकी स्तुति करे--

ॐ त्वं माले सर्व-देवानां प्रसीद वर-दायिनि।
शुभं कुरुष्व मे देवि यशः कीर्तिञ्च देहि मे॥

इस प्रकार स्तुति कर माला को छिपाकर रख दे। इसके बाद कवच, सहस्रनाम और स्तोत्र का पाठ करे।

पुष्पाञ्जलि

तब साधक पुष्पाञ्जलि लेकर सामयिकों के साथ पुष्पाञ्जलि स्तोत्र या किङ्किणी-स्तोत्र※ पढ़ता हुआ

---

* मानसिक पञ्चोपचार पूजा पृष्ठ ६० पर दी है।

※ पुष्पांजलि-स्तोत्र, किङ्किणी स्तोत्र आदि 'चक्रपूजा के स्तोत्र' नामक पुस्तक में संगृहीत हैं।

चक्रेश्वरी को ८ पुष्पाञ्जलियाँ प्रदान करे।

मण्डल-पूजन

सामयिक * चक्रेश्वरी को समुद्रा प्रणाम कर क्रम से आसनों पर बैठें। गुरुदेव या उनके तुल्य कोई महानुभाव हों तो चक्रेश्वर पहले उन्हें पात्र देकर सादर प्रणाम करे। यदि न हों, तो उनका ध्यान कर उनके पात्र के द्रव्य को स्वयं पान कर जाय।

इसके बाद शक्ति का पूजन करे। यथा---शक्ति को आसन पर बिठा उसे देवी-रूप समझ गन्ध, पुष्प, वस्त्र, आभूषण आदि से लक्ष्मी-बीज या मूल-मन्त्र से उसका सर्वोपचारों से पूजन करे। फिर शक्ति-पात्र का अमृत दूसरे पात्र में लेकर---

ॐ अलि-पात्रमिदं तुभ्यं दीयते पिशितान्वितम्।
स्वीकृत्य सुभगे देवि ! जयं देहि रिपून् दह॥

यह पढ़ शुद्धि-खण्ड के सहित वह पात्र उसे दे दे। शक्ति स्व-कल्पानुसार उसका अमृत पानक रे। यथा-रुचि पात्र लेकर----

वत्स ! तुभ्यं प्रदास्यामि पीत-शेषं कुलामृतम्।
तव शत्रून् हनिष्यामि सर्वाभीष्टं ददामि ते।

---

* अर्चन-स्थान में हाथ-पैर धो पूर्ण शुद्ध होकर प्रवेश करे।

यह पढ़ अन्तिम पात्र का अवशेष वह अपने उच्छिष्ट-पात्र में चक्रेश्वर को दे दे। वह उसे लेकर विशेष स्थान में रख दे। फिर चक्रेश्वर शक्ति को चर्वण आदि प्रदान कर यह पढ़े—

ॐ व्योम-चक्रे समारूढे भुवनान्तर-चारिणि।
चर्वणं कुरु देवेशि प्रसीद परमेश्वरि॥

शक्ति के चर्वण ग्रहण कर चुकने पर उसे दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे। तदनन्तर देवी-रूप समझ कुमारी का पूजन करे---

ॐ मन्त्राक्षर-मयीं लक्ष्मीं मातृणां रूप-धारिणीम्।
नव-दुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्॥

यह मन्त्र पढ़ गन्ध-पुष्पादि से शक्ति की ही भाँति कुमारी का पूजन कर उसे पात्र एवं चर्वण आदि प्रदान करे। फिर देवी-पुत्र समझ पाँच वर्ष के बालक का गणेश-रूप में और आठ वर्ष के बालक का वटुक-रूप में पूजन करे। वीर-पात्रामृत से उन्हें तृप्त कर चर्वण आदि भी प्रदान करे।

शक्ति आदि का विसर्जन कर चक्रेश्वर निम्न मन्त्र से सामयिकों का गन्ध-पुष्प से पूजन करे और उन्हें माला पहनावे---

कौलाचार-समारूढां देवी-भक्ति-परायणां ।
भैरव-रूप-सम्पन्नां वन्दे श्रीवीर-मण्डलीं ।

इसके बाद पात्रों को वीर-पात्र के अमृत से पूर्ण कर गन्ध-पुष्प से उन पात्रों का पूजन कर ज्येष्ठ के क्रमानुसार शुद्धि-खण्ड-सहित उन पात्रों को प्रदान करे। सामयिक खड़े होकर नमस्कारपूर्वक यथा-विधि पात्र ग्रहण कर अपने आसन पर बैठें और पात्र को आधार पर स्थापित कर उसका अक्षत-पुष्प से पूजन करें। फिर चक्रेश्वर की अनुमति से पहले तत्व-शुद्धि कर गुरुओं तथा इष्ट-देवता का तर्पण करें। तब चक्रेश्वर के साथ पात्र-वन्दन-पूर्वक सभी यथा-नियम तर्पण-चर्वण कर पूजा का विसर्जन करे।

विसर्जन

चक्रेश्वर सामान्यार्घ्य का जल हाथ में ले—**ॐइतः पूर्वं प्राण-बुद्धि-देह-धर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्त्य-वस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्कृतं यत्स्मृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा ॐ तत्सत्**--यह पढ़ देवता के दाहिने हाथ में समर्पित करे। फिर सामान्यार्घ्य पात्र को उठाकर यन्त्रस्थ देवता के शिर पर उसके जल की धार छोड़ता हुआ यह पढ़े—

ॐ साधु वासाधु वा कर्म यद् यदाचरितं मया ।
तत्सर्वं कृपया देवि ग्रहाण मदनुग्रहात् ॥

अर्घ्य के शेष जल को मूल-मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करे। फिर उस जल से अपना और सामयिकों का अभिसिंचन करे और सामान्यार्घ्य-पात्र को उलटकर रख दे। तब हाथ में फूल लेकर—

मूलं रश्मि-रूपा महादेव्योऽप्यत्र पूजित-देवताः।

श्री बाला-अङ्ग-लीनास्ताः सन्तु सर्वा शुभावहाः॥

से पुष्पाञ्जलि दे आवरण-देवताओं को देवता के अङ्ग में विलीन होते ध्यान करे। फिर '**श्रीबाला-त्रिपुरे मातः क्षमस्व**—यह कह योनि-मुद्रा से देवता को प्रणाम करे और तीन बार अस्त्र -मन्त्र से फट्कार कर संहार-मुद्रा से यन्त्रस्थ एक पुष्प उठाकर—

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्व-स्थानं परमेश्वरि।

यत्र ब्रह्मादयो देवाः न विदुः परमं पदम्॥

यह पढ़ पुष्प को सूँघ नासा-मार्ग से देवता के हृदय-कमल पर जा विराजने की भावना करे फिर—

ॐ देव-नाथ गुरो स्वामिन् लोकानुग्रह-कारक।

त्रायस्व मां कृपा-सिन्धो पूजां पूर्ण-तरां कुरु॥

यह पढ़ गुरु-देव को प्रणाम कर श्रीपात्र को सिर तक ऊपर उठा तत्व-मुद्रा से उसके अमृत से सिर में गुरु-पादुका-मन्त्र से गुरु का तर्पण करे। फिर श्रीपात्र का कुछ अमृत दूसरे पात्र में लेकर—

ॐ धर्माधर्म-हविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा ।
सुषुम्ना-वर्त्मना नित्यमक्षवृत्तिर्जुहोम्यहं स्वाहा ॥

यह पढ़ पान करे । फिर कुछ अमृत ले—

ॐ प्रकाशाकाश-हस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनो स्रुचं ।
धर्माधर्म-कला-स्नेह-पूर्णां वह्नौ जुहोम्यहं स्वाहा ॥

यह पढ़ पान करे । पुनः कुछ अमृत लेकर—

ॐ यदन्न-पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम् ।
पराहन्ता-मये वह्नौ जुहोमि शिव-रूपतः स्वाहा ॥

यह पढ़ पान करे । अब शेष अमृत लेकर—

ॐ अन्तर्निरन्तर निरिन्धन मेधमाने ।
मायान्धकार-परिपन्थिनि संविदग्नौ ।
कस्यांश्चिदद्भुत-मरीचि-विकाशि-भूमौ ।
विश्वं जुहोमि वसुधा दिशिवावसानम् ॥ स्वाहा--

यह पढ़कर पूर्व-वत् पान कर जाय । फिर उस पात्र को उलट कर भूमि पर रख दे और उस पर जल छोड़ तथा फूल चढ़ा उसे उठाकर छिपाकर रख दे । जहाँ उसे उलट कर रक्खा था, उस स्थान पर 'ह्रीं' लिखकर वहाँ की मिट्टी से मूल-मन्त्र पर अपने माथे में तिलक लगावे ।

इस प्रकार श्रीपात्र का विसर्जन कर गुरु-पात्र का अमृत गुरु-देव को या उनकी अनुपस्थिति में उनके

तुल्य अन्य सामयिक को प्रदान करे। फिर शक्ति-पात्र का अमृत शक्तियों को, वीर-पात्र का वीरों को, योगिनी-पात्र का कुमारिकाओं को और आत्म-पात्र का पुत्र या शिष्य को प्रदान करे।

अब सामयिक अपने-अपने पात्र का श्रीपात्र की भाँति विसर्जन करें।

तब वटुकादि बलियों का निर्माल्य एक पात्र में ले पूजा-गृह के बाहर जा उत्तर दिशा में त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र मण्डल बना कर—**ऐं ह्रीं श्रीं व्यापक-मण्डलाय नमः**—से उसका पूजन करे। उसमें निर्माल्य-पात्र रख उच्छिष्ट-भैरव का ध्यान करे—

ॐ गदा-त्रिशूल-डमरु-पात्र-हस्तं त्रिलोचनम्।
कृष्णाभं भैरवं ध्यायेत् सर्व-विघ्न-निवारणम्।

फिर गन्ध-पुष्प से निर्माल्य का पूजन कर **ॐ ॐ ॐ एह्येहि उच्छिष्ट-भैरव इदं धूप-दीपादि-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण आपय-आपय सिद्धिं मे प्रयच्छ स्वाहा। एष बलिः उच्छिष्ट-भैरवाय नमः**—यह मन्त्र पढ़ बलि-पात्र के सर्वामृत से बलि प्रदान करे।

फिर बलि-पात्र व हाथ-पैरों को धोकर आचमन कर **'उदयोऽस्तु'**—कह पुनः आसन पर आ बैठे।

अब शान्ति-स्तोत्र पढ़कर वीर-वन्दना पढ़े।

फिर ताम्र-पात्र में रक्तचन्दन-अक्षत-पुष्प-जल लेकर और उसे मस्तक तक ऊँचा उठाकर—**ॐ ह्रां ह्रीं हंसः सूर्य एष ते अर्घ्यः स्वाहा**—से सूर्य को अर्घ्य प्रदान करे। इसके बाद हाथ जोड़कर यह पढ़े—

ॐ यज्ञश्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम।
तत्सर्वमछिद्रमस्तु भास्करस्य प्रसादतः॥

तदनन्तर —**ॐ क्लीं नमः**—से यन्त्र पर से एक फूल उठा कर सूंघे और यन्त्र पर लगे गन्ध से निम्न मन्त्र से अपने तिलक लगावे—

ॐ यं यं स्पृशामि पादेन यं यं पश्यामि चक्षुषा।
स एव दासतां यातु यदि शक्र-समो भवेत्॥

फिर चरणोदक लेकर—

ॐ गङ्गा-पुष्कर-नर्मदा तु यमुना-गोदावरी-गोमती।
गङ्गा-द्वार-प्रयागराज-बदरी-वाराणसी-सिन्धुषु॥
रेवा-सेतु-सरस्वती-प्रभृतयः ब्रह्माण्ड-भाण्डोदरे।
तीर्थ-स्नान-सहस्र-कोटि-फलदं श्रीचक्र-पादोदकम्॥

यह पढ़े और उसे पान करे। फिर देवता का नैवेद्य सामयिकों को बाँट कर स्वयं ग्रहण करे और अपने को काम-कला के रूप में ध्यान कर सुख-पूर्वक विहार करे।

'चक्र-पूजा'

'चक्र-पूजा' शक्ति-उपासकों की सर्व-श्रेष्ठ पूजा है। इसी पूजा के द्वारा साधक अपना इह-लोक और पर-लोक बनाते हैं। यह पूजा संस्कृत भाषा में ही लिखी मिलती थी। हिन्दी में यह प्रस्तुत पुस्तक द्वारा पहले पहल प्रकाशित हुई।

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६